पहाड़ की चिट्ठी

₹25.00

www.hillmail.in

हिल-मेल

एक अभियान पहाड़ों की ओर लौटने का

दिसम्बर, 2020

वार्षिक विशेषांक : 2020 की 50 चर्चित शख्सियतें

शिखर पर उत्तराखंडी

LAKSHYA UNIVERSAL ACADEMY

AFFILIATED TO CBSE UPTO CLASS XII

CBSE Affiliation No. 3530575

FLYING HIGH TOWARDS EXCELLENCE

2021-2022 ADMISSIONS OPEN

PLAYGROUP TO XI

Features :

- Streams offered: **Science, Commerce and Humanities.**
- **NCC** is available for inculcating skill enhancement and character building.
- Excellent in-Campus **Sports facilities** for physical and mental well being
- **Physical** and **Yoga Education** for better control over mind and emotions.
- Spacious **library** equipped with age appropriate books ensuring every child has a right to learn.
- Well equipped **State Of The Art Labs** (Physics, Chemistry, ICT and Mathematics) for a wholesome learning experience.

TRANSPORT FACILITY also available

3670 THDC Colony, Parwal, Dehradun -248001 | Contact: +91-7618302590

www.lakshyauniversalacademy.com | luaddun3@gmail.com @LUADehradun

शिखर पर उत्तराखंडी टॉप-50: पहाड़ के मेहनती, लगनशील सपूतों की कहानी

हिल-मेल : शिखर पर उत्तराखंडी 2020 ... । यह वार्षिक विशेषांक पहाड़ के उन बेटे-बेटियों को समर्पित है, जो अपनी मेहनत, लगन से अपने-अपने क्षेत्रों में शीर्ष पर पहुंचे हैं। यह विशेषांक पहाड़ के 50 बेटे-बेटियों के जीवन में घटने वाली अहम घटनाओं का संकलन है। उत्तराखंड के बेटे-बेटियां किस तरह देश के अलग-अलग हिस्से में अलग-अलग पदों पर रहते हुए महती भूमिका निभा रहे हैं, यह समूचा विश्व देख रहा है। आज राजनीति और कूटनीति, रक्षा और सुरक्षा, गीत-संगीत, कला, योग पर्यावरण, साहित्य और सेवा, हर क्षेत्र में पहाड़ के सपूत सफलता के नए प्रतिमान स्थापित कर रहे हैं। यह सिलसिला देश की राजनीति के फलक पर तेजी से चमक बिखेर रहे यूपी के मुख्यमंत्री और पौड़ी के बेटे योगी आदित्यनाथ, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल, भारत के पहले चीफ ऑफ डिफेंस स्टॉफ बनाए गए जनरल बिपिन रावत, उत्तराखंड के मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत, केंद्रीय शिक्षा मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक, अनिल बलूनी से होता हुआ कई ऐसे लोगों तक जाता है, जिन्होंने अपने कार्य से लोगों को प्रभावितऔर युवा पीढ़ी को प्रेरित किया है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सलाहकार भास्कर खुल्बे हों या समाज सेवा का पर्याय बन चुकी मंगला माता, एनडीएमए के सदस्य राजेंद्र सिंह हों, देश सेवा और समाजसेवा के प्रतीक कर्नल अजय कोठियाल हों या सेंसर बोर्ड के अध्यक्ष और प्रख्यात गीतकार प्रसून जोशी। सभी की कहानी कमोबेश एक जैसी तो है, सभी ने संघर्षों के लंबे दौर से गुजरते हुए शीर्ष मुकाम हासिल किया है। यह विशेषांक हर क्षेत्र में अपना लोहा मनवाने वाले पहाड़ के सपूतों को समर्पित है। सफलता और बुलंदियों पर पहुंचे उत्तराखंडियों की सूची बहुत लंबी है। शीर्ष 50 में ऐसे लोग शामिल हैं, बीते एक साल के दौरान ज्यादा चर्चा में रहे। हालांकि यह सूची अंतिम नहीं है, यह तो महज सिलसिले की शुरूआत है, जो साल-दर-साल आगे बढ़ता जाएगा।

– चेतना नेगी

यह विशेषांक हर क्षेत्र में अपना लोहा मनवाने वाले पहाड़ के सपूतों को समर्पित है। सफलता और बुलंदियों पर पहुंचे उत्तराखंडियों की सूची बहुत लंबी है। शीर्ष 50 में ऐसे लोग शामिल हैं, बीते एक साल के दौरान कुछ ज्यादा चर्चा में रहे। हालांकि यह सूची अंतिम नहीं है, यह तो महज सिलसिले की शुरूआत है, जो साल-दर-साल आगे बढ़ता जाएगा।

प्रेरणा : अजीत डोभाल

प्रबंध निदेशक : चेतना नेगी
संपादक (दिल्ली) : वाई एस बिष्ट
संपादक (उत्तराखंड) : अर्जुन सिंह रावत
ब्यूरो प्रमुख : अंकित शर्मा

मानद सलाहकार
आलोक जोशी, पूर्व चीफ, एनटीआरओ
देश दीपक मिश्रा, पूर्व निदेशक, ओएनजीसी (एचआर)
कर्नल (रिटा.) अजय कोठियाल, भूतपूर्व प्रिंसिपल, निम
वी.एम. चमोला, पूर्व निदेशक, एचएएल
उर्मिला सिंह, समाजसेवी

मेजर जनरल (रि.) शेरू थपलियाल, रक्षा विशेषज्ञ
प्रवीण पाठक, महाप्रबंधक, ब्रह्मोस एयरोस्पेस
प्रो. अशोक डिमरी, जेएनयू, दिल्ली
टी.सी. उप्रेती, संस्थापक निदेशक, आई.ए.सी.
के.पी. कुकरेती, विधि सलाहकार
जय सिंह रावत, वरिष्ठ पत्रकार, देहरादून
पंडित अशोक सेमवाल, मुख्य पुजारी, गंगोत्री धाम
सुशील चंद्र बलूनी, वास्तु शास्त्री
प्रो. हर्ष डोभाल, दून यूनिवर्सिटी, देहरादून
अनुराग पुनेठा, वरिष्ठ समाचार संपादक, लोकसभा टीवी
शशि मोहन रावत, आर्ट डायरेक्टर, पाञ्चजन्य/आर्गेनाइजर
ओपी डिमरी, एक्टर एवं डायरेक्टर

विशेष संवाददाता
देहरादून : वर्षा सिंह
ऋषिकेश : प्रबोध उनियाल
पिथौरागढ़ : राजीव पांडे
रुद्रप्रयाग : मनोज सेमवाल
लखनऊ : अल्पना सिंह
दुबई : अजयपाल सिंह
हिलमेल वेबसाइट : महेन्द्र नेगी
फोटो एवं वीडियो : एसपी राणा
डिजाइन : सीमा रावत
विधि सलाहकार : शंकर डंगवाल

संपर्क कार्यालय : हिल-मेल, 1515/जी 1-2, वजीर नगर, कोटला मुबारकपुर, नई दिल्ली - 110003
मोबाइल - 9971161880

उत्तराखंड कार्यालय - हिल-मेल, हाउस न. 140, वसंत विहार, फेस-2, देहरादून फोन : 9899003733
ई-मेल : mailtohillmail@gmail.com
वेबसाइट : www.hillmail.in

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
चेतना नेगी - बी-94, तृतीय तल, गली नम्बर 2, सेवा सदन ब्लाक, फजलपुर, मंडावली, दिल्ली - 110092 से प्रकाशित तथा मोडेस्ट पैक प्रा.लि., सी-52, डीडीए शेड्स, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1 नई दिल्ली से मुद्रित।
मोबाइल नं. : 9811985655
© सर्वाधिकार सुरक्षित

RNI REGD. DELBIL/2016/69806

योगी आदित्यनाथ

मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

भारत में शासन-प्रशासन पर जबरदस्त पकड़ वाले मुख्यमंत्रियों का जब भी जिक्र होता है, उत्तर प्रदेश के सीएम योगी आदित्यनाथ उनमें शीर्ष पर गिने जाते हैं। साढ़े तीन साल से ज्यादा समय से वह देश के सबसे बड़े सूबे के मुखिया हैं। यह उनका राजनीतिक और प्रशासनिक कौशल है कि वह समय के साथ लोकप्रियता के नए मापदंड स्थापित कर रहे हैं। योगी आदित्यनाथ निर्विवाद रूप से भाजपा की नई पीढ़ी के नेताओं में सबसे लोकप्रिय हैं। योगी आदित्यनाथ ने एक संन्यासी को लेकर परंपरागत धारणाओं के विपरीत एक ऐसे योगी की ऐसी छवि उकेरी जिसके एक हाथ में पूजा की थाली तो दूसरे में आईपैड है। वह जहां एक तरफ सांस्कृतिक चेतना को प्रतिस्थापित कर रहे हैं, वहीं शासन-प्रशासन में आधुनिकता को अपनाने पर भी जोर दे रहे हैं। सोशल मीडिया में उनकी लोकप्रियता बहुत तेजी से बढ़ती जा रही है। इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि योगी आदित्यनाथ को सुनने और अपने सामने देखने की आतुरता उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक एक जैसी है। यही वजह है कि वह भाजपा के स्टार प्रचारकों की सूची में काफी तेजी से आगे आए हैं। पूरे देश में उनकी रैलियों का आयोजन किया जाता है।

यूपी में बाहुबलियों के अवैध कब्जे को ढहाने के लिए जिस तरह की सख्ती उन्होंने दिखाई उसने योगी आदित्यनाथ की कुशल एवं प्रभावशाली प्रशासक और निर्भीक राजनेता की छवि को पुख्ता किया। हिंदुत्व के मुद्दे पर योगी आदित्यनाथ की साफगोई उन्हें दूसरे नेताओं से अलग खड़ा करती है। लव जिहाद जैसे मुद्दे पर उत्तर प्रदेश ने कानून बनाकर एक नई धारा स्थापित की है। पिछले एक साल में यूपी कारोबार के लिए सुगमता वाली जगह बनकर उभरा है। एक साल पहले 12 पायदान पर रहा यूपी 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' रैंकिंग में इस समय दूसरे नंबर पर है। पूरे देश में जहां कोरोना संक्रमण के चलते नई नियुक्तियों को लेकर आंशिक रोक लगी है, वहीं योगी आदित्यनाथ सरकार ने वित्तीय वर्ष 2020-21 के अंत तक 50 लाख युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने का लक्ष्य तय किया है। ■

सभी चर्चाओं के केंद्र में योगी

साल 2020 में कई वजहों से योगी आदित्यनाथ चर्चा में रहे। चाहे वह नोएडा में 1000 एकड़ में देश की सबसे खूबसूरत फिल्म सिटी बनाने का ऐलान हो, विधानसभा उपचुनाव में धमाकेदार जीत के साथ अपनी सियासी पकड़ साबित करना हो या फिर अयोध्या में दीपोत्सव और वाराणसी में देव दीपावली पर सांस्कृतिक पहचान की आलौकिक अनुभूति। वह लॉकडाउन में कोटा में फंसे छात्रों की आवाज सुनने वाले पहले मुख्यमंत्री थे और करीब 8,000 छात्रों को वापस लाए। पिता की मौत के बावजूद कोरोना संक्रमण की रोकथाम के लिए हो रहे कार्यों की निगरानी को प्राथमिकता दी।

पंचूर से यूपी की सत्ता तक

योगी आदित्यनाथ का पूर्व नाम अजय मोहन सिंह बिष्ट है। योगी का जन्म 5 जून 1972 को उत्तराखंड के पौड़ी गढ़वाल जिले के यमकेश्वर ब्लॉक के पंचूर गांव में हुआ। पिता आनंद सिंह बिष्ट वन विभाग में रेंजर थे, मां सावित्री देवी आज भी गांव में रहती हैं। योगी आदित्यनाथ चार भाई और तीन बहनों में दूसरे नंबर के भाई हैं। वह गोरखनाथ मंदिर के महंत और हिंदू युवा वाहिनी के संस्थापक हैं। यह हिंदू युवाओं का सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रवादी समूह है। वह 1998 में पहली बार 26 साल की आयु में गोरखपुर से सांसद बने। पांच बार गोरखपुर का प्रतिनिधित्व किया। मार्च 2017 में उन्हें भाजपा ने देश के सबसे बड़े सियासी सूबे उत्तर प्रदेश का मुखिया बनाया।

अजीत डोभाल

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार

आने वाले समय में देश को किस तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा, दुश्मन देशों के 'चक्रव्यूह' का तोड़ क्या है, भारत पर होने वाले किसी भी वार का पलटवार क्या होगा, इन सभी सवालों का एक ही जवाब है, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल। हर संभावित खतरे से निपटने की रणनीति तैयार रखने की कला उन्हें दूसरे से अलग खड़ा करती है। भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना का नए सिरे से संचार करने की रणनीति का चाणक्य एनएसए अजीत डोभाल को माना जाता है। साल 2019 में मोदी सरकार की केंद्र में वापसी के साथ ही उन्हें फिर पांच साल के लिए एनएसए की जिम्मेदारी दी गई। लद्दाख में घुसने की फिराक में बैठे चीन ने कभी यह उम्मीद नहीं की होगी कि भारत इतनी मजबूती से उसे जवाब देगा। गलवान की घटना के बाद भारत की रक्षा तैयारियों से चीन हैरान है, इसकी रणनीति तैयार करने में एनएसए डोभाल की अहम भूमिका रही है। यही नहीं वह भारत की अंतरराष्ट्रीय कूटनीति का अहम हिस्सा हैं। नरेंद्र मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल के सबसे बड़े फैसले जम्मू कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने को प्रभावी ढंग से धरातल पर उतारकर अजीत डोभाल ने साबित किया कि पीएम मोदी उन पर इतना भरोसा क्यों करते हैं।

2014 से अब तक नरेंद्र मोदी सरकार के कार्यकाल में कई ऐसे लम्हे आए जब भारतीयों ने महसूस किया कि एक ताकतवर देश होना क्यों जरूरी है, क्यों दक्षिण एशिया में शांति के लिए भारत को शक्तिशाली बनना होगा। मोदी सरकार की कूटनीतिक सफलताओं का तानाबाना बुनने का श्रेय अजीत डोभाल को जाता है। देश के भीतर आतंकियों के नेटवर्क की कमर तोड़नी हो या अंदरूनी-बाहरी सुरक्षा को लेकर देश को अलर्ट मोड में रखना, डोभाल ने सभी को पूरे पेशेवर तरीके से अंजाम दिया। 370, चीन विवाद, पड़ोसी देशों से संबंध, दिल्ली दंगे, सर्जिकल स्ट्राइक, डोकलाम या फिर कूटनीति स्तर पर लिए जाने वाले तमाम फैसले, अजीत डोभाल पीएम मोदी की उम्मीदों पर हमेशा खरे उतरे हैं। दिल्ली दंगों के उन्होंने खुद हालात का जायजा लिया और लोगों का भरोसा जीता। ■

पाकिस्तान से चीन तक हर मर्ज की दवा

चीन की किसी भी आक्रामकता पर भारत की प्रतिक्रिया क्या होगी एनएसए डोभाल के पास इसका पूरा खाका तैयार है। यही वजह है कि भारत ने लद्दाख में जिस तरह लम्बी तैयारी की, उसने चीन को हैरान कर दिया। चीन को जवाब सैन्य मोर्चे पर भी दिया जा रहा है और कूटनीतिक तरीके से भी। फिर चाहे वह पड़ोसी देशों केसाथ निरंतर संपर्क हो या अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया की नौसेनाओं के साथ मालाबार अभ्यास। शंघाई कोऑपरेशन ऑर्गेनाइजेशन के सदस्य देशों के एनएसए स्तर की वर्चुअल बैठक में पाकिस्तान के गलत नक्शा दिखाने पर डोभाल का वॉकआउट साल 2020 की सुर्खियां बना।

पौड़ी के घीड़ी गांव से है नाता

अजीत डोभाल का जन्म 20 जनवरी 1945 को उत्तराखंड राज्य के पौड़ी गढ़वाल जिले के बनेलस्यूं पट्टी के घीड़ी गांव में हुआ। एनएसए डोभाल परिवार के साथ कुल देवी की पूजा करने के लिए निरंतर अपने गांव आते रहते हैं। वह 1968 के केरल बैच के आईपीएस अधिकारी रहे हैं। जनवरी 2005 में खुफिया ब्यूरो के प्रमुख के पद से सेवानिवृत्त हुए डोभाल को 1988 में कीर्ति चक्र से सम्मानित किया गया। वह इस मेडल को प्राप्त करने वाले पहले पुलिस अधिकारी हैं। इससे पहले यह सम्मान सिर्फ सैन्यकर्मियों को दिया जाता था। एनएसए डोभाल का करियर कई हैरतअंगेज कारनामों से भरा पड़ा है। यही वजह है कि भारतीयों के मन में उनकी छवि 'जेम्स बांड' की है।

जनरल बिपिन रावत

प्रमुख रक्षा अध्यक्ष (सीडीएस)

उत्तराखंड की सैन्य परंपरा को सर्वोच्च शिखर पर ले जाने वाले सपूत का नाम है जनरल बिपिन रावत। वह थलसेना प्रमुख के पद से सेवानिवृत्त होने के साथ ही देश के पहले चीफ ऑफ डिफेंस स्टॉफ नियुक्त किए गए। जनरल रावत ने इस नव सृजित पद पर पहुंचकर उत्तराखंड को गौरवान्वित किया है। अपनी साफगोई और जमीन से जुड़े रुख के चलते वह काफी लोकप्रिय सेनाप्रमुख रहे। अब वह तीनों सेनाओं के बीच बेहतर समन्वय कायम कर भारत को एशिया की सबसे बड़ी सैन्य महाशक्ति बनाने के मिशन में जुटे हैं। वह रक्षा मंत्री के प्रमुख सैन्य सलाहकार भी हैं। पौड़ी जिले के सैंण के जनरल रावत ने सीडीएस का पद संभालने के बाद सबसे ज्यादा जोर रक्षा खरीद को स्वदेशी पर केंद्रित करने पर लगाया है। उनका प्रयास है कि भारत का रक्षा उद्योग क्षेत्र ही भारतीय सेना को हथियारों और गोला-बारूद की आपूर्ति करे।

चीन के साथ लद्दाख में चल रहे विवाद पर हाल ही में जब जनरल रावत ने दो टूक शब्दों में यह कह दिया कि 'सरकार शांतिपूर्ण ढंग से यह मामला सुलझाना चाहती है। रक्षा सेवाओं का काम निगरानी रखना और ऐसे अतिक्रमण को घुसपैठ में तब्दील होने से रोकना है। अगर वास्तविक नियंत्रण रेखा पर पूर्व की स्थिति बहाल करने की कोशिशें सफल नहीं होती हैं तो सैन्य कार्रवाई के विकल्प पर भी विचार किया जाएगा।' तो इससे दुश्मन देशों को मिर्ची लग गई। सेना प्रमुख रहने के दौरान पीओके और म्यांमार में सर्जिकल स्ट्राइक, कश्मीर में आतंकवाद की कमर तोड़ने की सफल रणनीति का श्रेय तो उन्हें जाता ही है, डोकलाम में चीनी सेना से टकराव के बाद भारतीय सेना के बदले तेवरों ने भी उनकी अहमियत साबित की। सेना में महिलाओं को स्थायी तौर पर शामिल करने का फैसला उनके कार्यकाल के दौरान ही संभव हो सका। 11वीं गोरखा राइफल्स की पांचवीं बटालियन में जनवरी 1979 में कमीशन लेने वाले जनरल रावत आईएसए से पासआउट होने वाले अपने बैच के श्रेष्ठतम कैडेट रहे। ■

एकीकृत थियेटर कमांड पर तेज काम

सीडीएस रावत तीनों सेनाओं को सुगठित करने की बड़ी योजना पर काम कर रहे हैं। उनकी कोशिश सेना के तीनों अंगों को एक ऐसे सशस्त्र बल के रूप में विकसित करना है, जिसमें उनकी क्षमताएं, साजो-सामान और सैनिक एकीकृत हों। इसका उद्देश्य खर्च में कमी लाना, मैन पॉवर को युक्तिसंगत बनाना और यह सुनिश्चित करना कि सशस्त्र बल एकजुट इकाई के रूप में लड़ें। यही वजह है कि एकीकृत थियेयर कमांड की योजना पर तेजी से काम चल रहा है। प्रत्येक थिएटर कमान में थलसेना, वायुसेना और नौसेना की इकाइयां होंगी और ये सभी किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र में सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए एक कमांडर के तहत काम करेंगी।

सेना में बड़े सुधारों का प्रस्ताव

सीडीएस जनरल के तहत काम करने वाले डिपार्टमेंट ऑफ मिलिट्री अफेयर्स ने सेना में कर्नल, नौसेना और वायुसेना में उनके समकक्ष अधिकारियों की रिटायरमेंट की उम्र 54 से बढ़ाकर 57 साल करने का प्रस्ताव किया है। ब्रिगेडियर और उनके समकक्ष अधिकारियों की रिटायरमेंट की उम्र 56 से बढ़ाकर 58 साल, मेजर जनरल तथा उनके समकक्ष अधिकारियों की रिटायरमेंट की उम्र 58 से बढ़ाकर 59 साल करने का भी प्रस्ताव है। ले.ज. और उससे ऊपर कोई बदलाव नहीं होगा। सेना की लॉजिस्टिक्स, टेक्निकल और मेडिकल ब्रांच के जेसीओ सैनिक की सेवानिवृत्ति की आयु 57 साल करने के अलावा, प्री-मैच्योर रिटायरमेंट या वीआरएस लेने वाले अधिकारियों की पेंशन को अलग-अलग हिस्से में बांटने को कहा गया है।

त्रिवेंद्र सिंह रावत

मुख्यमंत्री, उत्तराखंड

त्रिवेंद्र सिंह रावत को जब मार्च, 2017 में उत्तराखंड की कमान सौंपी गई तो यह स्पष्ट था कि पार्टी को उनकी नेतृत्व क्षमता और सांगठनिक कौशल पर पूरा विश्वास है। त्रिवेंद्र सिंह अब तक के कार्यकाल में पार्टी के इस भरोसे पर खरे उतरे हैं। उत्तराखंड में उनके कार्यकाल में इंफ्रास्ट्रक्चर, टूरिज्म, मेडिकल के क्षेत्र में जबरदस्त काम हो रहा है। खास बात यह है कि सरकार पर भ्रष्टाचार का कोई आरोप नहीं लगा है। केंद्र सरकार द्वारा उत्तराखंड में बड़े पैमाने पर योजनाएं संचालित की जा रही हैं। केदारनाथ में पुनर्निर्माण का काम तेजी से जारी है। बद्रीनाथ में मास्टरप्लान के अनुसार काम शुरू होने जा रहा है। नमामि गंगे में उत्तराखंड ने अच्छे परिणाम दिए हैं। ऑल वेदर रोड और ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल लाइन का काम तेज रफ्तार से चल रहा है। चारों धामों को रेलमार्ग से जोड़ने की प्रक्रिया भी शुरू हो चुकी है। इससे साफ है कि उनका केंद्रीय नेतृत्व के साथ तालमेल बेहतर है और वह सियासी तौर पर भी मजबूत हैं।

कोरोना संकट के बाद प्रवासी उत्तराखंडियों को देश के अलग-अलग हिस्सों से निकालकर उनके घर-गांव तक पहुंचाने के लिए त्रिवेंद्र सिंह सरकार को पूरे नंबर दिए जा सकते हैं। कोरोना संकट के बाद पहाड़ में स्थानीय रोजगार और स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए उनके द्वारा शुरू की गई मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना ने युवाओं को आत्मनिर्भर बनने का विकल्प मुहैया कराया है। इस योजना में छह लाख से ज्यादा प्रवासियों को 150 क्षेत्रों के लिए आर्थिक मदद देने की व्यवस्था है। राज्य में 10 हजार युवाओं को सौर ऊर्जा के क्षेत्र में रोजगार देने की पहल की है। राज्य में पिरूल से बिजली बनाने की महत्वकांक्षी परियोजना शुरू हो गई है। राज्य में 150 ग्रोथ सेंटर विकसित किए गए हैं। त्रिवेंद्र सरकार ने राज्य में पर्यटन को रफ्तार देने के लिए सभी 13 जिलों में 13 नए टूरिस्ट डेस्टीनेशन तैयार करने पर तेजी से काम किया है। कई जगहों पर रोप-वे का निर्माण चल रहा है। होमस्टे योजना ने पहाड़े सुदूर गांवों में पहाड़ी शैली में बने घरों को देखने का नया नजरिया दिया है। उन्होंने उत्तराखंड के सुदूर गांवों में एक रुपये में पीने का पानी देने की योजना शुरू की है, उनकी इस योजना की तारीफ सुखद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कर चुके हैं। ■

बोल्ड फैसले लेकर बदली छवि

त्रिवेंद्र सिंह को हमेशा शांत नेता माना जाता रहा, लेकिन उन्होंने कई बोल्ड फैसले लेकर विरोधियों को चौंकाया है। वह देवस्थानम बोर्ड गठित करने का फैसला हो या गैरसैंण को ग्रीष्मकालीन राजधानी घोषित करने का ऐलान। गैरसैंण के विकास के लिए 25 हजार करोड़ रुपये की घोषणा हो या रिकॉर्ड समय में सूर्यधार झील का निर्माण। उन्होंने डोबरा-चांठी पुल को एकमुश्त बजट देकर पूर्ण कराया तो ऋषिकेश में जानकी सेतु का निर्माण कर सुर्खियां बटोरी। हरिद्वार में गंगा को एस्केप चैनल बताने वाले फैसले को निरस्त कर सियासी विरधियों को मुरीद बनाया।

अब एडवेंचर डेस्टीनेशन पर काम

उत्तराखंड को एडवेंचर स्पोर्ट्स हब के तौर पर विकसित करने के लिए त्रिवेंद्र सिंह ने कई तरह की पहल की हैं। हाल ही में नयार घाटी में एडवेंचर स्पोर्ट्स फेस्टिवल चचाओं में रहा। उन्होंने यहां पैराग्लाइडिंग ट्रेनिंग सेंटर खोलने का भी ऐलान किया है। त्रिवेंद्र सिंह पौड़ी जिले के जयहरीखाल ब्लाक के खैरासैण गांव के रहने वाले हैं। वह नौ भाई-बहनों में सबसे छोटे हैं। शुरूआती पढ़ाई खैरासैण में ही हुई। त्रिवेंद्र ने कक्षा 10 की पढ़ाई पौड़ी जिले के सतपुली इंटर कॉलेज और 12वीं की पढ़ाई एकेश्वर इंटर कॉलेज से हासिल की। जयहरीखाल डिग्री कॉलेज से स्नातक और गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर से स्नातकोत्तर किया। त्रिवेंद्र रावत की पत्नी सुनीता स्कूल टीचर हैं और उनकी दो बेटियां हैं।

रमेश पोखरियाल 'निशंक'

शिक्षा मंत्री, भारत सरकार

उत्तराखंड के कई बेटे केंद्र में नरेंद्र मोदी सरकार के शासन-प्रशासन और रक्षा-सुरक्षा की कोर टीम का हिस्सा हैं। इस समय देश की शिक्षा का दायित्व पहाड़ के बेटे हरिद्वार से सांसद रमेश पोखरियाल 'निशंक' संभाल रहे हैं। पूरे देश के शिक्षा जगत से जुड़ा यह विभाग नई शिक्षा नीति को लेकर चर्चा में है। काफी विचार-विमर्श के बाद तैयार की गई शिक्षा नीति को चौतरफा सराहना मिल रही है। निशंक मूल रूप से एक कवि हैं। उन्होंने कई शैलियों एवं विधाओं में 75 से अधिक पुस्तकें लिखी है। इनका कई भाषाओं में अनुवाद हुआ है। राजनीतिक प्रतिस्पर्धा की दुनिया में एक कवि का दिमाग अपनी अद्भुत रचनात्मकता को जीवित रखता है, यही वजह है कि शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने के लिए उन्हें कैंब्रिज विश्वविद्यालय द्वारा सम्मानित किया गया है।

साल 1991 में निशंक पहली बार तत्कालीन एकीकृत उत्तर प्रदेश में कर्णप्रयाग विधानसभा क्षेत्र से विधायक निर्वाचित हुए और लगातार तीन बार वर्ष 1993 एवं 96 में विधायक रहे। वर्ष 1997 में उत्तर प्रदेश सरकार में कल्याण सिंह मंत्रिमंडल में पर्वतीय विकास विभाग के कैबिनेट मंत्री और उसके बाद 1999 में रामप्रकाश गुप्त की सरकार में संस्कृति मंत्री रहे। भाजपा ने साल 2009 में निशंक को उत्तराखंड का मुख्यमंत्री बनाया था, महज डेढ़ साल के कार्यकाल के बाद विधानसभा चुनाव से पहले उन्हें हटाकर मेजर जनरल (रिटा.) बीसी खंडूड़ी को फिर प्रदेश की बागडोर सौंप दी गई थी। पार्टी ने निशंक पर विश्वास जताया और साल 2014 में हरिद्वार से लोकसभा चुनाव में मैदान में उतारा। निशंक सांसद बने। पार्टी ने 2019 में भी उन पर भरोसा जताया, वह लोकसभा पहुंचे। निशंक ने शिशु मंदिर में पढ़ाई की और फिर 1982 में उत्तरकाशी स्थित सरस्वती शिशु मंदिर में शिक्षक की नौकरी भी की। 1991 में पहली बार विधायक बने। निशंक की बड़ी बेटी आरुषि प्रख्यात कथक नृत्यांगना है। मंझली बेटी श्रेयसी सेना में मेडिकल ब्रांच में सेवारत है। तीसरी बेटी ने कानून की पढ़ाई की है। ■

उत्तराखंड में शिक्षा पर खास तव्वजो

केंद्रीय शिक्षा मंत्री बनने के बाद से रमेश पोखरियाल का उत्तराखंड में शिक्षा स्तर सुधारने पर विशेष ध्यान रहा है। उन्होंने उत्तराखंड में तीन आईआईआईटी और एक आईआईएसईआर खोले जाने की घोषणा की है। निशंक ने उत्तराखंड सरकार से पहाड़ी क्षेत्र और अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्रों में लड़कियों के लिए उच्च शैक्षणिक सुविधाएं स्थापित करने के संबंध में एक प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए कहा है। निशंक ने उत्तराखंड के हर ब्लॉक में आवासीय केंद्रीय विद्यालय खोले जाने की भी बात कही है। शिक्षा मंत्रालय ने इंजीनियरिंग पाठ्यक्रमों सहित तकनीकी शिक्षा मातृ भाषा में देने का रोडमैप तैयार करने की खातिर एक कार्यबल का गठन किया है।

साहित्य के लिए अंतरराष्ट्रीय सम्मान

निशंक को हाल ही में वातायन लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। ये अवार्ड्स, कवियों, लेखकों और कलाकारों को उनके संबंधित क्षेत्रों में अनुकरणीय कार्यों के लिए दिए जाते हैं। शिक्षा मंत्री को लेखन, कविता और अन्य साहित्यिक कार्यों के लिए सम्मानित किया गया है। पोखरियाल को इससे पहले साहित्य और प्रशासन के क्षेत्र में कई पुरस्कार मिले हैं, जिसमें तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा साहित्य गौरव सम्मान, पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा भारत गौरव सम्मान, दुबई सरकार द्वारा गुड गवर्नेंस अवार्ड, मॉरीशस द्वारा ग्लोबल ऑर्गेनाइजेशन ऑफ पर्सन ऑफ इंडियन ओरिजिन द्वारा उत्कृष्ट उपलब्धि और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में यूक्रेन में सम्मानित किया गया।

माताश्री मंगला

आध्यात्मिक उपदेशक एवं समाजसेवी

उत्तराखंड का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र होगा, जहां तक हंस फाउंडेशन की संस्थापक एवं संरक्षक और आध्यात्मिक गुरुमाता माताश्री मंगला के परोपकार की छाया नहीं पहुंची होगी। मंगला माता और भोलेजी महाराज के संरक्षण में चलने वाले हंस फाउंडेशन की गिनती देश के सबसे बड़े समाजसेवी संगठन में होती है। पिछले एक दशक से हंस फाउंडेशन उत्तराखंड में जरूरतमंदों की सेवा के साथ ही शिक्षा एवं स्वास्थ्य जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में काम कर रहा है। माताश्री मंगला के निर्देशन में चलने वाले हंस फाउंडेशन की गिनती उत्तराखंड में आज एक ऐसी संस्था के रूप में होती है, जो हर समय दीन-दुखियों की सेवा और देवभूमि की प्रतिभाओं के प्रोत्साहित करने में आगे रही है। कोई भी जरूरतमंद इस संस्था से कभी भी संपर्क कर मदद ले सकता है। जरूरतमंदों को व्यक्तिगत रूप से मदद करने और प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के अलावा हंस फाउंडेशन ने अनेक सामाजिक कार्य भी किए हैं। हंस फाउंडेशन ने उत्तराखंड सरकार के साथ मिलकर भी राज्य में कई योजनाओं के लिए वित्तीय मदद मुहैया कराई है।

हंस फाउंडेशन द्वारा उत्तराखंड के लगभग 200 गांव में शुद्ध पेयजल पहुंचाने के लिए 'हंस जल धारा' जैसी योजना चलाई जा रही है। इसके साथ ही राज्य में करीब 200 गांवों में आंगनवाड़ी केंद्रों के निर्माण के लिए भी फाउंडेशन ने वित्तीय मदद दी है। कोरोना संक्रमण काल के दौरान हंस फाउंडेशन सबसे बड़ा मददगार बनकर उभरा। इस संकट के चलते पहाड़ लौटे प्रवासियों को स्वरोजगार उपलब्ध कराने के लिए हंस फाउंडेशन ने 25 करोड़ रुपये की राशि राज्य सरकार को दी।

हंस फाउंडेशन सतपुली में एक सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल चला रहा है। इसके अलावा कई अस्पतालों को एंबुलेंस दान दी गई है। कई अस्पतालों में फाउंडेशन की मदद से आईसीयू स्थापित किए जा रहे हैं। माताश्री मंगला द्वारा किए जा रहे परोपकारों के लिए राज्य सरकार उन्हें उत्तराखंड रत्न पुरस्कार से सम्मानित कर चुकी है। ■

कोरोना काल में सबसे बड़ी दानवीर

कोरोना संक्रमण के दौरान हंस फाउंडेशन सबसे बड़े दानवीर संगठनों में से एक बनकर उभरा। माताश्री मंगला और भोलेजी महाराज के निर्देशन में 'द हंस फाउंडेशन' ने लॉकडाउन में फंसे नागरिकों की मदद की 'ऑपरेशन नमस्ते' शुरू किया। हंस फाउंडेशन ने पीएम केयर्स फंड में चार करोड़ रुपये और उत्तराखंड सीएम राहत कोष में भी 1.51 करोड़ रुपये की राशि दान दी। हंस फाउंडेशन राज्य सरकार के साथ मिलकर कई योजनाएं संचालित कर रहा है। इसी के तहत भोलेजी महाराज और माता श्री मंगला के जन्मदिन पर उत्तराखंड को 100 और 105 करोड़ रुपये की योजनाओं की सौगात दी गई।

टिहरी के पांगर गांव से संबंध

माताश्री मंगला का जन्म 16 अक्टूबर 1956 को टिहरी जिले में सरजूला पट्टी के पांगर गांव में हुआ। उनका परिवार एक धर्मनिष्ठ परिवार था और माताश्री मंगला के पिता मातवर सिंह सजवाण को 1971 में एक बड़े आतंकी हमले के दौरान अदम्य साहस दिखाने के लिए शौर्य चक्र से सम्मानित किया गया था। मंगला माता का विवाह भोले जी महाराज से हुआ, जो सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक गुरु हंस महाराज और माता राजराजेश्वरी देवी के दूसरे पुत्र हैं। लॉकडाउन के दौरान हंस फाउंडेशन के वॉलंटियर्स ने उत्तराखंड के सुदूर क्षेत्रों में लोगों तक उनकी जरूरत का हर सामान पहुंचाया। यही नहीं उत्तराखंड के लोग देशभर में जहां भी फंसे थे, उन्हें मदद पहुंचाई गई।

अनिल बलूनी

राज्यसभा सांसद, भाजपा

उत्तराखंड के जन सरोकारों को केंद्रीय मंत्रियों तक पहुंचाने की अहम कड़ी का नाम है अनिल बलूनी। वह इस समय उत्तराखंड से राज्यसभा सदस्य और केंद्र में सत्तारूढ़ भाजपा के मीडिया विभाग के प्रमुख हैं। उन्हें पीएम मोदी और पार्टी प्रमुख अमित शाह का विश्वस्त माना जाता है। बलूनी भाजपा में 1993 से सक्रिय हैं। बलूनी मीडिया में होने वाली बहसों में भाजपा का पक्ष आक्रामकता और प्रखरता से रखने के लिए जाने जाते हैं। कैंसर के खिलाफ लड़ाई जीतने के बाद से बलूनी एक बार फिर उत्तराखंड को लेकर केंद्र में सक्रिय हैं। पौड़ी गढ़वाल के रहने वाले बलूनी पहले उत्तराखंड भाजपा के प्रवक्ता रहे। इसके बाद उन्हें दिल्ली में लाया गया और भाजपा प्रवक्ता की जिम्मेदारी दी गई। वह उत्तराखंड राज्य वन एवं पर्यावरण कमेटी के उपाध्यक्ष रहे हैं। प्रकृति प्रेमी बलूनी की उत्तराखंड की वनस्पति और जीवों पर काफी पकड़ है। उनका खुद का कहना है कि पहाड़ी होने के नाते जंगलों से होते हुए पहाड़ों पर चढ़ना हमारे जीवन का हिस्सा है। बलूनी का भाजपा से जुड़ाव स्कूल के दिनों से रहा है। वह दिल्ली विश्वविद्यालय में शिक्षा के दौरान एबीवीपी से जुड़े। कॉमर्स के छात्र रहे बलूनी ने पत्रकारिता में भी डिप्लोमा किया है। पत्रकारिता की पढ़ाई के दौरान उनका संघ कार्यालय में काफी आनाजाना हुआ। इसी दौरान वह संघ के बड़े नेता सुंदर सिंह भंडारी के संपर्क में आए। जब भंडारी बतौर राज्यपाल पटना गए तो बलूनी उनके ओएसडी बनाए गए। इसके बाद भंडारी उन्हें अपने साथ गुजरात राजभवन भी ले गए। इसके दो साल बाद बतौर सीएम गुजरात में नरेंद्र मोदी का दौर शुरू हुआ। इसके बाद बलूनी 2002 में वह देहरादून लौट गए। वर्ष 2002 में उन्होंने पौड़ी की कोटद्वार विधानसभा सीट से चुनाव लड़ा। तब उनकी उम्र महज 26 साल थी। कॉलेज से टहलते-टहलते पत्रकारिता में आ गए और पत्रकारिता से टहलते हुए राजनीति में जा पहुंचे। इसके बाद से उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। बलूनी ने कोरोना के चलते हुए लॉकडाउन के दौरान उत्तराखंड के कई प्रबुद्ध और प्रभावशाली लोगों के साथ वर्चुअल संवाद स्थापित किया, साथ ही उनसे पीएम केयर्स फंड में अंशदान करने की अपील की। ■

...और ईगास बन गया खास

उत्तराखंड के लोगों को अपने पारंपरिक त्यौहारों की ओर फिर से खींचने के लिए बलूनी ने साल 2019 में 'अपना त्योहार-अपने गांव' अभियान की शुरुआत की थी। इसे लोक पर्व ईगास के मौके पर शुरू किया जाना था, लेकिन वह अस्वस्थ होने के कारण खुद इस अभियान की शुरुआत नहीं कर पाए। उनकी जगह भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता संबित पात्रा ने बलूनी के पैतृक गांव नकोट में ईगास पर्व मनाया। साल 2020 में उनकी इस मुहिम का व्यापक असर देखने को मिला। लोग बड़ी संख्या में ईगास-बग्वाल मनाने के लिए अपने पैतृक गांव पहुंचे।

जनशताब्दी, पुल और कैंसर अस्पताल

अनिल बलूनी के प्रयासों से उत्तराखंड को पत्रकारिता के सर्वोच्च संस्थान आईआईएससी के कैंपस की सौगात मिल सकती है। बलूनी के आग्रह पर केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने यह आश्वासन दिया है। यही नहीं उत्तराखंड को जल्द ही दो जनशताब्दी ट्रेनों की सौगात भी मिलने वाली है। बलूनी ने इस संबंध में रेल मंत्री पीयूष गोयल से आग्रह किया था, जिस पर उन्होंने इन प्रस्तावों पर प्राथमिकता से काम करने का आश्वासन दिया है। कोटद्वार से दिल्ली और टनकपुर से दिल्ली के बीच जनशताब्दी ट्रेनें चलने की उम्मीद है। वहीं उत्तराखंड में एक विश्व स्तरीय कैंसर हॉस्पिटल के लिए टाटा ट्रस्ट के चेयरमैन रतन टाटा ने मदद का आश्वासन दिया है।

भगत सिंह कोश्यारी

राज्यपाल, महाराष्ट्र एवं गोवा

भगत सिंह कोश्यारी भारतीय राजनीति में उत्तर भारत का एक परिचित नाम है, वह देश के बड़े आर्थिक सूबे महाराष्ट्र और गोवा के राज्यपाल हैं। 31 अगस्त 2019 को कोश्यारी को महाराष्ट्र का राज्यपाल बनाया गया। वहीं 18 अगस्त, 2020 को उन्हें गोवा के राज्यपाल की जिम्मेदारी भी दी गई। भगत सिंह सार्वजनिक जीवन की उस धारा का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसने अपने पारंपरिक पहनावे को बरकरार रखा है। वह आज भी धोती-कुर्ता, नेहरू जैकेट और काली टोपी में नजर आते हैं। संघ की पृष्ठभूमि से आने वाले कोश्यारी सादगी के लिए सराहे जाते हैं। वह उत्तराखंड के दूसरे मुख्यमंत्री रहे। वर्ष 2001 से 2002 तक पदभार संभालने के बाद 2002 से 2007 तक राज्य विधानसभा में विपक्ष के शीर्ष नेता रहे। कोश्यारी का जन्म 17 जून 1942 को अल्मोड़ा जिले में हुआ था। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा अल्मोड़ा में पूरी की और उसके पश्चात आगरा विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में आचार्य की उपाधि प्राप्त की।

कोश्यारी का राजनैतिक जीवन कॉलेज के समय ही शुरू हो गया था। वह 1961-62 के दौरान कुमाऊं यूनिवर्सिटी के तहत आने वाले अल्मोड़ा कॉलेज में महासचिव भी रहे। इसी दौरान उन्होंने अपने जीवन को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लिए समर्पित कर दिया। संघ के पूर्णकालिक कार्यकर्ता रहे कोश्यारी को 1977 में आपातकाल के समय बंदी बनाया गया। मई 1997 में उन्हें उत्तर प्रदेश विधानसभा के उच्च सदन विधान परिषद का सदस्य बनाया गया। उत्तराखंड राज्य बनने के बाद साल 2000 में उन्हें उत्तरांचल (अब उत्तराखंड) का ऊर्जा, सिंचाई, कानून और विधायी मामलों का मंत्री नियुक्त किया गया। 2001 में वे नित्यानंद स्वामी के स्थान पर राज्य के मुख्यमंत्री बने। उन्होंने कपकोट विधानसभा से भाजपा का प्रतिनिधित्व किया। 2002 के राज्य विधानसभा चुनावों में हार के पश्चात उन्होंने मुख्यमंत्री का पद छोड़ दिया। उन्होंने 2007 से 2009 तक भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष की जिम्मेदारी भी संभाली। इसी दौरान 2007 में भाजपा की उत्तराखंड की सत्ता में वापसी हुई। ■

संसद के दोनों सदनों का प्रतिनिधित्व

कोश्यारी ने संसद के दोनों सदनों में भाजपा का प्रतिनिधित्व किया है। वह 2008 से 2014 तक राज्यसभा सदस्य चुने गए। इसके बाद 2014 में भाजपा ने नैनीताल संसदीय सीट से उन्हें मैदान में उतारा और वह जीतकर पहली बार लोकसभा पहुंचे। 2019 के चुनाव में अधिक उम्र की नीति के तहत भाजपा ने उन्हें मैदान में नहीं उतारा। महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों के बाद भी कोश्यारी सुर्खियों में रहे। देवेंद्र फड़णवीस को मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाए जाने को लेकर विपक्ष ने उन पर हमले जरूर किए लेकिन राज्य के संवैधानिक प्रमुख के तौर पर उनके फैसले को कोई भी चुनौती नहीं दे पाया।

उत्तराखंड के वास्तविक प्रतिनिधि

भगत सिंह कोश्यारी महाराष्ट्र में उत्तराखंड की संस्कृति के सबसे बड़े प्रतिनिधि हैं। महाराष्ट्र में रहने वाला प्रत्येक उत्तराखंडी उनसे जुड़ाव महसूस करता है। यही नहीं वह उत्तराखंडी समुदाय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों से लगातार मिलते भी रहते हैं। हाल में ही उन्होंने दोनों राज्यों के लोगों के बीच की समानता को रेखांकित करते हुए कहा था कि महाराष्ट्र और उत्तराखंड की भाषा और संस्कृति में साम्य दिखाई पड़ता है। धार्मिक आस्था के साथ भाषाई समानता व लोक संस्कारों में भी दोनों राज्य एक जैसे हैं। देवभूमि उत्तराखंड के लोग कर्मठ होते हैं। इसलिए जहां भी जाते हैं, वहां अपनी मेहनत और ईमानदारी से अपना मुकाम पा लेते हैं।

भास्कर खुल्बे

प्रधानमंत्री के सलाहकार

उत्तराखंड से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का लगाव जगजाहिर है। यही वजह है कि यहां कई केंद्रीय योजनाएं चल रही हैं। चाहे वह ऑल वेदर रोड हो, केदारनाथ का पुनिर्निर्माण हो, बदरीनाथ को मास्टरप्लान के मुताबिक नया स्वरूप देना हो या फिर ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल लाइन। इस सभी परियोजनाओं को धरातल पर कैसे उतारा जा रहा है, प्रधानमंत्री कार्यालय से इस पर नजर रखने की जिम्मेदारी उत्तराखंड के सपूत भास्कर खुल्बे पर है। सक्षम, ईमानदार, मेहनती और नए-नए आइडियाज के लिए खुली सोच रखने वाले भास्कर खुल्बे केदारनाथ के साथ-साथ बदरीनाथ में होने वाले निर्माण कार्यों को देख रहे हैं। 2013 की आपदा के बाद केदारनाथ को उसका दिव्य और भव्य स्वरूप लौटने के मैराथन अभियान के बाद अब प्रधानमंत्री मोदी बद्रीशपुरी को ऐसा स्वरूप देना चाहते हैं, जो आध्यामिक महत्व के साथ-साथ सुविधाओं के लिहाज से आधुनिक हो।

कुमाऊं के लाल भास्कर खुल्बे प्रधानमंत्री मोदी की टीम का अहम हिस्सा रहे हैं। सेवानिवृत्ति के बाद उन्हें पीएम मोदी का सलाहकार बनाया गया है। भास्कर खुल्बे पश्चिम बंगाल कैडर के आईएएस अधिकारी रहे। लंबे समय तक अलग-अलग पदों पर रहने के बाद 2014 में उन्हें पीएमओ में नियुक्ति मिली। यहां उन्होंने प्रधानमंत्री के सचिव की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभाई। प्रधानमंत्री मोदी ने पद संभालने के बाद बेहद ईमानदार और मेहनती छवि रखने वाले भास्कर खुल्बे को अपनी टीम में चुना। युवाओं को लेकर नीतियां बनाने में उनका अहम योगदान रहा। भास्कर खुल्बे के बारे में कहा जाता है कि वह जिस जिम्मेदारी को लेते हैं, उसे तब तक फॉलो करते हैं, जब तक वह धरातल पर दिखने न लगे। 1983 बैच के आईएएस भास्कर को बंगाल कैडर मिला। उन्होंने वेस्ट बंगाल फिशरीज कॉरपोरेशन का भी दायित्व संभाला। इसके बाद उन्हें डिपार्टमेंट ऑफ पर्सनेल में तैनाती मिली। बाद में वह पश्चिम बंगाल के रेजीडेंट कमिश्नर के रूप में दिल्ली में कार्यरत रहे। वर्ष 2001 में उन्हें ब्रूसेल्स में भारतीय दूतावास में सलाहकार भी बनाया गया था। भास्कर खुल्बे की शिक्षा-दीक्षा नैनीताल से हुई। ■

वर्क टेबल पर परमहंस, विवेकानंद

भास्कर खुल्बे बचपन से ही धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति रहे हैं। एक प्रशासनिक अधिकारी के तौर पर बंगाल काडर मिलने के बाद राम कृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानंद के कार्यों, समाज पर उनके प्रभावों को बहुत नजदीक से देखा और उनके शिक्षाओं को, दर्शन को अपने जीवन में बड़ी शिद्दत से उतारा है। आज भी टेबल पर राम कृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद के साथ अपने माता-पिताजी की तस्वीर रखते हैं। उनका मानना है कि जीवन में अच्छी आदतें माता-पिता से मिलीं और ये सफलता, सुख और शांति उनकी ही देन है। वह पहाड़ से जुड़े सरोकारों को लेकर भी सक्रिय हैं।

कायल कर देने वाली सादगी

अगर भास्कर खुल्बे किसी आधिकारिक कार्यक्रम में नहीं हैं तो वह पहाड़ी वेशभूषा में दिख जाएंगे। माथे पर टीका और चंदन आज भी उनकी दिनचर्या है। आज भी वह कुमाऊंनी भाषा में बात करते हैं। खुल्बे धीर गंभीर रहते हैं पर इसका मतलब यह नहीं कि हास-परिहास में रस न लेते हों या फिर देश के सर्वोच्च प्रशासनिक पद पर बैठने के कारण असहज अभिजात्यता भर गई हो, सहजता का लोप हो गया हो। भास्कर खुल्बे से बात करना आज भी सहज है। अवसर मिले तो साहित्य संगीत, कला, समाज और पहाड़ पर उनसे लंबी बात की जा सकती है। इस उम्र में भी मिठाइयों के प्रति, खास-तौर पर दही जलेबी के प्रति अपनी ललक नहीं छिपाते।

राजेंद्र सिंह

सदस्य, एनडीएमए

केंद्र सरकार ने फरवरी 2020 में राजेंद्र सिंह को एनडीएमए का सदस्य नियुक्त किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्ष 2024 तक देश को आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में नंबर वन बनाने का लक्ष्य दिया है। इसके लिए राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण यानी एनडीएमए तेज गति से काम कर रहा है। इस मिशन के लिए ऐसे विशेषज्ञ अधिकारियों की मदद ली जा रही है, जिन्होंने राहत एवं बचाव अभियान में लंबा समय बिताया है। प्राकृतिक आपदा के समय राहत एवं बचाव कार्य तुरंत शुरू करने के लिए देश भर में 'आपदा मित्र' तैयार करने की योजना शुरू की गई है। इसके तहत आपदा मित्रों को 12 से 15 दिन का बचाव एवं राहत कार्य का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इस योजना के अंतर्गत देश के 720 जनपदों में से 350 जनपदों में लगभग एक लाख आपदा मित्र तैयार करने की योजना है, जिसमें उत्तराखंड के 02 जिले हरिद्वार एवं ऊधमसिंहनगर शामिल हैं। लंबे समय तक समुद्री सीमा की निगहबानी की कमान संभालने वाले उत्तराखंड के सपूत राजेंद्र सिंह के नेतृत्व में कोस्ट गार्ड ने कई तरह के राहत एवं बचाव अभियान चलाए। यही वजह है कि राजेंद्र सिंह देश में आपदा प्रबंधन को लेकर चलाए जा रहे सबसे बड़े अभियान का हिस्सा हैं।

जमीनी हकीकत का जायजा लेने के लिए राजेंद्र सिंह लगातार देश के अलग-अलग हिस्सों के दौरे कर रहे हैं। कुछ महीने पहले उन्होंने यूपी में एकीकृत राज्य आपदा नियंत्रण कक्ष और राज्य आपदा प्रबंधन अथॉरिटी का भी दौरा किया और सीएम योगी आदित्यनाथ से आपदा प्रबंधन की तैयारियों को लेकर चर्चा की। वह इससे पहले उत्तराखंड के मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह से भी मिले थे। सेवानिवृत्त से पहले राजेंद्र सिंह ने अपने नेतृत्व में तटीय सुरक्षा के साथ-साथ कोस्ट गार्ड मानवीय जीवन की सुरक्षा के लिए चलाए जाने वाले अभियानों से चौतरफा प्रशंसा पाई। राजेंद्र सिंह इस रणनीतिक बल के शीर्ष पद को सुशोभित करने वाले तटरक्षक बल के पहले अधिकारी रहे। इससे पहले तक नौसेना के थ्री स्टार अधिकारी को यह पद दिया जाता था। ■

तटरक्षक बल की विकास यात्रा के साक्षी

राजेंद्र सिंह ने अपने कार्यकाल में तटरक्षक बल के संचालन में कई बड़े बदलाव किए। बल का बेड़ा लगातार बड़ा किया। राजेंद्र सिंह तटरक्षक बल की विकास यात्रा के साक्षी रहे। उन्होंने बल को इसका प्रोफेशनल स्वरूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। वह तटरक्षक बल में शामिल हर तरह के पोतों के कमांडर रहे। अस्सी के दशक में राजेंद्र सिंह ने तस्कर विरोधी अभियान में सक्रिय भूमिका निभाई। उनके नाम तस्करी का सामान जब्त करने का कीर्तिमान है। इसके लिए उन्हें 15 अगस्त, 1990 को राष्ट्रपति द्वारा तटरक्षक पदक से सम्मानित किया गया। भारत सरकार ने 15 अगस्त 2007 को उन्हें राष्ट्रपति पदक से सम्मानित किया।

उत्तराखंड को कोस्ट गॉर्ड भर्ती केंद्र

देहरादून निवासी राजेंद्र सिंह 1980 में तटरक्षक बल में शामिल हुए। राजेंद्र सिंह की प्राथमिक और उच्च शिक्षा मसूरी एवं देहरादून से हुई। उनके प्रयासों से देहरादून में तटरक्षक बल भर्ती केंद्र खुलने का रास्ता साफ हुआ। उन्होंने वर्ष 2017 में देहरादून में हुए रैबार कार्यक्रम में इस विचार को बढ़ाया था और अपनी सेवानिवृत्ति से पहले ही इसे अमल में ला दिया। देहरादून में कोस्टगार्ड के भर्ती सेंटर का शिलान्यास हो चुका है। जल्द ही बनकर तैयार हो जाएगा। इसके अलावा भी वह कई अन्य गतिविधियों के जरिए उत्तराखंड से जुड़े हुए हैं। राजेंद्र सिंह के परिवार में उनकी पत्नी उर्मिला सिंह और दो पुत्रियां हैं।

प्रसून जोशी

प्रमुख, सेंसर बोर्ड एवं गीतकार

अल्मोड़ा में जन्में प्रसून जोशी की शख्सियत को एक शब्द में बयां करना हो तो हरफनमौला सबसे सटीक शब्द होगा। एक बेहतरीन कवि, लेखक, पटकथा लेखक, मशहूर गीतकार, सुपरहिट एडगुरू और सबसे खास एक बेहतरीन वक्ता। बेहत संयत और शब्दों के जादूगर। उनकी कलम से निकली रचनात्मकता ने हमेशा समाज को दिशा देने का काम किया है। मां-बेटे, पिता-पुत्र के संबंधों को शब्दों की जिस शिल्प से उन्होंने रचा है, वह सीधे दिल में उतर जाती है। वह इस समय केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड यानी सेंसर बोर्ड के अध्यक्ष हैं। उन्हें कुमाऊं यूनिवर्सिटी ने डीलिट की मानद उपाधि प्रदान की है। प्रसून उस बदलते भारत के लेखक हैं जिसे उनके गीत और कविताएं नई राह दिखा सकती हैं। उनके गीतों और कविताओं में गुस्सा, उम्मीद, उत्साह और बनते बिगड़ते सपने सबकुछ हैं। कविता के रूप में निकले उनके जज्बातों सीधे असर करते हैं। बेटियों के जन्म पर समाज के रवैये पर तीखी टिप्पणी करते हुए उन्होंने लिखा, ...शर्म आ रही है ना, उस समाज को जिसने उसके जन्म पर खुल के जश्न नहीं मनाया। शर्म आ रही है ना, उस पिता को उसके होने पर जिसने एक दीया कम जलाया...।

2015 में भारत सरकार ने कला, साहित्य एवं विज्ञापन के क्षेत्र में शानदार योगदान के लिए उन्हें पद्मश्री से विभूषित किया। 17 साल की उम्र में ही युवा प्रसून की पहली किताब 'मैं और वो' प्रकाशित हुई। गीतकार के तौर पर उन्हें पहला ब्रेक राजकुमार संतोषी की फिल्म 'लज्जा' से मिला। उन्होंने अवार्ड जीतने वाली फिल्म भाग मिल्खा भाग की स्क्रिप्ट भी लिखी। फिल्म 'तारे जमीन पर' के गाने मां के लिए उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। 2013 में चटगांव के लिए भी उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यही नहीं, तीन बार वह सर्वश्रेष्ठ गीतकार का फिल्मफेयर पुरस्कार जीतने में कामयाब हुए। विज्ञापन जगत में भी आज उनकी अलग पहचान है। अंतरराष्ट्रीय विज्ञापन कंपनी मैक्केन इरिक्सन के वह चेयरमैन-एशिया पैसिफिक हैं। लंदन में 18 अप्रैल, 2018 को पीएम नरेंद्र मोदी के दो घंटे 20 मिनट लंबे 'भारत की बात सबके साथ' कार्यक्रम को प्रसून जोशी ने होस्ट किया। ■

मानवीय संवेदनाओं को उभारा

मशहूर गीतकार, कवि और लेखक उनकी शख्सियत के बहुत आयाम हैं। उन्होंने अपने गीतों को फूहड़ता से परे रखते हुए मानवीय संवेदनाओं से सजाया। फिल्म 'तारे जमीन पर' के गीत 'तुझे सब है पता मेरी मां' के लिए उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार और फिल्मफेयर पुरस्कार मिला। 2008 में फिल्म फना के गीत 'चांद सिफारिश जो करता हमारी' के लिए भी फिल्म फेयर पुरस्कार मिला। 1999 में शुभा मुद्गल का 'अबके सावन' नाम का एल्बम हिट हुआ था। 2000 में शुभा मुद्गल की ही आवाज में 'मन के मंजीरे' बेहतरीन गीत साबित हुआ। गायक मोहित चौहान के बैंड 'सिल्क रूट' के लिए 'डूबा डूबा रहता हूं' भी प्रसून जोशी की कलम से निकला।

पहाड़ दिल और लेखनी के करीब

प्रसून जोशी के गीतों और विज्ञापनों में पहाड़, प्रकृति का विशेष स्थान रहा है। उन्होंने अपने कई गीतों और विज्ञापनों में पहाड़ का चित्रण किया, यहां के परिवेश को संजोया। प्रसून का जन्म उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले के दन्या गांव में 16 सितंबर 1968 को हुआ। उनके पिता डी.के. जोशी शिक्षा विभाग में अधिकारी थे। उनकी शुरूआती शिक्षा गोपेश्वर और नरेंद्रनगर गढ़वाल में हुई। भौतिकशास्त्र में ग्रेजुएशन और पोस्ट ग्रेजुएशन करने के बाद इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट गाज़ियाबाद से मैनेजमेंट की पढ़ाई की। एमबीए करने के बाद प्रसून 1992 में विज्ञापन की दुनिया से जुड़ गए लेकिन प्रसून मूल रूप से कवि ही रहे हैं।

कर्नल (रिटा.) अजय कोठियाल

समाजसेवी एवं संस्थापक यूथ फाउंडेशन

उत्तराखंड में साल 2013 में आई विनाशकारी हिमालयन सुनामी के बाद शुरू हुए निर्माण कार्यों और खासकर केदारनाथ पुनर्निर्माण की कहानी कर्नल (रिटा.) अजय कोठियाल के जिक्र के बिना अधूरी है। केदारपुरी जिस दिव्य और भव्य स्वरूप में आज नजर आ रही है, उसका श्रेय कर्नल कोठियाल और उनके निर्देशन में बेहद चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में काम करने वाली टीम को जाता है। अब कर्नल कोठियाल पूर्वोत्तर में एक बड़े मिशन पर जुटे हुए हैं। वह सामरिक तौर पर महत्वपूर्ण मिजोरम से म्यांमार के लिए सितवे बंदरगाह को जोड़ने वाली 100 किमी लंबी महत्वकांक्षी सड़क परियोजना पर काम कर रहे हैं। कई वर्षों से अटकी इस रोड के बन जाने से अब भारत और म्यांमार का सड़क संपर्क खुल जाएगा। उत्तराखंड के लगभग हर उस घर में आज कर्नल कोठियाल के नाम का जिक्र होता है, जिसका बेटा भारतीय सेना का हिस्सा है। इसकी वजह है उनका यूथ फाउंडेशन। उत्तराखंड के हजारों युवाओं को यूथ फाउंडेशन ने सेना में जाने के लिए प्रेरित और प्रशिक्षित किया है।

कर्नल कोठियाल की प्रेरणा से चल रहा यूथ फाउंडेशन एक मिशन बन चुका है। वह युवक-युवतियों को सेना, अर्धसैनिक बलों और पुलिस बलों में जाने के लिए तैयार करते हैं। इतने बड़े अभियान को वह निःशुल्क चलाते हैं। नेहरू पर्वतारोहण संस्थान के प्रिंसिपल रहने के दौरान उनके द्वारा केदारनाथ के पुनर्निर्माण का कार्य कई लोगों के लिए प्रेरणा है। हर चुनौती का सामना शांति और सलीके से करने का हुनर उन्हें दूसरों से अलग बनाता है। चाहे वह सैन्य मोर्चे पर दुश्मनों के कुटिल इरादों को नाकाम करना हो या फिर आपदा पीड़ित उत्तराखंड में राहत और पुनर्वास का काम। उन्हें सेना में बेहतरीन सेवाओं और अदम्य साहस के लिए कीर्ति चक्र, शौर्य चक्र और विशिष्ट सेवा मेडल से सम्मानित किया जा चुका है। कर्नल कोठियाल का जन्म 26 फरवरी 1969 को हुआ। 7 दिसंबर 1992 को सेना में गढ़वाल राइफल्स की चौथी बटालियन में बतौर सेकेंड लेफ्टिनेंट सैन्य जीवन की शुरूआत की। 'ऑपरेशन कोंगवतन' के दौरान सात आतंकियों के मार गिराने के लिए 'कीर्ति चक्र' से सम्मानित किया गया। यही नहीं उनकी अगुवाई में चले 'ऑपरेशन पराक्रम' के दौरान 4 गढ़वाल राइफल्स ने 21 आतंकवादियों को ढेर किया, इनमें से 17 आतंकवादियों को मार गिराने में तत्कालीन मेजर अजय कोठियाल का हाथ था। ■

राष्ट्रहित से जुड़े प्रोजेक्ट में जुटे

म्यांमार में एक अंतरराष्ट्रीय प्रोजेक्ट कलादान मल्टी-मॉडल ट्रांसिट ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट पर काम चल रहा है। बेहद चुनौतीपूर्ण हालात में चल रहे इस प्रोजेक्ट की कमान कर्नल कोठियाल के हाथ में है। जहां यह रोड बनाई जा रही है, म्यांमार की सेना और अराकान आर्मी के बीच गोलीबारी चलती रहती है। इस प्रोजेक्ट की शुरुआत में ही उनकी टीम को चुनौतियों का सामना करना पड़ा। विद्रोही संगठन अराकान आर्मी ने पहले कर्नल कोठियाल का अपहरण कर लिया, हालांकि वह अपनी सूझबूझ से कर्नल कोठियाल का कहना है कि राष्ट्रहित के लिए जरूरी इस प्रोजेक्ट को हर हाल में पूरा किया जाएगा।

महिला दल को कराया एवरेस्ट फतह

2012 में कर्नल कोठियाल ने एक और कीर्तिमान स्थापित किया। वह था भारतीय सेना की 7 महिला अधिकारियों को 'मांउट एवरेस्ट' फतह कराया। कर्नल कोठियाल अपने दल के साथ 22 मार्च 2012 को भारत से काठमांडू के लिए रवाना हुए। 17 दिन की पैदल यात्रा के बाद इस दल ने अपना एक बेस कैंप बनाया। आखिर 25 मई 2012 को दुनिया की सबसे ऊंची चोटी पर सेना की महिला अधिकारियों के दल ने तिरंगा लहराया। इस टीम में '7 महिला अधिकारी' तथा 10 पुरूष शामिल थे, जिनमें से 6 उत्तराखंड से थे। इस टीम में सूबेदार राजेंद्र सिंह जलाल, 16 कुमांऊ ने बिना आक्सीजन की मदद से एवरेस्ट फतह करने वाले पहले भारतीय होने का गौरव प्राप्त किया।

राजेश भूषण बेंजवाल

केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव

वरिष्ठ आईएएस अधिकारी राजेश भूषण बेंजवाल ने उत्तराखंड के सपूतों को केंद्र में मिलने वाली बड़ी जिम्मेदारी का सिलसिला जारी रखा है। हाल ही में बेंजवाल को स्वास्थ्य सचिव बनाया गया है। कोरोना को लेकर स्वास्थ्य मंत्रालय की प्रेस कांफ्रेंस में अक्सर एक शांत एवं मृदुभाषी अधिकारी नजर आते हैं। यही हैं राजेश भूषण बेंजवाल। चमोली जिले के खाल गांव के राजेश भूषण 1987 बैच के बिहार कैडर के आईएएस हैं। अपनी ईमानदारी, निस्वार्थ सेवा एवं बेबाकी के लिए पहचाने जाने वाले राजेश भूषण इससे पहले स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय में ऑफिसर ऑन स्पेशल ड्यूटी के तौर पर सेवा दे रहे थे। वह उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री जनरल बीसी खंडूरी के दामाद और यमकेश्वर की विधायक ऋतु खंडूरी के पति हैं। उनकी नियुक्ति ऐसे चुनौतीपूर्ण समय में हुई जब पूरा स्वास्थ्य विभाग कोविड-19 महामारी से निपटने में व्यस्त है।

वह कई वर्षों से केंद्र में प्रतिनियुक्ति पर हैं। इससे पहले वह मनरेगा के ज्वाइंट सेक्रेटरी थे, जो केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय भारत सरकार का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। राजेश भूषण ने आधुनिक भारतीय इतिहास विषय से एमए किया और 1987 में भारतीय प्रशासनिक सेवा से जुड़े। उन्होंने संयुक्त बिहार-झारखंड के दौरान प्रदेश में सेवा शुरू की थी और कई जिलों में अत्यंत महत्त्वपूर्ण पदों पर रहे। उन्हें एक मृदुभाषी और लो प्रोफाइल रहने वाले समझदार एवं कठोर फैसले लेने वाले दृढ़ अधिकारी के तौर पर जाना जाता है। नीतीश कुमार के शासन में बिहार पर्यटन विकास निगम के चेयरमैन एवं एमडी, परिवहन विभाग के सचिव, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के सचिव एवं प्रधान सचिव के अलावा राज्य शिक्षा परियोजना के प्रोजेक्ट डायरेक्टर एवं प्रोजेक्ट को-आर्डिनेटर रह चुके हैं। साल 2019 में राजेश भूषण को कैबिनेट सचिवालय में सचिव (सुरक्षा) का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया था। यह पद एसपीजी के प्रशासनिक प्रमुख का है। प्रधानमंत्री, पूर्व प्रधानमंत्रियों और भारत एवं विदेश में उनके परिजनों की सुरक्षा पर निकटता से नजर रखने की जिम्मेदारी उसकी होती है। ■

पटना को दी ऑडियो-वीडियो लाइब्रेरी

राजेश भूषण वर्ष 2008 से 2012 तक बिहार में तकरीबन चार वर्षों के लिए सूचना एवं जनसंपर्क विभाग एवं राज्य शिक्षा परियोजना के पद पर एक साथ रहे। दोनों ही विभागों में इन्होंने अपने जिम्मेदारियों को बखूबी निभाया। इस दौरान सूचना भवन पटना में ऑडियो-विजुअल लाइब्रेरी की स्थापना हुई। आम लोगों को जागृत करने के लिए विभिन्न विषयों और योजनाओं के प्रचार-प्रसार के लिए प्रचारात्मक लघु फिल्मों का निर्माण किया गया। भोजपुरी फिल्म महोत्सव का आयोजन और जरूरतमंद पत्रकारों के बीच पत्रकार कल्याण कोष से सहायता राशि का विधिवत वितरण कराना महत्वपूर्ण उपलब्धि रही।

प्रारंभिक शिक्षा के लिए जबरदस्त काम

बिहार में राज्य शिक्षा परियोजना में रहते हुए राजेश भूषण ने प्रारंभिक शिक्षा में गुणवता बढ़ाने के लिए 'समझो-सीखें' कार्यक्रम को अमलीजामा पहनाया। मध्याह्न भोजन योजना के सफल क्रियान्वयन, बेहतर प्रबंधन, मूल्यांकन और अनुश्रवण के लिए निबंधित समिति का गठन किया गया। केंद्र में आने पर राजेश भूषण को देश के कैबिनेट सचिवालय में कई महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारियां सौंपी गई, जिनमें देश के लोक प्रशासन और सभी मंत्रालयों का लेखा-जोखा तैयार करने के अति विशिष्ट कार्य भी शामिल रहे। शानदार गवर्नेंस, दूरदर्शिता, उत्कृष्ट सोच, जवाबदेह कार्यशैली, अहम फैसले लेने की त्वरित क्षमता, गंभीरता और व्यवहार कुशलता राजेश भूषण की खासियत रही है।

अनिल धस्माना

प्रमुख, एनटीआरओ

आईपीएस अधिकारी अनिल धस्माना को केंद्र सरकार ने नेशनल टेक्निकल रिसर्च ऑर्गेनाइजेशन के नए मुखिया की जिम्मेदारी दी है। एनटीआरओ भारत सरकार के अधीन काम करती है। अनिल धस्माना 1981 बैच के मध्य प्रदेश कैडर के आईपीएस अफसर हैं और कुछ समय पहले रिसर्च एंड एनालिसिस विंग यानी रॉ के प्रमुख के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं।

धस्माना को आतंकवाद व इस्लामिक मामलों का जानकार माना जाता है। उन्हें पाकिस्तान और अफगानिस्तान पर विशाल अनुभव हासिल है। उनके नेतृत्व में रॉ ने कई हैरतअंगेज अभियानों को अंजाम दिया। अगस्ता वेस्टलैंड घोटाले के दलाल क्रिश्चियन मिशेल के दुबई से प्रत्यर्पण में भी धस्माना की टीम ने अहम भूमिका निभाई। धस्माना ने लंदन व फ्रैंकफर्ट सहित कई प्रमुख राजधानियों में काम किया। उन्होंने यूरोप और सार्क डेस्क को भी संभाला। वह 1993 में रॉ से जुड़े। दो अक्टूबर 1957 को जन्मे धस्माना कॉमर्स में पोस्ट ग्रेजुएट हैं। पौड़ी जिले के जहरीखाल ब्लॉक के तोली गांव के महेश चंद्र धस्माना के पुत्र अनिल का पैतृक गांव है। उनकी ससुराल देहरादून में है।

धस्माना बिना किसी दबाव के निष्पक्ष कार्रवाई करने वाले अधिकारी रहे। धस्माना ने बतौर इंदौर एसपी ऑपरेशन बांबे बाजार जैसा साहसिक कारनामा अंजाम दिया था। यह कार्रवाई बाला बेग जैसे कुख्यात गुंडे के आतंक को खत्म करने के लिए की गई थी। धस्माना ने इसे आगे बढ़कर लीड किया। इससे उनकी छवि मजबूत अफसर के रूप में बनी। उन्हें राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल का काफी करीबी और विश्वासपात्र माना जाता है। अनिल कुमार धस्माना को गांव की माटी से विशेष लगाव है। बेहद मिलनसार धस्माना शादी-ब्याह समारोहों के अलावा कुल देवता की पूजा में शामिल होने गांव आते रहते हैं। चार भाई और तीन बहनों में अनिल धस्माना सबसे बड़े हैं। अपने पुश्तैनी मकान के जिस छोटे से कमरे में रहकर उन्होंने पढाई की, आज भी उनके चाचा के पोते उसमें बच्चे पढाई करते हैं। उनकी यादें आज भी इस घर में हर कोने में रची बसी हैं। ■

साधारण पृष्ठभूमि, असाधारण उपलब्धि

सफलता के फलक पर चमकने वाला यह सितारा कितनी साधारण पृष्ठभूमि से निकलकर आया है, इसका अहसास उनके गांव पहुंचकर हो जाता है। ऋषिकेश से 70 किलोमीटर दूर भागीरथी और अलकनंदा के संगम देवप्रयाग से धस्माना के गांव का रास्ता शुरू होता है। उनके गांव का नाम है तोली। यह कमोबेश वैसा ही है, जैसा कि पहाड़ के दूसरे गांव होते हैं। धस्माना की चाची आज भी तोली गांव में ही रहती है। उनके पुश्तैनी घर पर गांव के लोग गुदड़ी के इस लाल की कामयाबी पर गर्व महसूस करते हैं। अनिल आज भी वैसे ही सहज हैं, जो बचपन में जंगल से घास और पानी लेने जाते थे। घर के सारे कामों में दादी का हाथ बंटाया करते थे।

तीसरी कक्षा में भाषण और 300 वजीफा

अनिल तीसरी कक्षा में पढ़ते थे, तब जिला शिक्षा अधिकारी के सामने उन्होंने शानदार भाषण दिया था, जिसके लिए उन्हें 300 रुपये का वजीफा मिला था। उन्होंने अपने दादी के साथ तोली गांव में रहकर आठवीं तक पढ़ाई की। दिल्ली जाने के बाद भी उनका अपने गांव से लगाव कम नहीं हुआ। परिवार बड़ा होने की वजह से जब अनिल को पढ़ने का माहौल नहीं मिल पाता था, तो वो घर से बाहर निकल जाते थे। कई बार तो उन्होंने लोधी पार्क में स्ट्रीट लाइट के नीचे बैठकर पढ़ाई की। वहीं बैठकर उन्होंने अपनी कंप्टीशन की तैयारियां पूरी की। यह उनकी कुछ कर दिखाने की ललक का नतीजा था कि 1981 में उनका आईपीएस में चयन हुआ।

एडमिरल (रिटा.) डीके जोशी

उपराज्यपाल, अंडमान निकोबार

कभी नौसेना प्रमुख रहे और अब केंद्र शासित प्रदेश अंडमान निकोबार के उपराज्यपाल एडमिरल (रिटा.) डीके सिंह सादगी के समंदर हैं। अगर नौसेना की वर्दी में न रहें तो वे दिखते भले खास हों पर रहते बेहद आम आदमी की तरह हैं। अब वह राज्यपाल जैसे अतिविशिष्ट पदवीधारी हैं पर अपनी सादगी को उन्होंने यहां भी नहीं छोड़ा है। पहाड़ से निकली विभूतियों में एक समानता दिखती है - वे बेहद सहज, सादगीपूर्ण और शांत स्वभाव के होते हैं। रिटायर्ड एडमिरल देवेंद्र कुमार सिंह भी इसके अपवाद नहीं हैं।

अंडमान निकोबार का उपराज्यपाल बनाने से पहले केंद्र ने उनके अनुभव को देखते हुए उन्हें आइसलैंड डेवलपमेंट एजेंसी का उपाध्यक्ष बनाया था। एडमिरल जोशी को अंडमान निकोबार में बड़ी जिम्मेदारी देने को हिंद महासागर में भारतीय सेना के रणनीतिक महत्व से जोड़कर देखा जाता है। एडमिरल जोशी को उनकी सादगी के जाना जाता है। एडमिरल जोशी को जब अंडमान निकोबार के उपराज्यपाल का जिम्मा सौंपा गया तो उस समय वह रानीखेत में थे। खास बात यह है कि इतनी अहम जिम्मेदारी संभालने के लिए भी वह अपनी कार खुद ड्राइव करते हुए दिल्ली पहुंचे थे। इस तरह उन्होंने एक तरफ वीआईपी कल्चर न छोड़ने वाले नेताओं, अफसरों और रसूखदारों के सामने उदाहरण रखा तथा दूसरी तरफ यह भी साबित किया कि क्यों पीएम मोदी का उत्तराखंड के सपूतों पर भरोसा इतना मजबूत है।

एडमिरल जोशी ने 31 अगस्त, 2012 को भारत के 19वें नौसेना प्रमुख का पद ग्रहण किया था। एंटी सबमरीन वारफेयर में महारत रखने वाले एडमिरल जोशी ने नैतिकता का सर्वोच्च उदाहरण पेश करते हुए अपने कार्यकाल के दौरान हुए कुछ हादसों की जिम्मेदारी ली और 26 फरवरी 2014 को अपने पद से इस्तीफा दे दिया। वह पहले नौसेना प्रमुख रहे जिन्होंने समय से पहले अपने पद से इस्तीफा दिया। इसने साबित किया कि जिम्मेदारी लेने और समझने में पहाड़ के सपूत हमेशा आगे रहे हैं। सेवाकाल में उन्हें परम विशिष्ट सेवा मेडल, अति विशिष्ट सेवा मेडल, विशिष्ट सेवा पदक, नौसेना पदक और युद्ध सेवा पदक से भी सम्मानित किया गया। ■

नौसेना में आने की दिलचस्प कहानी

एक बार दूरदर्शन पर एडमिरल जोशी का साक्षात्कार चल रहा था। उनसे पूछा गया, 'आपने नौसेना में आना क्यों चुना?' तत्कालीन नौसेनाध्यक्ष ने सीधा जवाब दिया, 'मैं पहाड़ का हूं, हमें विस्तृत फैले मैदान या दूर-दूर तक लहराता समुद्र देखने की बहुत ललक रहती है। समुद्र से प्यार हमें ले आया। सैन्य सेवा चुनने के संदर्भ में उन्होंने कहा कि मेरे माता-पिता के खानदान में सात पुश्तों में भी कोई सेना में नहीं गया था। जब मैंने किशोरावस्था में ही सैन्य सेवा चुनने के अपने फैसले से दोनों को अवगत कराया तो उन्होंने बस मोहवश शुरुआती अरुचि दिखाने के बाद मुझे हमेशा ही प्रोत्साहित किया।'

समंदर से पहाड़ और फिर समंदर

एडमिरल जोशी ने लंबा वक्त समुद्र में अपनी तैनातियों या फिर दिल्ली में बिताया लेकिन पहाड़ का आकर्षण कभी कम नहीं हुआ था। नौसेना से त्यागपत्र देने के बाद वह दिल्ली की चकाचौंध छोड़कर रानीखेत के मछखाली में घर बनाकर रहने लगे। इस दौरान वह कभी भी दिल्ली की पार्टियों में शामिल नहीं हुए और न ही उन्होंने अपने इस्तीफे को लेकर मीडिया से बात की। पहाड़ को लेकर उनका प्रेम बचपन से आज तक बना हुआ है। वह नौसेना में रहते हुए भी मौका मिलने पर नैनीताल, रानीखेत की चिंता करते थे। समय मिलने पर आते भी। वे नौसेना छोड़ कर आये तो पर्वतों की गोद में और अब जब अपनी उपराज्यपाल की जिम्मेदारी निभा कर लौटेंगे तो बेशक पहाड़ों पर ही आएंगे।

हरीश रावत

राष्ट्रीय महासचिव, कांग्रेस

उत्तराखंड में हरीश रावत की गिनती मंझे हुए राजनीतिज्ञ के तौर पर होती है। भले ही वह 2017 के विधानसभा चुनाव में मात खा गए लेकिन कांग्रेस की केंद्रीय राजनीति में उनका रुतबा कम नहीं हुआ। हरीश रावत का शुमार उन नेताओं में होता है, जो छोटे स्तर से राजनीतिक जीवन शुरू करके केंद्रीय मंत्री और उत्तराखंड के मुख्यमंत्री के पद तक पहुंचे। उन पर पार्टी का भरोसा इस बात से साबित होता है कि हरीश रावत का कद बढ़ाते हुए पहले उन्हें राष्ट्रीय कार्यकारिणी में जगह दी, महासचिव बनाया और फिर असम का प्रभार सौंपा गया। इसके बाद उन्हें कांग्रेस के सबसे मजबूत राजनीतिक गढ़ पंजाब का प्रभारी नियुक्त किया गया। उत्तराखंड राज्य बनने के बाद हरीश रावत के रूप में उत्तराखंड के किसी नेता को पहली बार सीडब्ल्यूसी में जगह मिली। साल 2019 के लोकसभा चुनाव में मिली करारी हार के बाद भी उन्होंने पार्टी महासचिव और असम के प्रभारी के पद से इस्तीफा देने की पेशकश की थी।

वह एक फरवरी 2014 को उत्तराखंड के मुख्यमंत्री बनाए गए थे। 2017 में उनके नेतृत्व में हुए विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को करारी शिकस्त झेलनी पड़ी। हरीश रावत खुद दो जगह से चुनाव लड़ने के बावजूद हार गए। हरीश रावत को कांग्रेस ने पहले 7वीं लोकसभा के चुनाव के लिए अल्मोड़ा से उम्मीदवार बनाया और उन्होंने यह चुनाव जीता। उसके बाद लगातार तीन बार अल्मोड़ा का प्रतिनिधित्व किया। हरीश रावत उस समय राष्ट्रीय स्तर के नेता के रूप में प्रतिष्ठित हुए जब उन्हें कांग्रेस सेवादल के उपाध्यक्ष की जिम्मेदारी सौंपी गई। 2002 से 2008 तक रावत संसद के उच्च सदन में उत्तराखंड का प्रतिनिधित्व करते रहे। 2009 में कांग्रेस ने उन्हें हरिद्वार लोकसभा से टिकट दिया तो रावत यहां भी चुनाव जीत गए। इस दौरान वे केंद्र में पहले संसदीय कार्यों के राज्यमंत्री और बाद में जल संसाधन विकास मंत्री रहे। रावत का जन्म 27 अप्रैल 1948 को अल्मोड़ा जिले के मोहनारी गांव में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा गांव में ही पूरी करके वह लखनऊ चले गए, जहां उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की। ■

बयानों से बने रहते हैं चर्चा में...

हरीश रावत राजनीति की उस धारा का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनके बयान बहुत सोच समझकर आते हैं, इसलिए जब भी वह कुछ कहते हैं, उसके सियासी निहितार्थ खोजे जाते हैं। त्रिवेंद्र सिंह ने हरीश रावत सरकार के हरिद्वार में गंगा को एस्केप चैनल घोषित करने के फैसले को पलट दिया, इसके बाद पूर्व सीएम ने त्रिवेंद्र सिंह की तारीफ कर सबको चौंका दिया। इससे पहले उन्होंने कहा था कि सीएम त्रिवेंद्र ने ऐसे मंत्रियों पर लगाम कसी है, जो मेरे कार्यकाल में मनमानी करते थे। उन्होंने उपनल के जरिये गैर सैनिक पृष्ठभूमि के बेरोजगारों को भी नौकरी देने के फैसलों को भी सार्वजनिक मंच से सराहा था।

'वोकल फॉर लोकल' के मुरीद

उत्तराखंड के स्थानीय उत्पादों को प्रोत्साहित करने के लिए पूर्व सीएम हरीश रावत ने इस दिवाली पर नया प्रयोग किया। उन्होंने अपने मित्र-परिजनों को चंपावत के मंडुवे की सोनपापड़ी, अल्मोड़ा की तांबे की गगरी, टिहरी के आगराखाल के मंडुवे के अरसे और चमोली फल के रूप में कीनू भेंट किए। उनकी ओर से कहा गया कि यह अपने पहाड़ के मूल उत्पादों को घर-घर तक पहुंचाने और जागरूकता लाने के लिए किया गया प्रयास है। हालांकि उनका यह अभियान काफी कुछ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के वोकल फॉर लोकल का ही स्थानीय रूप है। वैचारिक रूप से पीएम मोदी के घोर विरोधी होने के बावजूद रावत उनके वोकल फॉर लोकल अभियान के खासे मुरीद हैं।

प्रदीप सिंह खरोला

सचिव, नागरिक उड्डयन

पिछले छह साल में बड़ी संख्या में उत्तराखंड मूल के अधिकारियों को केंद्र में अहम जिम्मेदारियां दी गई हैं। केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार में महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभा रहे उत्तराखंडियों में एक नाम प्रदीप सिंह खरोला का भी है। वह अपनी कार्यप्रणाली और प्रबंधन कुशलता के चलते काफी चर्चित हैं। इसलिए उन्हें नागरिक उड्डयन सचिव की जिम्मेदारी दी गई है। इससे पहले सरकार ने उन्हें सार्वजनिक क्षेत्र की विमानन कंपनी एयर इंडिया की जिम्मेदारी दे रखी थी। वह इसके चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक रहे। खरोला इससे पहले बेंगलुरु मेट्रो रेल निगम के प्रबंध निदेशक रहे। एयर इंडिया में शीर्ष पद पर उन्हें ऐसे समय लाया गया, जब सरकार राष्ट्रीय विमानन कंपनी के रणनीतिक विनिवेश के तौर तरीकों को अंतिम रूप दे रही थी। दरअसल, खरोला सार्वजनिक परिवहन कंपनियों को घाटे से निकाल कर लाभ देने वाली कंपनी बनाने के विशेषज्ञ हैं। वह बेंगलुरू की सिटी बस सेवा बेंगलुरू मेट्रोपॉलिटन ट्रांसपोर्ट कार्पोरेशन घाटे से उबारकर वर्ष 2000 में फायदे में ले आए थे। बेंगलुरू में मेट्रो सेवा की शुरुआत में भी उनका अहम योगदान रहा है।

खरोला के कॅरियर को उस समय उछाल मिला जब बेंगलूरु 'सिलिकॉन वैली' के रूप में दुनिया की आउटसोर्सिंग राजधानी के रूप में उभरा। उन्हीं के कार्यकाल में बेंगलूरू की सड़कों पर एयरकंडीशन बसें चलना शुरू हुईं। जब तक बीएमटीसी का जिम्मा खरोला के हाथों में रहा यह जबरदस्त मुनाफे में रही। वह 1985 बैच के कर्नाटक के आईएएस अधिकारी हैं। खरोला 2012-13 में कर्नाटक के मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव रहे। उन्होंने कर्नाटक में अर्बन इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट एंड फाइनेंस कार्पोरेशन (केयूआईडीएफसी) का नेतृत्व भी किया है। यह कार्पोरेशन शहरों में आधारभूत ढांचे के निर्माण के लिए अंतरराष्ट्रीय संस्थानों से धन जुटाता है। प्रदीप खरोला देहरादून के गढ़ी कैंट के रहने वाले हैं। उन्होंने कुछ साल तक कैंब्रियन हॉल स्कूल से पढ़ाई की। उनके पिता बीबीएस खरोला सेना से लेफ्टिनेंट कर्नल के पद से रिटायर हुए। ■

पीएम उत्कृष्ट लोक प्रशासन पुरस्कार

प्रदीप खरोला नेशनल एडमिनिस्ट्रेटिव रिफॉर्म कमीशन के ज्वाइंट सेक्रेटरी भी रहे हैं। 30 साल के लंबे करियर में खरोला के नाम शहरी शासन, शहरी सार्वजनिक परिवहन और नीति निर्माण का अनुभव दर्ज है। 2012 में उन्हें ई-गवर्नेंस के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है। 2013 में उन्हें प्रधानमंत्री उत्कृष्ट लोक प्रशासन पुरस्कार भी प्रदान किया गया। खरोला ने इंदौर विश्वविद्यालय से 1982 में मैकेनिकल की डिग्री हासिल की। उन्होंने आईआईटी दिल्ली से 1984 में इंडस्ट्रियल इंजीनियरिंग में पोस्ट ग्रेजुएशन किया। उन्होंने फिलीपींस एशियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट से डेवलपमेंट मैनेजमेंट में मास्टर्स किया था।

उड़ान योजना की अहम जिम्मेदारी

इस समय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की महत्वाकांक्षी उड़ान योजना का जिम्मा प्रदीप सिंह खरोला पर है। वह इसे टिकाऊ बनाने, अपने दम पर संचालित होने और दक्षता को बेहतर करने की कोशिश में जुटे हैं। इस योजना की महत्वपूर्ण बात यह है कि इसमें विभिन्न एजेंसियां एक साथ आई हैं। उड़ान योजना के चलते हवाई सेवा का राष्ट्रीय नेटवर्क बना है, जो देश भर में लोगों के लिए नए अवसर का सृजन करेगी। यही लाभार्थी कुछ समय के बाद क्षेत्रीय रूट शुरू करने की मांग कर सकते हैं। संपूर्ण भारत में उड़ान योजना के अंतर्गत 285 हवाई मार्गो के अंतर्गत 50 गैर सेवारत या सेवारत हवाई अड्डों को जोड़ा गया है।

प्रीतम सिंह

अध्यक्ष, उत्तराखंड कांग्रेस

विधानसभा चुनाव 2017 में करारी हार के बाद ही चकराता के विधायक प्रीतम सिंह को उत्तराखंड कांग्रेस की जिम्मेदारी दे दी गई थी। उन्होंने किशोर उपाध्याय से यह जिम्मा संभाला था। प्रीतम सिंह जौनसार बावर के चकराता से लगातार पांच बार से विधायक रहे हैं। उत्तराखंड में एक नई और भविष्य की टीम बनाने के मद्देनजर प्रीतम सिंह को पार्टी अध्यक्ष बनाया गया। प्रीतम सिंह उत्तराखंड के सर्वश्रेष्ठ विधायक के रूप में सम्मानित हो चुके हैं। उन्हें सरल स्वभाव का माना जाता है। जौनसार में उनकी खासी पकड़ मानी जाती है। वह रसातल में जा चुकी कांग्रेस में फिर से प्राण फूंकने की अहम जिम्मेदारी निभा रहे हैं। हालांकि उन्हें इस काम में अंदरुनी चुनौतियों का खासा सामना करना पड़ रहा है।

प्रीतम सिंह सबसे पहले वर्ष 1993 में चकराता विधानसभासीट से विधायक चुने गए। उत्तराखंड गठन के बाद से वो लगातार चकराता सीट से विधायक हैं। वर्ष 2002 की एनडी तिवारी सरकार और वर्ष 2012 की विजय बहुगुणा और हरीश रावत सरकार में भी वह कैबिनेट मंत्री रहे हैं। प्रीतम सिंह को उत्तराखंड सरकार में गृह, ग्रामीण विकास, पंचायती राज, खाद्य और नागरिक आपूर्ति, लघु सिंचाई और पिछड़ा क्षेत्र विकास के लिए कैबिनेट मंत्री बनाया गया। वर्ष 2017 में कांग्रेस के टिकट पर उत्तराखंड के चकराता विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र से विधायक के रूप में पांचवी बार चुने गए।

प्रदेश और केंद्रीय संगठन में भी प्रीतम सिंह ने कई महत्वपूर्ण पदों की जिम्मेदारी निभाई है। प्रीतम सिंह के नाम अपने विधानसभा क्षेत्र में कई उपलब्धियां दर्ज हैं। उन्होंने जौनसार-बावर के त्यूणी, चकराता व कालसी में तीन तहसीलों का निर्माण और चकराता, त्यूणी व क्वांसी में तीन डिग्री कॉलेज की स्थापना करवाई। त्यूणी में नियमित पुलिस थाना व कांडोई-भरम में पशु चिकित्सालय की स्थापना का श्रेय भी उन्हीं के नाम दर्ज है। इसके अलावा महासू मंदिर हनोल, लाखामंडल व चकराता के टाइगर फॉल में भी उन्होंने पर्यटन विकास के कई कार्य करवाए। त्यूणी, क्वांसी, पजिटीलानी, लाखामंडल, लखवाड़, अटाल व धिरोई में मिनी स्टेडियम का निर्माण कराने की उपलब्धि भी प्रीतम सिंह के नाम पर दर्ज है। इसके अलावा, उनके समय में क्वांसी व साहिया में दो पॉलीटेक्निक संस्थान और लाखामंडल व कालसी में आईटीआई की स्थापना हुई। ■

पिता यूपी विस के लिए निर्विरोध जीते

प्रीतम सिंह का जन्म 1958 में देहरादून में एक राजपूत परिवार में हुआ था। प्रीतम सिंह उत्तर प्रदेश विधानसभा के आठ बार विधायक रहे स्वर्गीय गुलाब सिंह के सबसे बड़े पुत्र हैं। उनके पिता उत्तर प्रदेश में कांग्रेस सरकार के दौरान मंत्री थे। सन 1985 में उत्तर प्रदेश विधानसभा के निर्विरोध सदस्य के रूप में भी चुने गए। प्रीतम सिंह ने अपनी सियासी पारी 1988 में चकराता के ब्लाक प्रमुख और जिला पंचायत सदस्य के रूप में शुरू की। वर्ष 1993 में वह कांग्रेस के टिकट पर चकराता से विधायक चुने गए। वर्ष 2002 में कांग्रेस के टिकट पर उत्तराखंड के चकराता निर्वाचन क्षेत्र से विधायक के रूप में वह दूसरी बार चुने गए।

2009 में चुना गया उत्कृष्ट विधायक

साल 2002 में प्रीतम सिंह को उत्तराखंड सरकार में ग्रामीण अभियंत्रण, पंचायती राज, खाद्य और नागरिक आपूर्ति, खेल एवम्युवा कल्याण के लिए कैबिनेट मंत्री बनाया गया। वर्ष 2007 में कांग्रेस के टिकट पर उत्तराखंड के चकराता निर्वाचन क्षेत्र से विधायक के रूप में वह तीसरी बार चुने गए। वर्ष 2009 में चकराता विधायक प्रीतम सिंह को उत्तराखंड राज्य के उत्कृष्ट विधायक के रूप में चुना गयो 2010 में प्रीतम सिंह को उत्तराखंड की लोक लेखा समिति (पीएसी) का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। वर्ष 2012 में कांग्रेस के टिकट पर उत्तराखंड के चकराता विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र से विधायक के रूप में चौथी बार चुने गए।

नरेंद्र सिंह नेगी

लोक गायक एवं गीतकार

उत्तराखंड के खेतों-खलिहानों, जंगलों में घास-लकड़ी लेने अथवा मवेशियों के साथ गई घसेरियों और ग्वैरों, पानी के स्रोत धारा-मंगरों, शादी-विवाह अथवा धार्मिक कार्यक्रमों, घरों और देवालयों अर्थात यत्र-तत्र सर्वत्र यदि कोई एक चीज मौजूद है तो वह है नरेंद्र सिंह नेगी की आवाज। पर्वतीय जीवन का शायद ही कोई ऐसा पक्ष हो जिस पर नरेंद्र सिंह नेगी की नजर न पड़ी हो और जिस पर उन्होंने गीत की रचना कर उसे अपना मधुर कंठ न दिया हो। नरेंद्र सिंह नेगी का रचना संसार वास्तविकता के धरातल पर बना है। यही वजह है कि उनके गीतों में भावनाओं का ज्वार होता है। उन्होंने मुख्यतः खुद ही गीतों का सृजन किया, संगीत और स्वर दिया। लेकिन कुछ गीत उन्होंने अन्य कवियों के भी गाए हैं। अनेक लोकगीतों को भी उन्होंने नया रूप देकर श्रोताओं के सामने रखा। अब तक नरेंद्र सिंह नेगी का रचनाकर्म 'खुच कंडी', 'गाणियों की गंगा, स्याणियों का समोदर' और 'मुट्ट बोटिक रख' जैसी पुस्तकों के रूप में प्रकाशित हो चुका है।

यह नरेंद्र सिंह नेगी का ही लेखन हो सकता है कि बांध के लिए डूब रहे टिहरी में बैठे एक पिता की अपने बेटे को लिखी चिट्ठी में उभरे भाव 'अबारी दां तू लम्बी छुट्टी ले की ऐई, टिहरी डूबण लग्युं चा बेटा डाम का खातीर...' गीत की शक्ल में कालजयी रचना हो गई। हर उत्तराखंडी को प्रेरित करने वाला 'आंदोलन गीत' भी उनकी लेखनी से फूटा और उन्होंने तमाम उत्तराखंडियों को पृथक राज्य आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया। गढ़रत्न कहे जाने वाले नरेंद्र सिंह नेगी ने गढ़वाली गीत माला के नाम से एकल गीतों के एलबम निकाले। गढ़वाली गीतमाला के 10 भाग निकले। बाद में उन्होंने अपने एलबम को अलग-अलग नाम देना शुरू किया और अन्य गायक-गायिकाओं के साथ गाने लगे। नाम वाला उनका पहला एलबम बुरांश था।

उन्होंने अनेक गढ़वाली फिल्मों में भी गीत, संगीत और स्वर दिया है। इन फिल्मों में चक्रचाल, घरजवैं, मेरी गंगा होली मैं मा आली, कौथिग, बंटवारू, छम घुंघरू, जय धारी देवी, सुबेरौ घाम आदि शामिल हैं। उनका रचनाकर्म जितना पुरानी पीढ़ी को प्रभावित करता है, उतना ही लोक रचनाओं को समझने वाली नई पीढ़ी को भी छूता है। हालांकि यू-ट्यूब हिट्स को किसी गीत की सफलता का मानक बनाए जाने को गलत चलन मानते हैं। ■

संगीत नाटक अकादमी सम्मान

नरेंद्र सिंह नेगी के बहुचर्चित गीत नौछमी नारैणा पर 'गाथा एक गीत की' नामक पुस्तक भी प्रकाशित हुई। नेगी का जन्म 12 अगस्त 1949 को पौड़ी जनपद के मुख्यालय पौड़ी शहर के लगे पौड़ी गांव में हुआ। उन्होंने वहीं से ही अपनी पढ़ाई पूरी की और बाद में संगीत का प्रशिक्षण लेकर आकाशवाणी में तबला वादक के रूप में नौकरी शुरू की। बाद में वह आकाशवाणी की नौकरी छोड़कर उत्तर प्रदेश के सूचना एवं लोक संपर्क विभाग में आ गए। सरकारी सेवा छोड़ने के बाद नेगी फिर अपने गीतों एवं कविताओं के संसार में सक्रिय हैं। उन्हें संगीत नाटक अकादमी सम्मान मिल चुका है।

गीतों का अंग्रेजी में हुआ अनुवाद

मां नंदा देवी राजजात पर उनका गाया सुप्रसिद्ध माँ भगवती का गीत 'जै बोला जै भगोती नंदा, नंदा ऊंचा कैलाश की...' उत्तराखंडी की थाती है। ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं जो उनकी रचनाओं एवं गीतों के जरिए उत्तराखंडी समाज के लिए आईना बने। वह सिर्फ एक लोकगायक नहीं, एक ऐसे कलाकार, संगीतकार और चितेरे कवि हैं जो अपने पारंपरिक परिवेश की दशा-दिशा को लेकर काफी भावुक एवं संवेदनशील है। हाल ही में एचएनबी केंद्रीय विश्वविद्यालय श्रीनगर के पीएचडी के छात्र दीपक बिजल्वाण ने गढ़वाल के साहित्य को आगे बढ़ाने लिए नरेंद्र सिंह नेगी के 40 गीतों के संग्रह का अंग्रेजी में अनुवाद किया है।

पद्मश्री बसंती बिष्ट

जागर गायिका

उत्तराखंड में जब भी जागर गायन शैली का जिक्र होता है पद्मश्री बसंती देवी बिष्ट की बात होना लाजिमी है। यह मां नंदा के जागरों को मंचों तक ले जाने वाली बुलंद आवाज का नाम है। बसंती बिष्ट ने उत्तराखंड के जागर गायन को न सिर्फ नए आयाम दिए, बल्कि पुरुषों के एकाधिकार वाले जागर गायन क्षेत्र की तमाम वर्जनाओं को तोड़कर आकाशवाणी, दूरदर्शन और विभिन्न मंचों पर पहुंचकर एक ऐसा मुकाम भी हासिल किया, जो आज नजीर बन गया है। वह इस समय देहरादून में रह रही हैं और विभिन्न मंचों पर जागर की प्रस्तुति देकर पहाड़ की संस्कृति के संवर्द्धन में जुटी हुई हैं। जनवरी 2017 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया। बसंती बिष्ट ने मां नंदा के जागर को स्वरचित पुस्तक 'नंदा के जागर-सुफले जायां तुम्हारी जात्रा' में संजोया है।

बसंती देवी उत्तराखंड की उस पीढ़ी से हैं, जिनके दौर में पहाड़ों में महिलाओं के मंच पर जागर गाने की परंपरा नहीं थी। मां ने उन्हें सिखाया था लेकिन बाकी कोई प्रोत्साहन नहीं मिला। वह गीत-संगीत में तो रुचि लेतीं लेकिन मंच पर जाकर गाने की उनकी हसरत सामाजिक वर्जनाओं के चलते पूरी नहीं हो सकी। शादी के बाद जब पति ने उन्हें गुनगुनाते हुए सुना तो विधिवत रूप से सीखने की सलाह दी। पहले तो बसंती तैयार नहीं हुई लेकिन पति के जोर देने पर उन्होंने सीखने का फैसला किया। बसंती देवी बिष्ट की शादी 15 वर्ष की उम्र में हो गई थी। कुछ वर्ष तक वे अपनी ससुराल में रहकर घास-पानी और खेत खलिहान के कार्य करती रहीं और बाद में अपने पति के साथ पंजाब चली गई, जो सेना में नौकरी करते थे। पंजाब में उन्होंने प्राचीन कला केंद्र चंडीगढ़ में एडमिशन ले लिया और पांच वर्ष तक संगीत की बारीकियां सीखी। बाद में वे देहरादून आ गईं और परिवार की जिम्मेदारियां निभाने लगीं। देहरादून में किसी ने उन्हें आकाशवाणी जाने की सलाह दी। आकाशवाणी में उन्होंने जागर गायन को प्राथमिकता दी। बसंती बिष्ट अब तक तमाम मंचों पर एक हजार से अधिक प्रस्तुतियां दे चुकी हैं। ■

जागर गायन को दिए नए आयाम

बसंती देवी ने शुरुआत में कभी भी गायन की शिक्षा नहीं ली, वह अपनी मां को जो गुनगुनाते सुनती, उसे कभी-कभार दोहरा लेती। गांव में लगने वाले मेले-उत्सवों में होने वाले पारंपरिक गायन ने बसंती देवी को गायन की ओर मोड़ा। शादी के काफी समय बाद जालंधर में उन्होंने कुछ समय तक गीत-संगीत की बारीकियों को जाना। साल 2017 में पद्मश्री पुरस्कार से नवाजा गया। इसके अलावा उन्हें मध्य प्रदेश सरकार ने साल 2016 में प्रतिष्ठित राष्ट्रीय मातोश्री अहिल्या देवी सम्मान प्रदान किया। उत्तराखंड सरकार की ओर से बसंती देवी को टीलू रौतेली नारी शक्ति सम्मान दिया गया है।

चमोली के ल्वाणी से है नाता

बसंती बिष्ट का जन्म चमोली जिले के ल्वाणी गांव में 14 जनवरी, 1953 को हुआ। एक सैन्यकर्मी से शादी होने के बाद बसंती देवी ने लंबे समय तक पारिवारिक जिम्मेदारियों निभाई। उनका प्रोफेशनल करियर 40 साल की उम्र में शुरू हुआ। वह 1996 में आकाशवाणी नजीमाबाद से जुड़ीं। वह आकाशवाणी और दूरदर्शन में 'ए' श्रेणी की लोक कलाकार हैं। पारंपरिक परिधानों में जबबसंती बिष्ट और उनकी टीम मंच पर हिमालय की देवियों का आ'ान करती हैं, तो माहौल आध्यात्मिक हो जाता है। उनके गायन की खास बात यह है कि वह गढ़वाली के साथ कुमाऊंनी शैली में भी पूरे अधिकार से जागर गाती हैं। मां नंदा के जागर में वह सबसे बड़ा हस्ताक्षर हैं।

शौर्य डोभाल

निदेशक, इंडिया फाउंडेशन

किसी भी मुद्दे पर बेबाक और खरा अंदाज शौर्य डोभाल की पहचान है। उनका ताल्लुक पौड़ी गढ़वाल के घीड़ी गांव और देशसेवा को समर्पित परिवार से है। वह भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल और अरुणि डोभाल की पहली संतान हैं। पिता को अपनी सेवाओं के लिए शौर्य चक्र मिला इसलिए बेटे का नाम भी शौर्य रखा। हालांकि पिता की छवि से अलग शौर्य की एक अलग पहचान है। वह एक इनवेस्टमेंट बैंकर रहे हैं। आर्थिक मामलों पर जबरदस्त पकड़ रखने वाले शौर्य डोभाल राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए बने इंडिया फाउंडेशन थिंक टैंक के संस्थापक हैं। दुनिया के तमाम देशों में अपनी सेवाएं देने वाले शौर्य के दिल में उत्तराखंड के भविष्य को लेकर कई सपने हैं। यही वजह है कि साल 2019 में उन्होंने गृहराज्य उत्तराखंड में जनसेवा के लिए आगे आने का फैसला करते हुए भाजपा की सदस्यता ली। वह प्रदेश कार्यकारिणी के विशेष आमंत्रित सदस्य हैं।

उत्तराखंड में पलायन को लेकर उनकी एक प्रोग्रेसिव लाइन है। शौर्य डोभाल कहते हैं कि पलायन को रोकने का एक ही तरीका हो सकता है कि आपकी वहां आर्थिक गतिविधियां इतनी अधिक हों कि मद्रास का आदमी काम करने आना चाहे। आदमी पलायन तब करता है जब उसे किसी जगह पर अपना भविष्य नहीं दिखता। आप सिर्फ स्कूल और बिल्डिंग देके लोगों को नहीं रोक सकते, वहां उन्हें भविष्य दिखना चाहिए। अगर आप ऐसा भविष्य दे देते हैं, जैसा स्विट्जरलैंड देता है तो अमेरिका का भी आदमी आएगा। इसके लिए उस स्तर की सोच से आगे बढ़ना होगा। हमें ऐसी नीतियों का गठन करना होगा जिससे हम पहाड़ के अंदर इस स्तर का विकास कर सकें कि हम पलायन न रोकें बल्कि हॉर्वर्ड से पढ़े लड़के को यह कह सकें कि उत्तराखंड में अपना प्लांट लगा। अपना आइडिया यहां पर जनरेट कर। जब आप ऐसे सोचेंगे, तब आपके इकॉनमिक क्लस्टर बनेंगे। तब आप देखेंगे कि आपके अस्पताल, स्कूल सब अपने आप भर जाएंगे। लोग खुशी-खुशी वहां रुकेंगे, क्योंकि वह अपने बच्चों का वहां भविष्य देख पाएंगे। ■

लंदन बिजनेस स्कूल से एमबीए

दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित हिंदू कॉलेज से शौर्य ने अर्थशास्त्र (ऑनर्स) में प्रथम श्रेणी में डिग्री पाई। मात्र 20 वर्ष की आयु में 'आर्थर एंडरसन' ने उन्हें नौकरी दी। साथ ही चार्टर्ड अकाउंटेंट बनने का अवसर दिया। 23 वर्ष की उम्र में यह डिग्री हासिल कर वह सीए बने। उनकी क्षमता, योग्यता व प्रतिभा को देख कर दुनिया के दस अग्रणी बिजनेस स्कूलों में शामिल इंग्लैंड के लंदन बिजनेस स्कूल तथा अमेरिका के शिकागो विश्वविद्यालय ने उन्हें एमबीए का अवसर दिया। वह कहते हैं अगर उत्तराखंड नई पीढ़ी को रिस्क लेने का मौका दें, पूंजी उपलब्ध कराएं, ट्रेनिंग की योजनाएं और पॉलिसी बनाएं तो राज्य में आंत्रप्रेन्योरशिप का माहौल बनेगा।

सर्वश्रेष्ठ कंपनियों के साथ काम

शौर्य डोभाल ने दुनिया की सर्वश्रेष्ठ कंपनियों जैसे मोर्गन स्टेनले, जीई कैपिटल आदि में उच्च पदों पर काम किया जहां उन्हें व्यवसायिक श्रेठता हासिल करने का मौका मिला। वर्ष 2012 में उन्हें देश के प्रतिष्ठत इंस्टीट्यूट ऑफ इकोनॉमिक स्टडीज ने उद्योग रत्न अवॉर्ड दिया। वर्ष 2015 में शौर्य को अमेरिका में प्रतिष्ठित आइजन हॉवर फैलोशिप के लिए चुना गया। वह कहते हैं, उत्तराखंड को अपने हाई क्वॉलिटी मैन पॉवर को स्किल्ड करते हुए हमेशा कुछ नया करते रहना पड़ेगा। हमारी क्वॉलिटी इतनी अच्छी होनी चाहिए कि उसकी इकॉनमिक वैल्यू हो। शौर्य का विवाह भी टिहरी के नौटियाल परिवार में जन्मी दिव्या के साथ हुआ है जो एक ख्याति प्राप्त कैंसर डॉक्टर है।

डा. धन सिंह रावत

उच्च शिक्षा मंत्री, उत्तराखंड

उत्तराखंड सरकार के जमीन पर सक्रिय रहने वाले मंत्रियों में डा. धन सिंह रावत की गिनती होती है। वह अपने सरल और हल्के-फुल्के अंदाज के विख्यात हैं। भाजपा की युवा पीढ़ी के खांटी नेता और उत्तराखंड के उच्च शिक्षा मंत्री डा. धन सिंह रावत संगठन पर पकड़ के लिए विख्यात हैं। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् से भाजपा में आए और संघ के करीबी धन सिंह की खासियत यह है कि प्रदेश स्तर पर ही नहीं केंद्रीय स्तर पर भी उनके रिश्ते बेहद अच्छे हैं। वह न सिर्फ मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत के विश्वासपात्र और करीबी हैं बल्कि सीएम उनकी सांगठनिक पकड़ और काबिलियत के मुरीद भी हैं।

जनता के बीच 'धन दा' के नाम से विख्यात धन सिंह के पास सहकारिता, प्रोटोकॉल और दुग्ध विकास मंत्रालय भी है। कोरोना संक्रमण काल के दौरान उत्तराखंड में बड़ी संख्या में प्रवासी लौटे। ऐसे में इन सभी को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए उन्होंने अपने विभागों में कई योजनाएं शुरू कीं। मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना में सबसे ज्यादा आवेदन उनके विभाग से ही जुड़े हैं। उन्होंने उत्तराखंड में जहां बड़े पैमाने पर मिल्क बूथ स्कीम को अमलीजामा पहनाया है, वहीं पशुपालन और डेयरी के क्षेत्र में रोजगार के कई साधन उपलब्ध कराए हैं। प्रदेश के विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में शैक्षिक सत्र को नियमित करने, सहकारिता से अधिक से अधिक लोगों को जोड़ना और दुग्ध संघों को घाटे से उबारने को उन्होंने अपनी प्राथमिकता में रखा है। बतौर मंत्री धन सिंह ने लीक से हटकर कुछ नए फैसले लिए। देहरादून में सात दिवसीय सहकारिता सम्मेलन का आयोजन कर अपनी धमाकेदार मौजूदगी दर्ज कराई। संगठन में उनके महत्व का पता इसी बात से चलता है कि विधानसभा चुनाव के दौरान प्रधानमंत्री मोदी से लेकर केंद्रीय मंत्री उमा भारती सहित कई दिग्गज नेता श्रीनगर में डा. रावत के प्रचार में पहुंचे थे। उस समय पीएम मोदी ने अपने भाषण की शुरुआत भी गढ़वाली में की थी। 7 अक्टूबर 1972 को पौड़ी गढ़वाल की कंडारस्यूं पट्टी के नौगांव में जन्मे धन सिंह की शुरुआती शिक्षा गांव से हुई। उन्होंने हेमवंती नंदन बहुगुणा विश्वविद्यालय से पीएचडी की है। ■

डिग्री कॉलेजों में हाईस्पीड इंटरनेट

डा. धन सिंह के विभाग के खाते में एक और उपलब्धि जुड़ गई है। उत्तराखंड के विभिन्न कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों को डिजिटल शिक्षा प्रदान करने के लिए राज्य के कॉलेजों को इंटरनेट से जोड़ा जा रहा है। उत्तराखंड महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों को हाई स्पीड इंटरनेट कनेक्टिविटी से जोड़ने वाला देश का प्रथम राज्य बन गया है। उत्तराखंड उच्च शिक्षा विभाग के अंतर्गत आने वाले 105 महाविद्यालयों और 5 विश्वविद्यालयों सहित कुल 112 स्थानों पर ब्रॉडबैंड इंटरनेट कनेक्टिविटी प्रदान की जा रही है। राज्य सरकार, आईटीडीए और उच्च शिक्षा विभाग ने छात्रों को डिजिटल दुनिया से जोड़ने की पहल की है।

पशुपालन के लिए काफी योजनाएं

डा. धन सिंह ने पशुपालन को व्यवसाय के रूप में परिवर्तित करने के लिए कई पहल की हैं। उत्तराखंड सरकार पशुपालन और दुग्ध व्यवसाय के लिए कई तरह की सब्सिडी दे रही है। मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना में सबसे ज्यादा जोर पशुपालन और डेयरी पर दिया जा रहा है। उत्तराखंड में सरकार 7000 डेयरी दे रही है। बेरोजगार नौजवानों को तीन और पांच गाय से डेयरी शुरू करने का विकल्प दिया गया है। इस डेयरी का खर्च करीब 2.50 लाख रुपये है, इसमें से राज्य सरकार 1.25 लाख रुपये की सब्सिडी दे रही है। दूध की खरीदारी आंचल द्वारा की जाएगी। दूध की कीमत के अलावा 4 रुपये प्रति लीटर की प्रोत्साहन राशि भी मिलेगी।

ले. ज. अनिल चौहान

जीओसी-इन-सी, पूर्वी कमान

देश की रक्षा-सुरक्षा की महती जिम्मेदारी निभा रहे सैन्य अधिकारियों में लेफ्टिनेंट जनरल अनिल चौहान भी शामिल हैं। वह इस समय सेना की पूर्वी कमान के जनरल ऑफिसर कमांडिंग इन चीफ हैं। उन्हें साल 2019 में यह जिम्मेदारी दी गई थी। चीन के साथ चल रहे गतिरोध को देखते हुए देश की पूर्वी कमान का काम काफी अहम हो जाता है। ऐसे में देश के पूर्वोत्तर क्षेत्र की सुरक्षा का जिम्मा लेफ्टिनेंट जनरल चौहान के कंधों पर है। सितंबर 2019 में लेफ्टिनेंट जनरल चौहान ने यह जिम्मेदारी संभाली। उन्होंने लेफ्टिनेंट जनरल मनोज मुकुंद नरवाने की जगह ली। जिन्हें पहले सेना का उपप्रमुख और 31 दिसंबर, 2020 को सेना प्रमुख बनाया गया। खड़कवासला स्थित राष्ट्रीय रक्षा अकादमी और देहरादून की भारतीय सैन्य अकादमी के पूर्व छात्र रहे लेफ्टिनेंट जनरल चौहान का विभिन्न कमांड, स्टाफ और निर्देशात्मक नियुक्तियों में एक प्रतिष्ठित करियर रहा है। लेफ्टिनेंट जनरल अनिल चौहान को उत्तम युद्ध सेवा मेडल, अति विशिष्ट सेवा मेडल, सेना मेडल और विशिष्ट सेवा मेडल से अलंकृत किया जा चुका है। वह उत्तराखंड के पौड़ी जिले के रहने वाले हैं।

लेफ्टिनेंट जनरल अनिल चौहान इससे पहले महानिदेशक सैन्य अभियान (डीजीएमओ) की जिम्मेदारी भी संभाल चुके हैं। ले. जनरल चौहान साल 2017 में सेना की तीसरी कोर के कमांडर थे। उन्होंने पहली जनवरी, 2017 को यह दायित्व संभाला था। 11 गोरखा राइफल में 1981 को कमीशन लेने वाले लेफ्टिनेंट जनरल चौहान को जम्मू-कश्मीर और पूर्वोत्तर के राज्यों में आतंकरोधी अभियानों का खासा अनुभव है। उन्होंने अंगोला में संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन के तहत सेवाएं भी दी हैं। उन्होंने भारत-चीन सीमा पर महत्वपूर्ण योगदान देने के साथ हाल ही में पाकिस्तान के खिलाफ बालाकोट एयरस्ट्राइक में भी अहम भूमिका निभाई थी। पूर्वी कमान के प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल अनिल चौहान की निगरानी में उत्तरी सीमाओं पर मौजूदा चुनौतियों से निपटने के लिए नवगठित 17 कोर में इंटीग्रेटेड बैटल ग्रुप (आईबीजी) की अवधारणा को आकार दिया जा रहा है। ■

आईबीजी में अहम भूमिका

सेना ने 17 कोर में इंटीग्रेटेड बैटल ग्रुप (आईबीजी) की अवधारणा को रफ्तार देने के लिए लगातार अभ्यास किए हैं, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उसका संगठन और ढांचा क्या होना चाहिए। देश की पहली माउंटेन स्ट्राइक कोर यानी17 कोर ने अक्टूबर 2019 में अरुणाचल प्रदेश में करीब 15 हजार फुट की ऊंचाई पर 'हिम विजय' नामक बड़ा अभ्यास किया था। यह काम लेफ्टिनेंट जनरल चौहान की निगरानी में हुआ। उनका कहना है कि उत्तरी सीमाओं पर मौजूदा चुनौतियों से निपटने के लिए हम खुद को इंटीग्रेटेड बैटल ग्रुप के रूप में तैयार कर रहे हैं।

मुखौटे जमा करने का अनोखा शौक

ले. जनरल चौहान को मुखौटे जमा करने का नायाब शौक है। उनके पास दुनिया भर के मुखौटों का बेहतरीन कलेक्शन है। वह बताते हैं कि शुरूआत में नेपाल से कुछ मुखौटे खरीदे। यह महज सजाने के लिए थे लेकिन जब उन्हें अंगोला जाने का अवसर मिला तो वह एक अलग संस्कृति थी। दूसरे उपमहाद्वीप के मुकाबले अंगोला में मुखौटा का उद्देश्य ही अलग था। इसके बाद से मेरा मुखौटे जमा करने का शौक बढ़ता चला गया। अब जब भी उन्हें दुनिया के किसी भी हिस्से में जाने का मौका मिलता है, मुखौटा जरूर खरीदते हैं। लेफ्टिनेंट जनरल चौहान के पास इस समय 160 मुखौटों को कलेक्शन है। वह कहते हैं, अगर कोई मुखौटी किसी संस्कृति का प्रतीक होता है तो मैं उसे जरूर खरीदता हूं।

ले. ज. (रिटा.) राजेश पंत

प्रमुख एनसीएससी

आज समूचा विश्व साइबर सुरक्षा को पुख्ता बनाने की दिशा में काम कर रहा है। यह क्षेत्र भारत जैसे बड़े देश के लिए चुनौती बनकर उभरा है। देश के चुनिंदा साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ का जिक्र होते ही सेवानिवृत्त लेफ्टिनेंट जनरल डा. राजेश पंत के नाम की चर्चा होने लगती है। उनकी गिनती अंतरराष्ट्रीय साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ के तौर पर होती है। वह इस समय भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय में राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा समन्वयक हैं। इस हैसियत में वह देश के भीतर एक सुरक्षित और लचीला साइबर स्पेस सुनिश्चित करने के लिए कई क्षेत्रों में सभी गतिविधियों के समन्वय के लिए जिम्मेदार हैं।

लेफ्टिनेंट जनरल पंत को इनफॉर्मेशन सिक्योरिटी मेट्रिक्स के क्षेत्र में अनुसंधान के लिए पीएचडी की डिग्री हासिल है। वह आईआईटी खड़गपुर से एमटेक और मद्रास यूनिवर्सिटी से एमफिल हैं। उन्होंने उस्मानिया यूनिवर्सिटी से मैनेजमेंट स्टडीज में मास्टर्स किया है। इस पद पर नियुक्त होने से पहले वह तीन साल तक सेना के साइबर प्रशिक्षण प्रतिष्ठान के प्रमुख थे। उन्होंने 41 साल तक सिग्नल कोर में सेवाएं दी हैं। सर्वोच्च आदेश की विशिष्ट सेवा के लिए उन्हें राष्ट्रपति द्वारा तीन बार सम्मानित किया गया।

अपने रिटायरमेंट से पहले वह एक सूचीबद्ध इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनी के चेयरमैन, एनएएसी के सह-समीक्षा सदस्य और आईईटीई (भारत) के गवर्निंग काउंसिल के सदस्य थे। लेफ्टिनेंट जनरल पंत उत्तराखंड के कुमाऊं से आते हैं। उनके पिता रमेश चंद्र पंत यूपी कैडर के आईएएस अधिकारी थे। ले. जनरल पंत ने अपनी शुरूआती शिक्षा लखनऊ से ली और इसके बाद जनवरी 1970 में नेशनल डिफेंस एकेडमी ज्वाइन की। उन्हें साल 1973 में भारतीय सेना के सिग्नल कोर में कमीशन मिला। लेफ्टिनेंट जनरल पंत की बेटी डा. हिना पंत क्लीनिकल साइकोलॉजी में पीएचडी कर रही है। उनकी पत्नी वंदना डा. हरि शंकर पंत की बेटी हैं। ■

नई साइबर सुरक्षा नीति तैयार

चीनी मोबाइल एप्स पर प्रतिबंध लगाने और तकनीकी सप्लाई चेन में सुरक्षा घेराबंदी मजबूत करने की कड़ी में भारत जल्द ही नई साइबर सुरक्षा नीति लागू करने जा रहा है। भारत के राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा संयोजक लेफ्टिनेंट जनरल राजेश पंत के मुताबिक, साइबर सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए एक व्यापक नीति लाई जा रही है। इसे तैयार कर लिया गया है और सरकार में शीर्ष स्तर पर मंजूरी के बाद लागू कर दिया जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 अगस्त, 2020 को घोषणा की थी कि आगामी दिनों में साइबरस्पेस पर निर्भरता कई गुणा बढ़ेगी, इसलिए देश में नई साइबर सुरक्षा रणनीति लागू की जाएगी।

350 फीसदी बढ़े साइबर हमले

अगस्त महीने में संयुक्त राष्ट्र ने कहा था कि पूरी दुनिया में कोरोना वैश्विक महामारी के दौरान साइबर अपराधों में 350 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। वहीं ले. जनरल राजेश पंत के मुताबिक, पिछले साल आधिकारिक आंकड़े के अनुसार साइबर हमलों के कारण 1.25 लाख करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। रैनसमवेयर हमले लगातार बढ़ रहे हैं। ये अपराधी घरों से काम कर रहे हैं। ये लोग निष्ठुर हैं। वे अस्पतालों को निशाना बना रहे हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि आपात स्थिति में अस्पताल भुगतान करेंगे। केवल ऐप ही नहीं बल्कि 15 अलग-अलग तत्व हैं, जिससे साइबर हमले हो सकते हैं। इनमें परिचालन प्रणाली, प्रोसेसर, मेमोरी चिप, ब्लूटूथ और वाईफाई तक शामिल है।

अश्विनी लोहानी

सीईओ, जीएमआर ग्रुप

भारतीय रेलवे बोर्ड के पूर्व चेयरमैन और एयर इंडिया के पूर्व सीएमडी अश्विनी लोहानी इस समय इंफ्रास्ट्रक्चर कंपनी जीएमआर ग्रुप के सीईओ हैं। पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप मॉडल पर काम करते हुए इस समूह ने भारत में कई बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को लागू किया है। इस समूह की नेपाल, इंडोनेशिया, सिंगापुर, फिलीपींस और ग्रीस सहित कई देशों में बुनियादी ढांचे की संचालन परिसंपत्तियों और परियोजनाओं के साथ एक वैश्विक उपस्थिति है। अश्विनी लोहानी के शब्दकोश में लगन, मेहनत, कार्य कुशलता और रिकार्ड जैसे शब्दों की भरमार है। लोहानी की यूएसपी यानी यूनिक सेलिंग प्वाइंट है, उनका टाइम मैनेजमेंट। यही वजह है कि उन्हें सेवानिवृत्ति के बाद फिर एयर इंडिया की जिम्मेदारी दी गई थी। इससे पहले, वह 31 दिसंबर, 2018 को रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष के पद से रिटायर हुए थे। रेलवे में जमीन पर नजर आ रहे सुधारों का श्रेय उनके हिस्से में आता है।

लोहानी सादगी पसंद व्यक्ति हैं। वह सरकारी तामझाम में यकीन नहीं करते। इसीलिए जब उन्हें रेलवे बोर्ड का मुखिया बनाया गया तो उन्होंने सबसे पहला आदेश वरिष्ठ अधिकारियों के कमरों से नेम प्लेट हटाने का दिया। यही नहीं उनकी पहल पर रेलवे ने 36 साल पुराने प्रोटोकॉल को भी खत्म कर दिया, जिसके तहत रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष और बोर्ड के सदस्यों के जोनल विजिट के दौरान जनरल मैनेजरों को उनके आने तथा जाने के समय मौजूद रहना पड़ता था। किताब लिखने और पढ़ने के शौकीन लोहानी को विश्व के सबसे पुराने भाप लोकोमोटिव इंजन फेयरीक्वीन को भी फिर से पटरी पर लाने का श्रेय जाता है। जब मध्य प्रदेश टूरिज्म कॉरपोरेशन की कमान प्रबंध निदेशक के तौर पर लोहानी को सौंपी गई थी। उस वक्त राज्य का पर्यटन देश के नक्शे में काफी पीछे था। या यूं कहें कि धार्मिक स्थलों के अलावा पर्यटन के नाम पर कुछ नहीं था। लोहानी ने नए डेस्टीनेशन विकसित किए और पर्यटन के बारे में पर्यटकों को जागरूक किया। कुछ ही सालों में प्रदेश पर्यटन के नक्शे में आ गया। उन्होंने 'स्मोकिंग ब्यूटीज' और 'विनिंग एट वर्क अगेंस्ट आल ऑड्स' नाम की दो पुस्तकें लिखी हैं। ■

नाम पर दर्ज हैं कई रिकार्ड

कानपुर के रहने वाले लोहानी ने कानपुर में इंटर की पढ़ाई के बाद मैकेनिकल, इलेक्ट्रानिक्स, इलेक्ट्रिकल और टेलीकॉमिनीकेशन में डिग्री हासिल कर लिम्का बुक में अपना नाम दर्ज कराया। या यूं कहें तो बस यह एक शुरूआत थी। इसके बाद न जाने कितने ऐसे रिकार्ड बने, जिसका समय गवाह है। लोहानी का नाम उस समय सुर्खियों में आया, जब उन्होंने आईटीडीसी में अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक का पद संभाला और मुंबई के होटल सेंटूर होटल या फिर कोई अन्य होटल, सभी को घाटे से उबार कर फायदे में पहुंचाया। हालांकि बाद में सरकार ने इसमें विनिवेश कर इसे निजी क्षेत्र को बेच दिया गया।

दो मंत्रालयों से राष्ट्रीय पुरस्कार

लोहानी को रेलवे मंत्रालय से दो और पर्यटन मंत्रालय से दो-दो राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। इसके अलावा कई संस्थाओं की ओर से उन्हें नवाजा जा चुका है। उन्हें टूरिज्म पर आधारित पुस्तक लिखने का श्रेय जाता है। अश्विनी लोहानी का रेलवे से पुराना जुडाव रहा, वो एक तेज तर्रार ईमानदार और आगे की सोच रखने वाले व्यक्ति माने जाते हैं, वो जिन भी पदों पर रहे है, वहां उन्होने अपनी छाप छोडी है। मध्य प्रदेश पर्यटन बोर्ड के मुखिया का पद हो, या फिर एयर इंडिया के चेयरमैन की जिम्मेदारी, अश्विनी लोहानी ने शानदार काम करके दिखाया है। एयर इंडिया के विमान के पायलट कोई भी एनाउंसमेंट करने के दौरान 'जय हिंद' बोलेंगे। लोहानी ने ही यह विचार आगे बढ़ाया।

उर्वशी रौतेला

अभिनेत्री एवं मॉडल

भले ही आप कितने भी छोटे शहर से हों, आपके सपने बड़े होने चाहिए और उन सपनों को पूरा करने का जुनून होना चाहिए। अभिनेत्री, मॉडल उर्वशी रौतेला ने इस बात को साबित कर दिखाया है। उत्तराखंड के कोटद्वार से निकलकर सिनेमा के रुपहले पर्दे तक का उर्वशी का सफर उन तमाम लड़कियों के लिए एक प्रेरणा है, जो सफलता के फलक पर अपना नाम लिखना चाहती हैं। बॉलीवुड अभिनेत्री उर्वशी रौतेला ने बहुत कम समय में लाखों लोगों को अपना प्रशंसक बनाया है। उर्वशी की पहचान एक अभिनेत्री और मॉडल के रूप में है। उर्वशी के नाम सबसे ज्यादा ब्यूटी पीजेंट्स खिताब जीतने का रिकॉर्ड है। वह एक बार ही नहीं बल्कि दो-दो बार मिस यूनिवर्स इंडिया का खिताब अपनी झोली में डाल चुकी हैं। इस कारण वह दो बार मिस यूनिवर्स प्रतियोगिता में भारत की ओर से शामिल हुईं। उर्वशी ने वर्ष 2015 में मुंबई में आयोजित मिस दिवा-2015 का खिताब जीतकर मिस यूनिवर्स में एंट्री पाई थी। उन्होंने लास वेगास में 19 दिसंबर 2015 को मिस यूनिवर्स कांटेस्ट-2015 में भारत का प्रतिनिधित्व किया। इससे पहले उन्होंने 2012 में भी इस कांटेस्ट में हिस्सा लिया था, लेकिन तब उम्र 23 दिन कम होने के कारण निराशा उनके हाथ लगी थी।

उर्वशी संभवतः एकमात्र ऐसी अभिनेत्री हैं, जिन्होंने बॉलीवुड में आने के बाद फिर ब्यूटो कांटेस्ट में हिस्सा लिया। उर्वशी ने 2012 में मिस यूनिवर्स कांटेस्ट से मायूस होने के बाद फिल्मों का रुख किया। साल 2013 में वह अभिनेता सनी देओल के साथ 'सिंह साब दी ग्रेट' में नजर आईं। इसके बाद उन्होंने 2015 में फिर ब्यूटी कांटेस्ट में हिस्सा लिया और भारत का प्रतिनिधित्व किया। उर्वशी का जन्म 25 फरवरी 1994 को उत्तराखंड के हरिद्वार में हुआ। इसके बाद मां मीरा रौतेला और पिता मनवर रौतेला के साथ उनका परिवार पौड़ी गढ़वाल के कोटद्वार शहर में आकर बस गया। उर्वशी की प्राथमिक शिक्षा ब्लूमिंग वेल पब्लिक स्कूल कोटद्वार से हुई। बचपन में पढ़ाई में अव्वल रहीं उर्वशी इंजीनियर बनना चाहती थीं। उन्होंने 15 साल की उम्र से ब्यूटी पीजेंट में हिस्सा लेना शुरू कर दिया था। ■

लॉकडाउन में 1.8 करोड़ लोगों से जुड़ीं

लॉकडाउन के दौरान ने बॉलीवुड का एक अलग चेहरा देखा। बड़ी संख्या में बॉलीवुड के कलाकारों ने पीएम केयर्स फंड में भी दान दिया। उर्वशी ने एक नायाब तरीका निकाला। उर्वशी ने कोरोना वॉरियर्स की मदद करने के लिए इंस्टाग्राम पर ऑनलाइन डांस क्लास की। इसका सेशन उन सभी के लिए फ्री था, जो अपना वजन कम करना और डांस सीखना चाहते हैं। इस दौरान उन्होंने जुम्बा, तबता और लैटिन डांस सिखाया। टिकटॉक पर इस डांस मास्टरक्लास ने उन्हें 1 करोड़ 80 लाख लोगों के साथ जोड़ा। इससे उर्वशी को 5 करोड़ रुपये मिले, जिसे उन्होंने कोरोना वायरस के खिलाफ जंग में डोनेट कर दिया।

सोशल मीडिया और फैशन क्वीन

उर्वशी सोशल मीडिया पर काफी सक्रिय हैं। इंस्टाग्राम पर उर्वशी के 33 मिलियन फॉलोअर्स हैं। वहीं ट्विटर पर उन्हें 6.62 लाख लोग फॉलो करते हैं। उर्वशी एक फैशन दिवा भी हैं, उनके ड्रेसेस सोशल मीडिया पर सुर्खियां बटोरते रहे हैं। उर्वशी एक फैशन आइकन भी हैं। हाल ही में अरब फैशन वीक में शो स्टॉपर बनने वाली पहली भारतीय महिला बनीं। उन्होंने इस शो में अपनी आंखों पर 24 कैरेट के असली सोने का आई शैडो लगा हुआ था। अरब फैशन वीक के दौरान ही उर्वशी रौतेला स्टारर फर्न अमेटो की एक शॉर्ट फिल्म भी रिलीज हुई, जिसमें उन्होंने 'इजिप्ट की रानी क्लियोपेट्रा' का किरदार अदा किया। इस फिल्म के लिए उन्होंने ऐसा आउटफिट पहना था, जिसकी कीमत 37 करोड़ रुपये थी।

ऋषभ पंत

क्रिकेटर, टीम इंडिया

उत्तराखंड का यह सपूत किसी परिचय का मोहताज नहीं है। आईपीएल 2020 के फाइनल में पहुंची दिल्ली कैपिटल्स को हार का सामना करना पड़ा, पर उसके धुरंधर बल्लेबाज ऋषभ पंत ने शानदार पारी खेली। 38 गेंदों पर 56 रन बनाकर उन्होंने खेल प्रशंसकों की खूब वाहवाही बटोरी। 4 चौके और 2 धांसू छक्के लगा सोशल मीडिया पर पंत छा गए। कुछ ऐसा ही है पहाड़ के इस लड़के का जलवा। उनका बल्ला जब बोलता है तो तालियों की गूंज सुनाई देती है और जब किसी कारण से मैच से बाहर होते हैं तो देशभर में 'क्यों और कैसे' पर बहस छिड़ जाती है। इस विकेटकीपर, बल्लेबाज ने बेहद कम समय में क्रिकेट की दुनिया में ऐसी पहचान गढ़ी है कि उन्हें महेंद्र सिंह धोनी का उत्तराधिकारी माना जाने लगा। बाएं हाथ के बल्लेबाज और विकेटकीपर पंत का जन्म उत्तराखंड के रुड़की में 4 अक्टूबर 1997 को हरिद्वार में हुआ था। पिता राजेन्द्र पंत का सपना था कि बेटा देश के लिए क्रिकेट खेले और इसके लिए उन्होंने पूरा जोर लगा दिया। बेटे को बेहतर क्रिकेट सुविधा देने के लिए वे रुड़की आए पर किसी ने कहा कि दिल्ली से बेहतर आसपास कुछ नहीं। ऋषभ रात 2 बजे की बस पकड़ कर कभी-कभी दिल्ली आते थे ताकि वह 8 बजे के अभ्यास सत्र के लिए राजधानी पहुंच सकें। इसके बाद पंत राजस्थान गए और वहां अंडर-14 और अंडर-16 क्रिकेट खेलने में कामयाब हुए, लेकिन एक बाहरी होने के कारण उन्हें अकादमी से बाहर कर दिया गया। ऋषभ फिर दिल्ली आए जहां कामयाब होने की भूख उनमें और तेज हो गई थी। वह भारत के लिए 2016 में अंडर-19 विश्व कप के लिए चुने गए। नेपाल के खिलाफ उन्होंने 18 गेंदों पर अर्धशतक ठोका जो अभी भी अंडर-19 क्रिकेट का सबसे तेज अर्धशतक है। अगस्त 2018 में उन्हें इंग्लैंड के खिलाफ ही टेस्ट कैप पहनने का मौका मिला वहीं अक्टूबर 2018 में वह वेस्टइंडीज के खिलाफ भारत की वनडे टीम का हिस्सा बने। आईपीएल में वह दिल्ली कैपिटल्स के लिए खेलते हैं। फिलहाल वह बीसीसीआई के सेंट्रल कांट्रैक्ट वाले खिलाड़ी हैं। ■

उत्तराखंडी, राजस्थानी पकवान हैं पसंद

ऋषभ पंत का जन्म 1997 में हरिद्वार में हुआ, पर उनका पैतृक घर पिथौरागढ़ जिले के गंगोलीहाट तहसील के पाली गांव में है। उत्तराखंडी पकवान के साथ उन्हें राजस्थानी व्यंजन भी पसंद हैं। पंत अपनी सफलता का श्रेय माता-पिता को देते हैं। एक समय दिल्ली आने पर वह मोती बाग स्थित एक गुरुद्वारे में रहते थे क्योंकि उस समय शहर में रहने का कोई दूसरा ठिकाना नहीं था। पिता ने बेटे को क्रिकेट में आगे बढ़ाने के लिए काफी मेहनत की। जहां जितना हो सका उन्होंने अपनी तरफ से प्रयास किया। उत्तराखंड से दिल्ली, राजस्थान और फिर दिल्ली पंत का परिवार ही था जो हमेशा उनके साथ खड़ा रहा।

सिडनी में पंत की वो विस्फोटक पारी!

2019 की शुरुआत में सिडनी टेस्ट में ऋषभ पंत की धमाकेदार पारी आज भी लोगों को याद है। तब 21 साल के पंत ने 137 गेंदों में 8 चौकों की मदद से अपने टेस्ट करियर का दूसरा शतक लगाया था। बाएं हाथ के इस बल्लेबाज ने रिकॉर्ड्स की झड़ी लगा दी थी। ऋषभ फिलहाल 12 टेस्ट मैच खेलकर 814 रन बना चुके हैं। वनडे में 16 मैच में उनके 374 रन हैं। टी20-ककी बात करें तो उन्होंने 28 मैच खेलकर 410 रन बनाए हैं और 65 उनका सर्वोच्च स्कोर है। 36 फर्स्ट क्लास मैच से उनके 2558 रन हैं और 308 उनका बेहतरीन स्कोर है।

दीपक डोबरियाल

फिल्म अभिनेता

बड़े परदे पर रोल लंबा हो या एक दो सीन का, दीपक डोबरियाल ने हमेशा अपनी अदाकारी से उस भूमिका में जान ला दी है। 'ओमकारा' से लेकर 'हिंदी मीडियम' 'लाल कप्तान' हो या कोई और फिल्म दीपक के निभाए किरदार लोगों के जेहन में बस गए। 'तनु वेड्स मनु' सीरीज में 'पप्पी जी' का किरदार निभाकर दीपक डोबरियाल हर घर तक पहुंच चुके हैं। थियेटर बैकग्राउंड से आए उत्तराखंड के इस सपूत ने शौर्य, गुलाल, दबंग समेत न जाने कितनी फिल्मों में अपनी दमदार एक्टिंग का लोहा मनवाया है। वह हर तरह के किरदार के साथ न्याय करने वाले अभिनेता हैं। यही वजह है कि अब तक के फिल्मी करियर में दीपक को अलग-अलग भूमिकाओं में देखा गया है, सराहा गया है।

हालांकि दीपक को इस बात का मलाल है कि उन्हें कभी फिल्मों के पोस्टर में जगह नहीं मिली। वह सोशल मीडिया पर अपना दर्द भी साझा कर चुके हैं। दीपक ने ओमकारा, गुलाल, तनु वेड्स मनु रिटर्न्स, हिंदी मीडियम और शौर्य फिल्मों के पोस्टर अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर साझा किए। 'ओमकारा' के लिए दीपक ने लिखा, 'पोस्टर में नहीं था, पर मैं भी था इस फिल्म में। किसी को नजर आया?' अनुराग कश्यप की पॉलिटिकल ड्रामा 'गुलाल' के पोस्टर के साथ उन्होंने लिखा, 'इस फिल्म में भी था मैं। पर फिल्म का नाम भूल गया। इसमें भी कुछ किया था मैंने। किसी को याद है? क्या फिल्म थी और क्या काम था मेरा?' हैरत की बात तो यह है कि अभिनेता आर माधवन और कंगना रनौत की सुपरहिट फिल्में 'तनु वेड्स मनु' और 'तनु वेड्स मनु रिटर्न्स' दोनों में ही दीपक ने पप्पी का किरदार निभाया है। उनके अभिनय की दर्शकों और समीक्षकों ने खूब तारीफ की। दीपक ने लिखा, 'इसमें भी था (फिल्म में)।' तनु वेड्स मनु के लिए आईफा और स्टार स्क्रीन अवार्ड्स से सम्मानित किया जा चुका है। दीपक की सफलता की सीढ़ियां चढ़ते जा रहे हैं। फिल्म तनु वेड्स मनु में उनके द्वारा निभाई गई पप्पी की भूमिका लोगों को खूब पसंद आई और वह लोगों के दिलों में जगह बनाने में कामयाब रहे। ■

हर किरदार लोगों के जेहन में बसा

दीपक कॉमेडियन नहीं बल्कि एक संजीदा अदाकार हैं। हाल के वर्षों में दीपक ने कई चर्चित रोल किए चाहे वह दंबग-2 में गैंदा का किरदार ही क्यों न हो। दीपक ऐसे परिवार से आए जिसका दूर-दूर तक कोई इस फील्ड में नहीं था। बस एक्टिंग की धुन लगी तो थियेटर करते रहे। विशाल भारद्वाज के साथ मकबूल में छोटा सा रोल करने के साथ शुरुआत हुई। इस दौरान पंकज कपूर की नजर दीपक पर पड़ी। उन्होंने खुद विशाल से कहा कि ये लड़का एक्टिंग के लिए बना है, बॉडीगार्ड के रोल के लिए नहीं। इसके बाद ओमकारा में विशाल ने रोल दिया, जो करियर का टर्निंग प्वाइंट साबित हुआ।

1994 में थिएटर से की शुरुआत

दीपक डोबरियाल का जन्म 1 सितंबर 1975 को उत्तराखंड के पौड़ी गढ़वाल में रिखणीखाल के कबरा गांव में हुआ। जब वह महज पांच वर्ष के थे, उनका परिवार पौड़ी गढ़वाल से दिल्ली आ गया। उनके पिताजी की जॉब दिल्ली में थी। दीपक ने अपनी शुरुआती पढ़ाई दिल्ली के गवर्मेंट सीनियर सेकंडरी स्कूल से की। उन्होंने अपने एक्टिंग करियर की शुरुआत 1994 में थिएटर से की। उन्होंने अपने हिंदी सिनेमा करियर की शुरुआत साल 2003 में आई फिल्म मकबूल से की थी। आगे चलकर उन्हें चर्चित फिल्म ओमकारा से पहचान मिली। उन्हें इस फिल्म में अपने अभिनय के लिए फिल्म फेयर अवॉर्ड से भी सम्मनित किया गया।

राघव जुयाल

अभिनेता, कोरियोग्राफर

फिल्म जगत में राघव जुयाल अब एक जाना पहचाना नाम हैं। एक डांसर, प्रजेंटर और अभिनेता के तौर पर उन्होंने बहुते तेजी से सफलता की सीढ़ियां चढ़ीं। अपने अनोखी डांस स्टाइल, चपल स्टेज एंकरिंग से राघव ने रियलिटी शो की दुनिया में अलग मुकाम बनाया है। कभी क्रोकोडाइल और कॉकरोच से प्रभावित क्रोकरोज नाम की डांस स्टाइल को लोकप्रिय बनाकर राघव एक यूथ आइकन बने थे, आज वह एक बेहतरीन एंकर बनकर उभरे हैं। अब वह कई डांस शो को होस्ट कर चुके हैं। डांस के साथ-साथ कॉमेडी पर भी राघव की जबरदस्त पकड़ है। यही नहीं वह तेजी से फिल्मों में भी अपनी पहचान बनाते जा रहे हैं।

राघव ने सफलता की सीढ़ियां जीटीवी के बहुचर्चित रियलिटी शो डांस इंडिया डांस के तीसरे सीजन से चढ़नी शुरू की। साल 2012 सीजन में वह दूसरे रनरअप रहे। उनकी लोकप्रियता इस कदर थी कि शो से बाहर होने के बाद वह राघव ने इस शो में पब्लिक वोटिंग से वाइल्ड कार्ड एंट्री ली। इसके बाद उन्होंने डीआईडी लिटिल मास्टर्स और डांस के सुपरकिड्स जैसे डांस शो में कोरियाग्राफर स्किपर की भूमिका निभाई। इस दौरान उनकी टीम ने डांस के सुपरकिड्स का खिताब जीता। राघव ने डांस की विधिवत कोचिंग नहीं ली है। इंटरनेट और टीवी की मदद से डांस सीखा है। उन्होंने खुद से ही स्लोमोशन डांस का पॉवर के साथ फ्यूजन कर एक नई विधा क्रोकरोज ईजाद की। उनके स्लोमोशन डांस को भारत के कई नामीगिरामी कोरियोग्राफरों द्वारा सराहा गया है। राघव इस समय मुंबई में रहते हैं। 10 जुलाई 1991 को जन्मे राघव देहरादून के रहने वाले हैं। उनके पिता दीपक जुयाल वकील हैं। वहीं मां अलका जुयाल हाउस वाइफ हैं। मूल रूप से राघव पौड़ी गढ़वाल के खेतू से संबंध रखते हैं। राघव ने अपनी शुरुआती शिक्षा दून इंटरनेशनल स्कूल से ली और बाद में डीएवी पीजी कालेज देहरादून से बीकॉम किया। राघव खांटी पहाड़ी हैं, तभी तो वह जब उन्हें उत्तराखंड का कोई टैलेंट मायानगरी में मिल जाता है, उसका हौसला बढ़ाते हैं। ■

फिल्मों और म्यूजिक वीडियो में काम

राघव को मायानगरी मुंबई खूब रास आई है। भले ही वह एक डांसर के तौर पर अपना भविष्य बनाने मुंबई पहुंचे थे लेकिन कुछ ही समय में वह पहले स्टेज एंकर और फिर फिल्मों में नजर आने लगे। राघव सबसे पहले साल 2014 में रिलीज हुई फिल्म सोनाली केबल में नजर आए थे। इसके बाद साल 2015 में एबीसीडी-2 दिखे। इसके बाद साल 2018 में उनकी फिल्म नवाबजादे आई। साल 2020 फिल्मों और म्यूजिक वीडियो के लिहाज से खास रहा। पहले वह स्ट्रीट डांसर 3डी में दिखे और फिर बहुत हुआ सम्मान में काम किया। उन्होंने श्रुति और प्रकृति कक्कड़ की एल्बम के गीत हम-तुम में भी काम किया।

...तो ऋषिकेश में गाइड होते

राघव की कामयाबी का सबसे चमकदार पहलू यह है कि उन्होंने इसे अपने सिर पर नहीं चढ़ने दिया। वह आज भी अपनी जड़ों से जुड़े हुए हैं। उन्हें जब भी समय मिलता है, देहरादून चले आते हैं। राघव कहते हैं ऋषिकेश मेरे दिल के सबसे ज्यादा करीब है। अगर मैं फिल्म इंडस्ट्री में नहीं गया होता तो निश्चित तौर पर ऋषिकेश में गाइड का काम कर रहा होता। बचपन में पापा चाहते थे कि मैं फौजी बनूं या फिर डॉक्टर, पर मैंने अपने लिए कुछ और सोच रखा था। शुरुआत में थोड़ी मुश्किल हुई, लेकिन अब सब ठीक है। मुंबई में अब मेरे कई दोस्त हैं, लेकिन ज्यादातर दोस्त पहाड़ में ही रहते हैं। इसलिए जब भी मौका मिलता है मैं यहां लौट आता हूं।

जुबिन नौटियाल

बॉलीवुड गायक

बहुत कम समय में एक बेहतरीन प्लेबैक सिंगर के रूप में जुबिन नौटियाल ने बड़ा मुकाम हासिल किया है। बचपन से ही संगीत के प्रति लगाव होने के कारण उन्होंने अपनी पढ़ाई के दौरान संगीत को एक विषय के रूप में चुना। हिंदी फिल्म बजरंगी भाईजान में गाए गीत 'जिंदगी कुछ तो बता ने' उन्हें वह शोहरत दी है, जो कई वर्षों की तपस्या के बाद भी नहीं मिलती। उन्हें अब तक अनेक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। वह यूट्यूब पर सबसे पसंद किए जाने वाले गायकों में से एक हैं। खास बात यह है कि जुबिन सिर्फ बॉलीवुड की चमक-धमक तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि वह अपनी मातृबोली जौनसारी के गीतों को भी सामने लाने के प्रयास में लगे हुए हैं। मूल रूप से जौनसारी ब्राह्मण परिवार के जुबिन नौटियाल का जन्म 14 जून 1989 को देहरादून में हुआ। उनके पिता राम शरण नौटियाल व्यवसायी और राजनीतिज्ञ हैं। जुबिन ने अपनी 8वीं कक्षा तक की पढ़ाई देहरादून में सेंट जोसेफ एकेडमी से की और उसके बाद वेलहम ब्वाइज स्कूल में चले गए। यहां उन्होंने संगीत को विषय के रूप में चुना और गायन एवं वादन की बारीकियां सीखी। उन्होंने कई वाद्ययंत्र भी सीखे। स्कूली शिक्षा के बाद वे मुंबई चले गए और नीताभाई कॉलेज में प्रवेश लिया। इस दौरान संगीतकार एआर रहमान से जुबिन की मुलाकात हुई और उन्होंने जुबिन को गायन के दिशा में लगातार आगे बढ़ने की सलाह दी।

जुबिन ने साल 2011 में एक म्यूजिकल रियलिटी शो एक्स-फैक्टर में भाग लिया और शीर्ष 25 प्रतिभागियों में चुने गए। इंडियन म्यूजिक इंडस्ट्री में अपना पहला गीत साल 2014 में फिल्म 'सोनाली केबल' के लिए 'एक मुलाकात' गाया, गाना हिट रहा और जुबिन बॉलीवुड की लीग में शामिल हो गए। साल 2015 में उन्होंने बजरंगी भाईजान के लिए 'ज़िंदगी', जज्बा के लिए 'बंदेया', बरखा के लिए 'तू इतनी खूबसूरत है रीलोडेड' और 'किस किसको प्यार करूं' के लिए गाया। 2017 में वह ऋतिक रोशन स्टारर फिल्म काबिल के मुख्य गायक थे, जिसमें राजेश रोशन का संगीत था। ■

अपनी संस्कृति को बॉलीवुड से जोड़ रहे

अपनी सुरीली आवाज से दुनियाभर में छाये जुबिन नौटियाल उत्तराखंड की लोक संस्कृति को बॉलीवुड में स्थापित कर नई पहचान देना चाहते हैं। जुबिन कहते हैं, कल्चर हमें अपनों से, मिट्टी से जोड़ता है। मैं उत्तराखंड के संगीत में वो क्रांति लाना चाहता हूं। कोशिश करूंगा कि हमारे जौनसारी, गढ़वाली, कुमाऊंनी, जौनपुरी गीत भी बॉलीवुड फिल्मों में सुनाई दें। संगीतकार होने के नाते मेरी जिम्मेदारी है कि अपने गांवों की मिट्टी की खुशबू लोगों तक पहुंचाऊं। हाल ही में उन्होंने टी-सीरीज के लिए उत्तराखंडी फोक मैशअप गाया। बहुआयामी प्रतिभा के धनी जुबिन आठ वाद्य यंत्र बजा सकते हैं।

रहमान से मुलाकात ने बदली जिंदगी

आज भले ही जुबिन नौटियाल हॉलीवुड में गाने रिकॉर्ड करने के करीब पहुंच गए हों लेकिन वो अपनी सफलता में दिग्गज संगीतकार एआर रहमान को श्रेय देना नहीं भूलते। वह बताते हैं कि साल '2012-13 में देहरादून से मुंबई पहुंचा। म्यूजिक कंपोजर एआर रहमान से मिला। मैं नर्वस था, छोटा था... गिटार उठाया और गाया। जैसे ही गाना शुरू किया तो उन्होंने कहा- एक स्ट्रिंग अनट्यून है, उसे सुधारो। यह सुनते ही पूरा कॉन्फिडेंस लूज हो गया। लेकिन यह एक म्यूजिकल साइंटिस्ट की सलाह थी। उसी को पकड़कर चला तो मेरी मौलिकता बची रही। यह वाकया मेरी जिंदगी की किताब में हमेशा दर्ज रहेगा।' गिटार जुबिन के दिल के बेहद करीब है।

डा. मनमोहन सिंह चौहान

निदेशक, राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान

भारत के शीर्ष पशु विज्ञानियों का जब भी जिक्र होता है, डा. मनमोहन सिंह का नाम जरूर लिया जाता है। वह देश में जानवरों की क्लोनिंग के क्षेत्र में एक बड़ा हस्ताक्षर हैं। डा. चौहान राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल में निदेशक हैं। गाय, भैंस, याक एवं बकरी से जुड़े अनुसंधान के क्षेत्र में डा. चौहान को काफी ख्याति मिली है। उन्होंने अनुसंधान के 32 वर्षों में पशुधन कार्यकुशलता के लिए अनेक क्षमतावान जनन जैव प्रौद्योगिकी विकसित की हैं। डा. चौहान ने गाय, भैंस, बकरी एवं याक में टेस्ट ट्यूब बेबी की तकनीकी के (इनविट्रो भ्रूण) महत्वपूर्ण एवं आसान तरीके विकसित किए हैं। डा. चौहान के नाम विश्व में सबसे पहले भैंस की कटिया का क्लोन 'गरिमा 2' तैयार करने का रिकॉर्ड है। उन्होंने एम्ब्रयोनिक स्टेम सेल से यह उपलब्धि हासिल की। उन्होंने भैंस के कान के टुकड़े से 14 भैंस तैयार की। उनके नाम भारत में पहला ओपीयू-आईवीएफ साहीवाल बछड़ा तैयार करने का भी रिकॉर्ड है। डा. चौहान को भारतीय कृषि के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त शोध पुरस्कार जैसे रफी अहमद किदवई अवार्ड, डीबीटी ओवरसीज लांग टर्म एसोसिएटशिप अवार्ड, आईसीएआर टीम अवार्ड, डा. लभतेसर आईएसएसआरएफ अवार्ड, सर्टिफिकेट आफ मेरिट अवार्ड फार एक्सेम्पलरी रिसर्च, वर्जीनिया पॉलीटेक्निक इंस्टीटयूट एवं स्टेट यूनीर्विसिटी, अमेरिका समेत कई सम्मान मिल चुके हैं।

डा. चौहान ने अब तक 125 शोध पत्र, 2 पुस्तकें लिखी हैं। उनके 90 वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रकाशन भी प्रकाशित हुए हैं। उत्तराखंड का मूल निवासी होने के कारण डा. चौहान का यहां के गरीब किसानों के उत्थान के लिए विशेष ध्यान रहता है। उनके निर्देशन में उत्तराखंड में बकरी पालन के क्षेत्र में नई तकनीकों के प्रयोग के लिए कई कैंप लगाए जा चुके हैं। एनडीआरआई की जिम्मेदारी दिए जाने से पहले वह आईसीएआर - केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान के निदेशक रहे। एनडीआरआई के निदेशक बनने से पहले उन्होंने इस संस्थान में बतौर प्रधान वैज्ञानिक (पशु जैव प्रौद्योगिकी) के तौर पर सेवाएं दीं। ■

बेस्ट एग्रीकल्चर इंस्टीट्यूट

डा. मनमोहन सिंह चौहान जिस राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान की अगुवाई कर रहे हैं, उसे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने देश का सर्वश्रेष्ठ कृषि संस्थान आंका है। साल 2020 में इस प्रतिष्ठित संस्थान की बागडोर संभालने वाले डा. चौहान पहले एनडीआरआई में निदेशक बनने से पहले यहां प्रधान वैज्ञानिक (पशु जैव प्रौद्योगिकी) रहे। खास बात यह है कि एनडीआरआई ने पंजाब एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी, लुधियाना, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, इंडियन वेटनरी रिसर्च इंस्टीट्यूट, ईटानगर और जीबी पंत कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय को पीछे छोड़ते हुए यह उपलब्धि हासिल की है।

पौड़ी के यमकेश्वर के जामल से नाता

डॉ. मनमोहन सिंह चौहान का जन्म 5 जनवरी, 1960 को पौड़ी गढ़वाल के यमकेश्वर के जामल गांव में हुआ। जयहरीखाल से हाईस्कूल, इंटरमीडिएट और बीएससी करने के बाद डा. चौहान ने 1981 में श्रीनगर, गढ़वाल से एमएससी की। पंजाब कृषि यूनिवर्सिटी जाकर पीएचडी का थीसिस लिखा। मनमोहन सिंह चौहान को 1986 में पीएचडी की डिग्री मिली। परिवार में माता पिता, पत्नी, एक बेटा और एक बेटी है। पहाड़ में डेयरी की संभावनाओं को लेकर डा. चौहान मुखर आवाज रहे हैं। उनका स्पष्ट मत है कि उत्तराखंड के पहाड़ी जिलों में फसल आधारित कृषि की अपनी सीमाएं एवं बाध्यताएं हैं। ऐसे में इन इलाकों में आजीविका के लिए डेयरी उद्योग एक बेहतर विकल्प है।

प्रो. अशोक प्रियदर्शन डिमरी

पर्यावरण विज्ञानी, जेएनयू

उत्तराखंड में सतत विकास की वकालत करने वाले जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ इनवॉयरमेंटल साइंसेज में प्रोफेसर अशोक प्रियदर्शन डिमरी के नाम से वो लोग अच्छी तरह परिचित हैं, जिनका सरोकार जलवायु परिवर्तन से संबंधित मुद्दों से है। डिमरी के इस विषय पर कई पेपर अंतरराष्ट्रीय जर्नल्स में प्रकाशित हो चुके हैं। डिमरी ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से 1989 में बीएससी (फिजिक्स) से की। इसके बाद उन्होंने बीएचयू से ही 1992 में एमएससी जियोफिजिक्स (मौसमविज्ञान) की शिक्षा हासिल की। 1994 में उन्होंने जेएनयू से इनवॉयरमेंटल साइंसेज में एमफिल किया। डिमरी ने आईआईटी दिल्ली से अपनी पीएचडी एटमोस्फेरिक साइंसेज में की है। वह अप्रैल 1994 से 2008 के बीच रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) में स्नो एंड एवलांच साइंटिस्ट रहे।

डिमरी वर्ष 2009 से दून यूनिवर्सिटी, देहरादून में विजिटिंग फैकल्टी हैं। वह जापान के नगोया स्थित हाइड्रोसफेरिक एटमॉसफेरिक रिसर्च सेंटर में में सितंबर 2010 से अगस्त 2012 तक अनुसंधानकर्ता रहे हैं। इससे पहले वह ब्रिटेन के नोरविक में यूनिवर्सिटी ऑफ ईस्ट एंगलिया की क्लाइमेट रिसर्च यूनिट में एसोसिएट फेलो रहे हैं। उत्तराखंड के डिमरी के अनुसंधान के विषय जलवायु परिवर्तन पर केंद्रित रहे हैं। उनके शोध के विषयों में क्षेत्रीय जलवायु गतिशीलता, बदलाव एवं परिवर्तनशीलता, जलवायु एवं जलवायु परिवर्तन का विज्ञान, भारत का शीतकालीन मानसून एवं पश्चिमी विक्षोभ। उन्होंने पहाड़ों पर अलग-अलग जगहों के तापमान का अध्ययन करने के लिए एक नई विधि सामने रखी है। उनके कई रिसर्च पेपर प्रकाशित हो चुके हैं, उनके काम को व्यापक और राष्ट्रीय सराहना मिली है।

डिमरी को वर्ष 2014-15 के लिए कॉमनवेल्थ स्कॉलरशिप आयोग की ओर से मिलने वाली कॉमनवेल्थ एकेडमिक फेलोशिप मिल चुका है। वह ग्लोबल टेक्नोलॉजी वॉच ग्रुप के सदस्य हैं। डिमरी इंडियन जियोफिजिकल यूनियन के 2014-16 के बीच चुनवे हुए काउंसिल मेंबर रह चुके हैं। 2006 में उन्हें डीआरडीओ की ओर से टेक्नोलॉजी अवार्ड प्रदान किया गया। इसके अलावा रक्षा मंत्रालय की ओर से सियाचिन मेडल भी दिया जा चुका है। ■

2% जलवायु विज्ञानियों में शुमार

प्रोफेसर डिमरी को जलवायु परिवर्तन, भारत के विंटर मॉनसून, विंटर एक्स्ट्रा-ट्रॉपिकल साइक्लोन और पश्चिमी विक्षोभ, हिमालयी स्थलाकृति जैसे गूढ़ विषयों में महारत हासिल है। दुनिया के प्रसिद्ध स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय ने हाल ही में भारत के शीर्ष 2% जलवायु वैज्ञानिकों की एक सूची प्रकाशित की है, जिसमें प्रोफेसर एपी डिमरी का भी नाम है। उन्हें इस सूची में तीसरा स्थान दिया गया है। इसके जरिये साल 2019 के लिए क्लाइमेट साइंसेज के टॉप विशेषज्ञों के उल्लेखनीय योगदान को स्वीकार किया गया है। यह सूची प्रमाणित उद्धरण संकेतों पर आधारित है।

बताई बादल फटने की सही परिभाषा

चमोली के कर्णप्रयाग के डिम्मर से ताल्लुक रखने वाले प्रोफेसर डिमरी उत्तराखंड के युवाओं के लिए आदर्श हैं। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गोपेश्वर, पिथौरागढ़, उत्तरकाशी से की है। आगे की पढ़ाई बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी, जेएनयू और आईआईटी दिल्ली से की। उन्हें नागोया यूनिवर्सिटी जापान से फेलोशिप भी मिल चुकी है। उनके परिवार में पत्नी के अलावा एक बेटी और एक बेटा है। प्रोफेसर डिमरी ने भारतीय विंटर मॉनसून के संदर्भ में सर्दियों की बारिश पर अपनी विशेषज्ञता को साबित किया है। हिमालयी क्षेत्रों में बादल फटने की घटना का उन्होंने गहराई से विश्लेषण किया है। इसके माध्यम से उन्होंने दुनिया को क्लाउडबर्स्ट की सही परिभाषा भी उपलब्ध कराई है।

विनोद कुमार गौड़

सीएमडी, राष्ट्रीय बीज निगम

किसानों के लिए खेती-बाड़ी में बीजों की एक मुख्य भूमिका है। बाजार में कई कंपनियां बीज उत्पादन के लिए जानी जाती हैं, लेकिन राष्ट्रीय बीज निगम लिमिटेड (एनएससी) ने अपनी एक अलग पहचान बना रखी है। यह कंपनी किसान कल्याण मंत्रालय भारत सरकार के स्वामित्व वाली एक ऐसी संस्था है, जो किसानों के लिए बीजों के उत्पादन और विपणन के लिए काम करती है। पहाड़ के बेटे विनोद कुमार गौड़ इसी राष्ट्रीय बीज निगम के चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक (सीएमडी) हैं। 25 सितंबर 1961 को पौड़ी गढ़वाल जिले के नैनीडांडा ब्लॉक स्थित बवानी गांव में जन्मे विनोद कुमार गौड़ ने शुरूआती पढ़ाई प्राइमरी स्कूल बारखेत और हल्दूखाल से पूरी की। 1978 में विनोद कुमार ने पंतनगर में बीएससी (कृषि एवं पशुपालन) में प्रवेश लिया। 1982 में उन्होंने 87 प्रतिशत अंकों के परीक्षा पास की। 1984 में उन्होंने एमएससी (कृषि विज्ञान) की डिग्री हासिल की। इसके बाद उनका चयन राष्ट्रीय उवर्रक लिमिटेड में बतौर मैनेजमेंट ट्रेनी हुआ। यहां उन्होंने 2006 तक काम किया और सीनियर मैनेजर के पद तक पहुंचे। इसके बाद ब्रह्मपुत्र फर्टिलाइजर कॉरपोरेशन में उन्होंने बतौर डिप्टी जनरल मैनेजर (मार्केटिंग) और जनरल मैनेजर (मार्केटिंग) काम किया। अक्टूबर 2010 में उन्होंने स्टेट फार्म्स कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड में बतौर चेयरमैन-कम-मैनेजिंग डायरेक्टर ज्वाइन किया और कंपनी में व्यापक बदलाव किए। एचआर, प्रोडक्शन, मार्केटिंग सभी क्षेत्रों में हुए परिवर्तन के बाद कंपनी ने भारत सरकार को डिविडेंड देना शुरू किया और सार्वजिनक उद्यम विभाग, भारत सरकार की ओर से एक्सीलेंट रेटिंग मिली।

जून 2013 में उन्होंने एनएससी में बतौर चेयरमैन-कम-मैनेजिंग डायरेक्टर ज्वाइन किया। 1 अप्रैल 2014 को एसएफसीआई का नेशनल सीड्स कारपोरेशन में विलय हो गया, जिससे दोनों कारपोरेशन में संसाधन के लिहाज से भारी बचत हुई। विनोद कुमार को 2010-11 के दौरान पहली बार एसएफसीआई को एमओयू में एक्सीलेंट ग्रेड मिला। राजीव गांधी मेमोरियल नेशनल अवार्ड 2012 के तहत बेस्ट चीफ एक्जीक्यूटिव गोल्ड अवार्ड मिला। ■

लगातार लाभांश दे रही एनएससी

एनएससी ने इस साल भारत सरकार को अब तक के उच्चतम लाभांश 12.40 करोड़ रुपये का भुगतान किया है, जो पीएटी का 30 प्रतिशत है। पिछले 3 साल के दौरान भी एनएससी ने लगातार लाभांश दिया। साल 2015-16 के लिए 11.46 करोड़, साल 2016-17 के लिए 12.03 करोड़ और साल 2017-18 के लिए 7.49 करोड़ लाभांश का भुगतान किया। इसके अतिरिक्त निगम ने केंद्रीय राजकोष में 24.68 का भुगतान दिया है, जिसमें 0.55 करोड़ लाभांश कर 21.95 करोड़ आयकर और 0.18 करोड़ जीएसटी और सेवाकर शामिल है। यानी वर्ष 2018-19 के लिए 37.08 करोड़ का भुगतान किया गया।

उत्तराखंड को लेकर निरंतर सक्रिय

विनोद गौड़ उत्तराखंड को लेकर सक्रिय भी हैं और भावुक भी। उनका मानना है कि पहाड़ी क्षेत्र में कृषि का अभी व्यवसायीकरण नहीं हुआ है। वह कहते हैं कि उत्तराखंड के सिंचित क्षेत्र में जो हमारी फसलें और सब्जियां हैं, उनमें अपार संभावनाएं हैं। वह एक तरीका सुझाते हुए कहते हैं कि अगर पूरा गांव एक या दो फसलों की खेती करे तो क्लस्टर बनने से उसकी बिक्री करने में आसानी होगी और गांव की मार्केटिंग हो जाएगी। सब्जी में तो उत्तराखंड में बहुत कुछ किया जा सकता है। पहाड़ी इलाकों में ऐसे समय में सब्जी होती है जब मैदानी इलाकों में सब्जी नहीं होती है। पहाड़ी आलू अलग रेट से ही बिकता है। अगर इस तरफ ध्यान दिया जाए तो किसानों को अच्छी आमदनी हो सकती है।

डा. विजय धस्माना

वीसी, रामा स्वामी हिमालयन यूनिवर्सिटी

क्रिएटिव तरीके से कम लागत में स्वास्थ्य की देखभाल, शिक्षा और सामाजिक विकास के मॉडल को उत्तराखंड के लोगों के उत्थान के लिए लागू करने की दिशा में काम करने के लिए डॉ. विजय धस्माना प्रख्यात हैं। वह इस समय स्वामी रामा हिमालयन यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर हैं। डॉ. धस्माना ने हिमालयन इंस्टीट्यूट को 1996 में बतौर कोषाध्यक्ष ज्वाइन किया था। इस संस्थान की स्थापना गुरूदेव श्री स्वामी राम ने की थी। 1996 में डॉ. धस्माना को संस्थान की शीर्ष संस्था का सदस्य बनाया गया। 2007 से 2013 के बीच वह एचआईएचटी यूनिवर्सिटी के चांसलर रहे। इसके बाद उन्हें 2013 में स्वामी रामा हिमालय यूनिवर्सिटी का चांसलर बनाया गया। 1996 में जब गुरूदेव श्री स्वामी राम का महाप्रयाण हुआ था, तब हिमालयन हॉस्पिटल 350 बेड का था और इसका मेडिकल कॉलेज शुरू ही हुआ था। लेकिन डॉ. धस्माना ने अपने कुशल नेतृत्व से इसे यूनिवर्सिटी में तब्दील कर दिया। आज यह 1000 बेड का हास्पिटल है। यहां 250 बेड का कैंसर संस्थान है। इसके अलावा आयुर्वेद केंद्र भी है, इसका ग्रामीण विकास संस्थान पहाड़ के 1000 गांवों में शिक्षा, पानी और साफ-सफाई के क्षेत्र में काम कर रहा है। गढ़वाल क्षेत्र के 325 गांवों में पीने का साफ पानी मुहैया करा रहा है।

पौड़ी के दुधारखाल के मल्ला बादलपुर के तोली गांव में 23 अक्टूबर 1968 को जन्में डॉ. धस्माना ने अपनी शुरुआती पढ़ाई गांव से ही की। इसके बाद वह ऋषिकेश आ गए। ऋषिकेश से बीएससी और एमएससी (गणित) में करने के बाद डॉ. धस्माना ने एमएससी कम्प्यूटर साइंस से की। उन्होंने यह डिग्री यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन से की। इसके बाद डॉ. धस्माना ने गणित में पीएचडी की। डॉ. धस्माना की पत्नी डॉ. रेनु धस्माना प्रख्यात रेटीना सर्जन हैं। उनके दो बच्चे वैभवी और विदिप्त हैं। डा. धस्माना का मानना है कि कोरोना काल को हमें अवसर के रूप में लेना चाहिए। जो युवा निचले इलाकों में छोटे-मोटे काम कर रहा था, अगर हम उन्हें रोक सकें, उनकी हैंड होल्डिंग कर सकें....अगर 30 प्रतिशत यूथ भी रुकता है और हम उन्हें साधन दें तो तस्वीर बदल सकती है। कृषि, पर्यटन, हेल्थ टूरिज्म, होम स्टे जैसे तमाम क्षेत्र हैं। ■

पहाड़ के लोगों की हैंड होल्डिंग जरूरी

डा. धस्माना का मानना है कि पहाड़ की भौगोलिक परिस्थितियों को देखते हुए बड़ी कंपनियां वहां नहीं जा रही हैं। ऐसे में लोकल लेवल पर उत्पाद जरूर बनाया और अनाज उगाया जा सकता है। बागवानी, जैविक खेती, पर्यटन, विलेज टूरिज्म को बढ़ावा दिया जाए तो रोजगार की टेंशन दूर हो सकती है। जो लोग जा रहे हैं उन लोगों ने दिल्ली, मुंबई जैसे बड़े शहर देखे हैं तो गांव में रहकर वैसी सुविधाएं दें क्योंकि पहाड़ के मूल लोगों को बढ़ावा देना होगा उनकी हैंड होल्डिंग करनी होगी क्योंकि उनका बड़े शहरों का एक्सपोजर नहीं है। सरकार ने काफी अच्छी कोशिश की है लोगों को स्वरोजगार से जोड़ने की।

युवाओं के लिए चला रहे खास मुहिम

डा. धस्माना के मुताबिक, हम अपने विश्वविद्यालय की ओर से 150 युवाओं का चयन कर रहे हैं, जिन्हें हम होम स्टे का प्रशिक्षण देंगे। हमारे हिल कैंपस (सतपुली के पास) के 20-25 गांवों के लोगों को हमने कह रखा है कि आप फसल उगाइए चाहे राजमा, उड़द या कुछ और उसे खरीदने की जिम्मेदारी हमारी है। हम आपको पैसा देंगे। इससे उन्हें प्रोत्साहन मिलेगा। कैश पेमेंट जल्द होगा तो लोग मेहनत करना चाहेंगे। हम छोटी-छोटी चीजों से लोगों को प्रोत्साहित कर रहे हैं कि अगर आप अचार ही बना रहे हैं तो बनाइए हम खरीदेंगे और अपनी कैंटीनों में गढ़वाल का अचार ही परोसा जाएगा। लोगों के अंदर इससे जागृति आएगी। गांव के लोगों को गाइडेंस चाहिए।

नई शिक्षा नीति मुखर समर्थक

डा. घनशाला नई शिक्षा नीति के सबसे मुखर समर्थक माने जाते हैं। वह कहते हैं कि करीब डेढ़ शताब्दी गुजरने के बाद देश उस लबादे को उतार फेंकने वाला है जिसे लार्ड बैबिंगटन मैकाले की शिक्षा प्रणाली कहते हैं। 19वीं सदी के मध्य में भारत की समृद्ध संस्कृति व शिक्षा व्यवस्था को ध्वस्त करने और देश की नई नस्ल को रट्टू तोता बनाने की रणनीति के तहत लार्ड मैकाले ने उस शिक्षा प्रणाली की बुनियाद डाली थी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 नई उम्मीदें जगाने वाली है। इस शिक्षा नीति की एक बहुत बड़ी विशेषता इसे तैयार करने के तरीके और नीयत से भी जुड़ी हुई है।

देश के टॉप-100 में ग्राफिक एरा

ग्राफिक एरा डीम्ड यूनिवर्सिटी शिक्षा के उच्च स्तर, दुनिया की नई टेक्नोलॉजी से सुसज्जित प्रयोगशालाओं, प्लेसमेंट में शानदार कीर्तिमान, नई खोजों और विश्व स्तरीय फैकल्टी के चलते लगातार सफलता के नए कदम बढ़ा रहा है। केंद्र सरकार की एनआईआरएफ रैंकिंग में वर्ष 2020 की टॉप यूनिवर्सिटी का ऐलान किया गया है। देश में करीब 965 विश्वविद्यालय हैं, टॉप 100 की सूची में ग्राफिक एरा ने 97वां स्थान पाया है। देश के टॉप विश्वविद्यालयों की सूची में शामिल होने वाला यह उत्तराखंड राज्य का एकमात्र विश्वविद्यालय है। उत्तराखंड में कुल मिलाकर सरकारी और प्राइवेट 30 विश्वविद्यालय हैं। देश भर में इंजीनियरिंग की शिक्षा देने वाले 10,366 संस्थान हैं।

प्रो. कमल घनशाला

अध्यक्ष, ग्राफिक एरा समूह

ग्राफिक एरा समूह के अध्यक्ष डा. कमल घनशाला उत्तराखंड में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक बड़ा नाम हैं। देहरादून स्थित ग्राफिक एरा यूनिवर्सिटी को भारत की बेहतरीन डीम्ड यूनिवर्सिटियों में शुमार किया जाता है। यूजीसी के स्वायत्त संस्थान नेशनल एसेसमेंट एंड एक्रीडिएशन काउंसिल यानी एनएएसी ने वर्ष 2015 में ग्राफिक एरा को 'ए' ग्रेड का दर्जा दिया। यह उत्तराखंड और उत्तर भारत क्षेत्र के सबसे बेहतरीन शिक्षण संस्थानों में से एक है। ग्राफिक एरा की शुरूआत वर्ष 1998 में हुई। तब इंजीनियरिंग और विज्ञान के अंडर ग्रेजुएट कोर्स कराए जाते थे। वर्ष 2008 में ग्राफिक एरा को डीम्ड यूनिवर्सिटी का दर्जा मिला। उसके बाद से ग्राफिक एरा हायर एजुकेशन के क्षेत्र में उत्तराखंड में एक बड़ा नाम बना हुआ है। डा. घनशाला ने कंप्यूटर साइंस में बीटेक करने के बाद एमटेक किया। ये वह दौर था जब बंगलुरू और मुंबई कंप्यूटर हब माना जाता था। उस दौर में घनशाला ने बड़े शहरों और विदेश न जाकर देहरादून आने का फैसला किया। यहां आने पर घनशाला ने देखा कि उत्तराखंड में बहुत बेसिक कंप्यूटर कोर्स कराए जा रहे हैं तो उन्होंने यहीं एक हाईहैंड पर्सनलाइज्ड कंप्यूटर सेंटर शुरू करने की सोची। 1993 में 29 हजार रुपये में 386 एसेंबल्ड कंप्यूटर से एक बड़े सपने की शुरूआत हुई। शुरूआती दौर में वह कैट के अथॉराइज्ड ट्रेनर भी रहे। इस दौरान सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट और ट्रेनिंग देने का सिलसिला चलता रहा। इस दौरान उन्होंने कुमाऊं यूनिवर्सिटी से कंप्यूटर साइंस में डॉक्टरेट की।

कमल घनशाला के पिता पीडब्ल्यूडी में इंजीनियर थे। उन्होंने अपनी शुरूआती शिक्षा बेरीनाग, गोपेश्वर, गैरसैंण और मुनस्यारी से की। उन्होंने कर्नाटक यूनिवर्सिटी से इंजीनियरिंग की। हायर एजुकेशन के क्षेत्र में वर्ष 2017 में कमल घनशाला को 'विजनरी आंत्रप्रिन्योर ऑफ इंडिया' अवार्ड से सम्मानित किया गया। इससे पहले वर्ष 2016 में न्यूयॉर्क में आयोजित इंटरनेशनल क्वालिटी समिट में भी डॉ. कमल घनशाला को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक्सीलेंस के लिए गोल्ड अवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है। ■

रस्किन बॉन्ड

प्रख्यात लेखक

ब्रिटिश मूल के अंग्रेजी लेखक रस्किन बॉन्ड भारत के महान लेखकों में गिने जाते हैं। जैसे बचपन उनकी कहानियों के बिना अधूरा है, उत्तराखंड की हस्तियों का जिक्र रस्किन बॉन्ड के बिना अधूरा है। जीवन के शुरुआती वर्षों में वह एक बार देहरादून आए तो वहीं के होकर रह गए। 1963 से रस्किन बॉन्ड मसूरी के लंढौर क्षेत्र में अपने परिवार के साथ रहते हैं। उन्हें साहित्य अकादमी, पद्मश्री और पद्म भूषण जैसे पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। रस्किन बॉन्ड ने अनेक श्रेष्ठ उपन्यासों की रचना की। उनके लेखन आमतौर पर देहरादून के मैदानों और मसूरी की पहाड़ियों के इर्द-गिर्द घूमता हैं। आज भी वे अक्सर मसूरी में एक किताबों की दुकान पर मिल जाते हैं और दुकान पर आने वाले बच्चों को बड़े प्यार से ऑटोग्राफ देने के साथ ही साहित्य पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। रस्किन बॉन्ड में दर्जनों उपन्यास लिखे और दूसरी विधाओं में भी लेखन किया। उनकी रचनाओं पर बॉलीवुड फिल्में भी बनी। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम पर लिखे उनके उपन्यास पर बॉलीवुड में जुनून फिल्म बनी, इसके अतिरिक्त दूरदर्शन पर उनकी कहानियों पर आधारित 'एक था रस्टी' धारावाहिक भी प्रसारित हुआ।

रस्किन बांड का जन्म 19 मई 1934 को पंजाब स्टेट के कसौली में मिलिट्री अस्पताल में हुआ था। उनके पिता रायल एयर फोर्स में तैनात थे। पिता से अलग होने के बाद रस्किन अपनी माता के साथ पंजाब में एक हिंदू परिवार में कुछ समय रहे और बाद में अपनी नानी के यहां देहरादून आ गए। शिमला के बिशप चर्च स्कूल से उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा ग्रहण की और बाद में उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड भी गए। पढ़ाई के दौरान ही उन्होंने लेखन कार्य शुरू किया और कई पुरस्कार भी प्राप्त किए। उन्होंने इंग्लैंड में किराने की दुकान और बाद में फोटो स्टूडियो में काम करते हुए अपनी पहली पुस्तक 'द रूम ऑन द रूफ' लिखी। इस पुस्तक के लिए 50 पाउंड की राशि मिलने के बाद वह 1957 में वापस देहरादून चले आए। उनकी लिखी एक कहानी का कैरेक्टर 'रस्टी' और 'अंकल केन' आज भी बाल साहित्य की दुनिया के सबसे फेमस कैरेक्टर्स माने जाते हैं। ■

'द सांग ऑफ इंडिया' संघर्ष की कहानी

रस्किन बॉन्ड की जिंदगी पर आधारित किताब 'द सांग ऑफ इंडिया' उनके 16 साल की उम्र से लेकर लेखक बनने तक की कहानी है। इससे पूर्व उनके जीवन पर तीन पुस्तकें आ चुकी हैं। यह उनके संस्मरण की चौथी किस्त है। इससे पहले, 'लुकिंग फॉर रेनबो (2017), टेल द क्लाउड्स बाई (2017), कमिंग राउंड द माउंटेन (2019)' आ चुकी हैं। जुलाई 2020 में दिल्ली में इसका विमोचन हुआ। यह पुस्तक सन 1951 की पृष्ठभूमि पर लिखी गई है। 'द सांग ऑफ इंडिया' में बॉन्ड 16 साल की अपनी कहानी बयां करते हैं और बताते हैं कि कैसे उन्होंने अपनी लेखन यात्रा शुरू करने के लिए संघर्ष किया।

500 से ज्यादा रचनाएं

रस्किन बॉन्ड 500 से अधिक लघु कथाएं, निबंध और उपन्यास लिखे हैं। उनका लोकप्रिय उपन्यास 'द ब्लू अम्ब्रेला' है। इसी नाम की एक हिंदी फिल्म भी बनाई गई थी, जिसे 2007 में सर्वश्रेष्ठ बाल फिल्म के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। यह कहानी एक छोटी लड़की के बारे में है, जो तेंदुए के पंजे के पुराने हार को एक सुंदर, मटमैले नीले रंग की छतरी के लिए तैयार करती है। हिमाचल प्रदेश के एक छोटे से गांव में स्थित, यह एक सरल लेकिन दिल को छू लेने वाली कहानी है। इस उपन्यास को अमर चित्र कथा प्रकाशन द्वारा एक कॉमिक में रूपांतरित किया गया। हिंदी फिल्म '7 खून माफ' बॉन्ड की लघु कहानी 'सुसन्ना के सात पतियों' पर आधारित है।

पद्म भूषण सुश्री बछेंद्री पाल

पर्वतारोही

बछेंद्री पाल को यदि पर्वतपुत्री कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। बपचन से ही पहाड़ों पर चढ़ने और उतरने की मजबूरी एक दिन बछेंद्री को एवरेस्ट जैसी ऊंचाई पर ले जाएगी, यह शायद किसी ने सोचा भी नहीं होगा। विश्व की अनेक चोटियां पर आरोहण करने के बाद बछेंद्री पाल ने 23 मई, 1984 के दिन दोपहर एक बजकर सात मिनट पर जब माउंट एवरेस्ट की चोटी को चूमा तो वह विश्व के इस सबसे ऊंचे पर्वत पर चढ़ने वाली पहली भारतीय और विश्व की पांचवीं महिला बन गई। साहसिक कार्यों के लिये बछेंद्री पाल को अनेक पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया। इनमें अर्जुन पुरस्कार, नेशनल एडवेंचर अवार्ड, नेशनल यूथ अवार्ड, आईएमएफ द्वारा स्वर्ण पदक, शिक्षा विभाग द्वारा स्वर्ण पदक, कोलकाता लेडीज स्टडीज ग्रुप अवार्ड जैसे पुरस्कार शामिल हैं। सन 1985 में उन्हें भारत सरकार ने पद्मश्री पुरस्कार से भी सम्मानित किया। बछेंद्री ने अपना नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स में भी दर्ज करवाया। गढ़वाल विश्वविद्यालय की ओर से उन्हें डी. लिट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। उन्होंने 'मेरी शिखर यात्रा' पुस्तक भी लिखी, जो एवरेस्ट यात्रा पर आधारित है। साल 2019 में उन्हें भारत सरकार ने पद्म भूषण सम्मान प्रदान किया है।

बछेंद्री पाल का जन्म 24 मई 1954 को उत्तरकाशी जिले के नकुरी गांव में एक भोटिया जनजातीय परिवार में हुआ था। पिता किशन सिंह भी आम भोटिया परिवारों की तरह छोटा-मोटा व्यवसाय करते थे। इनके परिवार गर्मियों में हर्सिल चले जाते थे और सर्दियों में नकुरी। इन पहाड़ों पर चढ़ने और उतरने के अभ्यास ने बछेंद्री को मजबूत बनाया।

पार्टटाइम काम करके बछेंद्री अपना खर्चा निकाल कर पढ़ाई करती रही और डीएवी कालेज देहरादून से संस्कृत में एमए उत्तीर्ण किया। फिर नेहरू पर्वतारोहण संस्थान उत्तरकाशी जाकर प्रशिक्षण लेने लगी। प्रशिक्षण के दौरान उन्होंने गंगोत्री और माणा सहित कई चोटियों पर चढ़ाई की। इसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। ■

सिलाई करके पढ़ाई पूरी की

कहते हैं, जहां संघर्ष होता है, वहां सफलता निश्चित तौर पर मिलती है। बछेंद्री पाल की कहानी भी कुछ ऐसी ही है। उनके घर की माली हालत बहुत अच्छी नहीं थी, लेकिन किताबें बछेंद्री को लगातार अपनी तरफ खींच रही थीं। जब उन्हें कोई रास्ता नहीं सूझा तो उन्होंने सिलाई करना सीख लिया और सलवार-कमीज सिलना शुरू कर दिया। सिलाई करके उन्हें 5-6 रुपये रोजाना मिल जाते थे। उनका खर्च निकलने लगा। स्कूल टाइम में बछेंद्री न सिर्फ पढ़ने में अच्छी थीं, बल्कि खेल-कूद में भी बेहद अच्छा परफॉर्म करती थीं। पढ़ाई के साथ-साथ उनका शॉट-पुट, जेवेलिन थ्रो और डिस्कस में भी काफी बढ़िया प्रदर्शन रहता था।

नौकरी नहीं मिली तो पर्वतारोहण

एक एवरेस्ट विजेता अगर यह कहे कि पर्वतारोहण इसलिए शुरू किया क्योंकि अच्छी नौकरी नहीं लगी तो हैरानी होना लाजिमी है। दरअसल, बीए करने के बाद बछेंद्री पाल ने संस्कृत से एमए किया और फिर बीएड की डिग्री हासिल की। इतनी पढ़ाई करने के बाद भी बछेंद्री को कहीं अच्छी नौकरी नहीं मिली। जहां भी नौकरी मिलने की बात होती, वहां उन्हें कम तनख्वाह वाली जूनियर लेवल की नौकरी की ऑफर दी जाती, इसलिए उन्होंने ज्वाइन नहीं किया क्योंकि बछेंद्री को लगा कि ये उनकी ज्यादा पढ़ाई की तौहीन है। इसके बाद बछेंद्री ने नेहरू पर्वतारोहण संस्थान में दाखिले के लिए आवेदन कर दिया। उन्हें इस कोर्स में सबसे अच्छा माना गया।

एयर मार्शल एमएस बुटोला

डीजीएमएस (एयरफोर्स)

देश की सैन्य सेवाओं में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों निभा रहे लोगों में एयर मार्शल एमएस बुटोला भी शामिल हैं। एयरमार्शल बुटोला मेडिकल फील्ड में एक बड़ा नाम हैं। वह इस समय नई दिल्ली में डायरेक्टर जनरल मेडिकल सर्विसेज (एयर फोर्स) के पद पर कार्यरत हैं। इलाहाबाद के एमएलएन मेडिकल से एमबीबीएस करने के बाद साल 1984 में उन्होंने सेना की मेडिकल कोर ज्वाइन की। सेना में उन्होंने इंस्टीट्यूट ऑफ एयरोस्पेस मेडिसिन से अपनी पोस्ट ग्रेजुएशन यानी एमडी इन एविएशन मेडिसिन में पूरी की। 25 साल तक सेना में सेवाएं देने के बाद साल 2008 में वह भारतीय वायुसेना में पहुंचे। सेना और वायुसेना में सेवा के दौरान उन्हें कई रेजीमेंटल, कमांड और स्टॉफ नियुक्तियां मिलीं। पहाड़ के परिवेश से निकलकर उन्होंने सफलता के शिखर को छुआ है। यही वजह है कि जब भी वह अपनी शुरुआत को याद करते हैं, भावुक हो जाते हैं। वह कहते हैं, आज जब उत्तराखंड के लोग देश-विदेश में महती भूमिका निभा रहे हैं, अपनी देवभूमि के लिए एक सामूहिक प्रयास करने की आवश्यकता है। एयर मार्शल बुटोला ने राजकीय इंटर कॉलेज नंदप्रयाग से हाईस्कूल करने के बाद गोपेश्वर से इंटरमीडिएट किया और फिर बीएससी की। एयर मार्शल बुटोला की पत्नी भी सेना में डॉक्टर हैं। मूल रूप से उत्तराखंड के ही रानीखेत की रहने वाली ब्रिगेडियर वंदना नेगी ने अपना एमबीबीएस और एमडी पीडियाट्रिक्स एमएलएन कॉलेज इलाहाबाद से किया। सेना में शामिल होने के बाद उन्होंने पीजीआईएमईआर चंडीगढ़ से डीएम इन नियोनेटोलॉजी किया। इस समय वह नई दिल्ली स्थित सेना के आरएंडआर अस्पताल के पीडियाट्रिक्स विभाग की प्रमुख एवं प्रोफेसर हैं। एयर मार्शल बुटोला की दो बेटियां तन्वी एवं तनुश्री हैं। तन्वी ने जर्मनी के मैक्स प्लैंक इंस्टीट्यूट से पीएचडी किया है। वह अमेरिका में न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी में पोस्ट डॉक के तौर पर काम कर रही हैं। वहीं छोटी बेटी तनुश्री दिल्ली के यूएसआईटी से इंजीनियरिंग और आईआईएम इंदौर से एमबीए करने के बाद चेन्नई स्थित बहुराष्ट्रीय कंपनी में काम कर रही हैं। ■

नंदप्रयाग के गवाई से है नाता

एयर मार्शल बुटोला चमोली जिले के नंदप्रयाग के गवाई गांव के रहने वाले हैं। उन्होंने रैबार के मंच से कहा, मैं भी इसी उत्तराखंड और चमोली जिले में पढ़ा हूं। उस समय से आज के समय यहां पर बहुत अलग चुनौतियां हैं। जो हम देख रहे हैं और उसके लिए हमको कुछ करना है। हमें गांवों से हो रहे पलायन को रोकना है। गांवों में मेडिकल की समस्या है, इलाज में दिक्कतें आती हैं। मगर हमारे जो समाधान हैं, वह प्रैक्टिकल होने चाहिए। हमारे युवा यहां से छोड़कर जा रहे हैं उनका मुख्य मुद्दा यह है कि बच्चों की पढ़ाई ठीक नहीं हो रही है। हमको उसके लिए एक अच्छा समाधान खोजना होगा।

वायुसेना के कोरोना वॉरियर

एयर मार्शल एमएस बुटोला के मुताबिक, कोरोना के चलते घोषित लॉकडाउन की शुरूआत में ही हमें यह आदेश मिला था कि बेड की क्षमता बढ़ानी है और हमें सिविल आबादी के लिए भी कुछ सर्विसेज ओपन करनी है। उसी समय से तीनों सेनाओं ने देश में 51 अस्पताल सिविल आबादी के इलाज के लिए खोले और ये सबी कोविड अस्पताल कहलाए। एयरफोर्स ने करीब 9 जगहों पर क्वारंटीन सेंटर बनाए। एयरफोर्स के जहाज से जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, अरुणाचल, पूर्वोत्तर के दुर्गम क्षेत्रों में मेडिकल सप्लाई निरंतर भेजी गई। यहां तक कि लेह में कोविड सैंपल टेस्ट के लिए लगभग रोज जहाज वहां से नमूने लाते और दिल्ली में टेस्ट कर उसे वापस भेजा जाता।

राधा रतूड़ी

अपर मुख्य सचिव, उत्तराखंड

उत्तराखंड में निर्विवाद और साफ छवि के अधिकारियों का जिक्र होते ही वरिष्ठ आईएएस राधा रतूड़ी की चर्चा होने लगती है। वह इस समय अपर मुख्य सचिव के पद पर हैं। राधा रतूड़ी को सर्वमान्य आईएएस अधिकारी माना जाता है। सहज और सादगी भरी कार्यशैली उन्हें दूसरे अधिकारियों से अलग करती है। 1988 बैच की आईएएस अधिकारी रतूड़ी तत्कालीन उत्तर प्रदेश में पहले एसडीएम बरेली, एसडीएम लखनऊ रहीं। इसके बाद उन्हें रायबरेली का सीडीओ बनाया गया। इसके बाद वह सीडीओ इटावा भी रहीं। इसके बाद राधा रतूड़ी को उत्तर प्रदेश सरकार में संयुक्त सचिव, वित्त बनाया गया। वह यूपी सरकार में विशेष सचिव उद्योग भी रहीं। उन्होंने यूपी के फतेहपुर जिले में बतौर जिलाधिकारी सेवाएं दीं। उत्तराखंड राज्य के गठन के बाद वह यहां आईं और टिहरी गढ़वाल और देहरादून की जिलाधिकारी की जिम्मेदारी निभाई। वह दस साल तक मुख्य निर्वाचन अधिकारी भी रहीं। वह इस समय अपर मुख्य सचिव, उत्तराखंड सरकार के अलावा कार्मिक एवं विजिलेंस विभाग का जिम्मा देख रही हैं। इसके अलावा वह मुख्यमंत्री की अपर मुख्य सचिव हैं। सैनिक कल्याण बोर्ड, तकनीकी शिक्षा विभाग और सचिवालय प्रबंधन विभाग की जिम्मेदारी भी राधा रतूड़ी के पास है। ईमानदार छवि उनकी सबसे बड़ी पहचान है। केंद्र सरकार ने मई 2018 में विशेष मंजूरी देते हुए राधा रतूड़ी को पदोन्नति दी और अपर मुख्य सचिव बनाया। यह पद खासतौर पर राधा रतूड़ी के लिए बनाया गया था।

छह मार्च 1964 को जन्मी राधा रतूड़ी ने बॉम्बे यूनिवर्सिटी से इतिहास में बीए ऑनर्स किया। उन्हें इसमें गोल्ड मेडल मिला। इसके बाद उन्होंने हैदराबाद की उस्मानिया यूनिवर्सिटी से पब्लिक पर्सनल मैनेजमेंट में मास्टर्स की डिग्री ली। यहां भी उन्होंने गोल्ड मेडल अपने नाम किया। साल 1986 में वह इंडियन इनफॉर्मेशन सर्विस के लिए चुनी गईं। इसके अगले ही साल वह यूपीएससी की परीक्षा पास कर आईपीएस बनने में सफल रहीं। लेकिन उन्हें प्रशासनिक सेवा में ही जाना था लिहाजा साल 1988 में उन्हें इसमें सफलता मिल गई और वह आईएएस बन गईं। ■

सादगी की होती है हर तरफ चर्चा

राधा रतूड़ी और उनके पति अनिल रतूड़ी अपनी सादगी के लिए अक्सर चर्चा में रहते हैं। एक बार दोनों दोनों बिना किसी सरकारी तामझाम के देहरादून के एक रेस्टोरेंट में कॉफी पीने पहुंच गए। दोनों ने एक साधारण दंपति की तरह टेबल पर बैठकर अपना ऑर्डर दिया। उनकी सहजता से रेस्टोरेंट में बैठे लोगों को भी इस बात की भनक नहीं लगी इस समय उत्तराखंड के दो पॉवरफुल आईएएस उनके सामने बैठे हैं। इस साल जून में भी रतूड़ी दंपति ने सादगी की मिसाल पेश करते हुए अपनी बेटी अपर्णा की शादी बेहद सामान्य तरीके से की। इस मौके पर कुछ करीबी रिश्तेदार ही मौजूद रहे।

उत्तराखंड की संस्कृति से लगाव

अपर प्रमुख सचिव राधा रतूड़ी भले ही मूल रूप से मध्य प्रदेश की हों, लेकिन वह उत्तराखंड की संस्कृति से गहराई से जुड़ी हुई हैं। अक्सर उनके गढ़वाली गीत गुनगुनाते हुए वीडियो सोशल मीडिया पर दिख जाते हैं। उनके पति और हाल ही में उत्तराखंड के डीजीपी के पद से रिटायर हुए अनिल रतूड़ी खुद कहते हैं कि टिहरी की कलेक्टर रहते हुए राधा रतूड़ी जितना वहां के गांव-गांव घूमी हैं, उतना तो वह भी नहीं घूमे। पहाड़ की संस्कृति से जुड़े रहने पर उन्हें फख्र महसूस होता है। ये मानवीय मूल्य और पर्यावरणीय सरोकारों की संस्कृति है, जो उनके मन-मस्तिष्क में समाई हुई है। राधा रतूड़ी को कई गढ़वाली गीत जुबानी याद हैं।

मंगेश घिल्डियाल

डेप्यूटी सेक्रेटरी, पीएमओ

मासूम चेहरे और शमीर्ले स्वभाव के मंगेश घिल्डियाल की छवि जनता के लिए हमेशा सुलभ रहने वाले आईएएस अधिकारी की रही है। उन्हें बेहद ईमानदार और अपने काम के प्रति जुनूनी स्वभाव वाला अधिकारी माना जाता है। वह देश के उन चुनिंदा अधिकारियों में रहे हैं, जिन्हें जहां पोस्टिंग मिली, अपनी लगन, कार्यकुशलता और मानवीय गुणों को लेकर चर्चा में रहे। रुद्रप्रयाग का जिलाधिकारी रहते हुए उन्होंने केदारनाथ में चल रहे पुनर्निर्माण कार्यों पर जमीनी नजर रखी। मंगेश घिल्डियाल की काबिलियत और समझदारी से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी प्रभावित हुए। यही वजह है कि उन्हें बड़ी जिम्मेदारी देते हुए प्रधानमंत्री कार्यालय में डेप्यूटी सेक्रेटरी नियुक्त किया गया है। उनका कार्यकाल चार साल के लिए है। एक आईएएस अधिकारी समाज में कैसे बदलाव ला सकता है, इसकी बानगी मंगेश घिल्डियाल के क्रियाकलापों को देखकर मिलती है। वह जिस भी जिले में तैनात रहे स्कूलों पर सबसे ज्यादा फोकस किया। बच्चों के साथ मिलना-जुलना, खाना खाना उनकी खास पहचान रही। रुद्रप्रयाग में टीचर्स की कमी होने के चलते उनकी पत्नी ने राजकीय प्राथमिक विद्यालय और बालिका इंटर कॉलेज में समय-समय पर बच्चों की कक्षाएं लीं। राजीव गांधी नवोदय विद्यालय और जवाहर नवोदय विद्यालय की प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी के लिए खुद मंगेश धिल्डियाल और उनकी पत्नी ने पांचवीं के बच्चों को गणित, अंग्रेजी और विज्ञान विषय पढ़ाया।

मंगेश घिल्डियाल ने कुमायूं यूनिवर्सिटी नैनीताल से फिजिक्स में एमएससी की, इसके बाद उन्होंने स्कूल ऑफ फिजिक्स, देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी से लेजर साइंस में एमटेक भी किया। वर्ष 2008 में उन्हें डीआरडीओ में नियुक्ति मिली। इसके बाद उन्होंने सिविल सर्विसेज की तैयारी की और पहले ही प्रयास में आईपीएस चुने गए। साल 2012 में वह यूपीएससी की सिविल सेवा परीक्षा में देशभर में चौथा स्थान हासिल कर आईएएस बने। उन्होंने उत्तराखंड कैडर चुना। वह पौड़ी के नैनीडांडा ब्लॉक के टांड्यू गांव से हैं। मंगेश घिल्डियाल की पहली पोस्टिंग हरिद्वार के लक्सर में ज्वाइंट मजिस्ट्रेट के रूप में हुई। इसके बाद उन्हें चमोली का सीडीओ बनाया गया। पहली पोस्टिंग बागेश्वर जिलाधिकारी रहने के दौरान वह अपने अलग अंदाज से लोकप्रिय होने लगे थे। ■

रुद्रप्रयाग का कार्यकाल बना नजीर

अक्टूबर 2016 में मंगेश घिल्डियाल बागेश्वर के जिलाधिकारी बनाए गए। यहां उनका कार्यकाल शानदार रहा और जब उनका तबादला हुआ तो लोगों ने इसका विरोध किया। 17 मई 2017 को मंगेश घिल्डियाल रुद्रप्रयाग के जिलाधिकारी बने। उनके कार्यकाल में रुद्रप्रयाग को देश में प्रधानमंत्री आवास योजना के सफल क्रियान्वयन के लिए प्रथम स्थान मिला। उन्हें दो बार मुख्यमंत्री सुशासन एवं उत्कृष्टता पुरस्कार भी दिया गया है। वर्ष 2019-20 के लिए रुद्रप्रयाग को राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस पुरस्कार में प्रथम स्थान मिला। मई 2020 में उन्हें टिहरी का डीएम बनाया गया। इसके कुछ समय बाद ही उन्हें पीएमओ से बुलावा आ गया।

मृत्यु दर रोक खींची बड़ी लकीर

मंगेश घिल्डियाल के प्रयासों से रुद्रप्रयाग जिले में स्वास्थ्य विभाग को साल 2019 में एक अहम उपलब्धि हासिल हुई। रुद्रप्रयाग उत्तराखंड का एकमात्र ऐसा जिला हरा, जहां प्रसव के दौरान मातृ एवं शिशु मृत्यु दर शून्य रही। यानी जिले में साल 2019 में एक भी गर्भवती महिला या शिशु की मृत्यु नहीं हुई। वर्ष 2019 में डीएम मंगेश घिल्डियाल की पहल पर स्वास्थ्य विभाग ने 'मां' ऐप की प्रयोग के तौर पर शुरूआत की थी। इसमें सभी हाई रिस्क वाली गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य पर विभाग द्वारा पैनी नजर रखी गई थी, नतीजा यह हुआ कि जिले में मातृ एवं शिशु मृत्यु दर रोकने में सफलता मिली। पहाड़ों में स्वास्थ्य सेवाओं की लचर स्थिति को देखते हुए रुद्रप्रयाग की यह उपलब्धि कई गुना अहम रही।

धीराज गर्ब्याल

जिलाधिकारी, पौड़ी

अगर पूछा जाए कि उत्तराखंड के उस जिले का नाम बताइये, जहां इस समय सबसे ज्यादा इनोवेशन के साथ काम हो रहा है तो निश्चित तौर पर पौड़ी का नाम लिया जाएगा। उत्तराखंड के दूसरे जिलों के मुकाबले पौड़ी ने नए प्रयोगों के मामले में दूसरे से अच्छी-खासी बढ़त ले रखी है। इसका एकमात्र कारण हैं जिलाधिकारी धीराज सिंह गर्ब्याल। पिछले कुछ समय के दौरान पौड़ी में कुछ ऐसा काम हुआ है, जनता को जिसकी उम्मीद कम रही होगी। फिर चाहे वह खिर्सू में बना बासा होमस्टे हो या अब बन रहा बासा-2, चाहे वह कंडोलिया थीम पार्क हो या नयार घाटी में एडवेंचर स्पोर्ट्स फेस्टिवल। वो पौड़ी में अलग-जगह पर सेब के बागीचों के लिए हो रहा काम हो या लोगों को स्वारोजगार से जोड़ने का नया नजरिया, सभी में धीराज गर्ब्याल की मौजूदगी साफ नजर आती है।

गर्ब्याल 2009 बैच के आईएएस अधिकारी हैं। पिथौरागढ़ जिले के धारचूला के गर्ब्याल खेड़ा के निवासी दयाराम सिंह गर्ब्याल के घर जन्मे धीराज गर्ब्याल ने आईएएस बनने के बाद ऊधम सिंह नगर में बतौर एसडीएम सेवाएं दीं। यहां वह एडीएम भी बनाए गए। इसके बाद वह सीडीओ अल्मोड़ा रहे। शासन ने उन्हें अहम जिम्मेदारी सौंपते हुए कुमांऊ मंडल विकास निगम का एमडी भी बनाया। इसके बाद जनवरी 2019 में वह पौड़ी आ गए। परिवार में उनकी पत्नी सोनिया बैंकिंग सेक्टर में हैं, जबकि एक बेटी मारिया और बेटा सक्षम है। गर्ब्याल को नए टॉस्क लेकर उन्हें धरातल पर उतारना बखूबी आता है। उनकी पहल पर पौड़ी विकास खंड कल्जीखाल के अंतर्गत आने वाले बिलखेत में 19 नवम्बर से 22 नवम्बर 2020 तक 'नयार घाटी साहसिक खेल महोत्सव का आयोजन किया गया इसमें देशभर से पहुंचे पैराग्लाइडर्स और माउंडेन बाइकर्स ने अपना जलवा दिखाया। कयाकिंग, टेल रनिंग और एंगलिंग जैसी साहसिक प्रतियोगिताओं ने नयार घाटी को एडवेंचर स्पोर्ट्स का नया ठिकाना बना दिया है। खुद सीएम त्रिवेंद्र सिंह रावत ने यहां पैराग्लाइडिंग का ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट खोलने की घोषणा की। नयार घाटी में इस प्रकार के आयोजन से संपूर्ण क्षेत्र को अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली है। ■

सिर्सू में होमस्टे बासा चर्चा का केंद्र

खिर्सू में बासा होमस्टे महिला स्वयं सहायता समूह उन्नति द्वारा चलाया जाता है। यह जिलाधिकारी गढ़वाल धीरज गर्ब्याल की एक बेहतरीन पहल है। यह पहल स्थानीय आवश्यकताओं, अर्थव्यस्था और वास्तुकला को ध्यान में रखते हुए की गई है। ताकि स्थानीय लोग इसे अपना सकें और यह स्थानीय कपड़े का मूल्य बढ़ा सकें। गढवाली भाषा में 'बासा' एक रात के ठहराव के लिए अपने घर में मेहमानों को आमंत्रित करने की अभिव्यक्ति है। बासा होमस्टे स्थानीय लोगों के लिए एक उदाहरण स्थापित करता है और नई पीढ़ी को यह होमस्टे एक केस स्टडी के तौर पर आकर्षित कर रहा है।

सेब उत्पादन के लिए जबरदस्त काम

हर चीज के दो पहलू होते हैं, अच्छा या बुरा, ये आप पर निर्भर करता है कि आप कौन सा पहलू देखना चाहते हैं। जो लोग लॉकडाउन के चलते निराश थे, सरकार को कोस रहे थे, वे अगर चाहते तो इसका इस्तेमाल बेहतर काम के लिए कर सकते थे। कुछ ऐसा ही धीराज गर्ब्याल ने किया। उनके सार्थक प्रयासों से पौड़ी में खिर्सू के मरखोड़ा, सिरोली, मांडाखाल, पाबौ ब्लॉक के कलुण, पोखड़ा ब्लॉक के वीणा मल्ली, नैनीडांडा के सीला मल्ली, बीरौंखाल के मटकुंडा और राजकीय उद्यान पटेलिया में सेब के नौ नए बगीचे आकार ले चुके हैं। इसमें ज्यादातर काम लॉकडाउन के दौरान हुआ। इसके साथ ही पौड़ी में सेब के रकबे को और बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है।

कलानिधि नैथानी

एसएसपी, गाजियाबाद

तेजतर्रार आईपीएस अधिकारी माने जाने वाले कलानिधि नैथानी के गाजियाबाद एसएसपी का पद संभालते ही कहा था कि बदमाशों से सख्ती से निपटा जाएगा। उन्होंने साल के खत्म होने से पहले अपनी इस बात को सही साबित करके दिखाया है। लखनऊ से गाजियाबाद भेजे गए एसएसपी नैथानी ने सीएम योगी आदित्यनाथ के भरोसे पर खरा उतरते हुए अच्छे नतीजे दिए हैं। गाजियाबाद में लगभग एक वर्ष की तैनाती में उन्होंने दिल्ली दंगों के दौरान अपने जिले को दंगों की आग से बचाया। लॉकडाउन के दौरान जब भारी संख्या में प्रवासी मजदूर जनपद से गुजरे तो बहुत ही मानवीय तरीके से गाजियाबाद पुलिस ने स्थिति को संभाला। लखनऊ में आईपीएस नैथानी का कार्यकाल डेढ़ साल लंबा रहा, जिसमें उन्होंने कई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय इवेंट्स सकुशल संपन्न करवाए गए। उनके कार्यकाल में पहली बार ऐसा हुआ कि 2 साल तक लखनऊ में मोहर्रम का जुलूस बिना किसी शिकायत अथवा मुकदमे के संपन्न हुआ।

2010 बैच के आईपीएस नैथानी कड़क अनुशासन, व्यवस्थित तरीके से अपराध पर नियंत्रण के लिए जाने जाते हैं। गाजियाबाद में उनके निर्देश पर पुलिस द्वारा बरती जा रही सख्ती का ही असर है कि साल 2020 में वाहन चोरी की घटनाएं आधी रह गई हैं। साल 2019 में जहां गाजियाबाद में 3204 गाड़ियों की चोरी हुई, वहीं साल 2020 में यह संख्या घटकर 1411 हो गई। यही नहीं पुलिस ने चोरी हुई आधी गाड़ियां बरामद भी की हैं। गाजियाबाद पुलिस ने वाहन चोर गिरोह के खिलाफ जोरदार मुहिम चला रखी है, इसके चलते बड़ी संख्या में वाहन चोर पकड़े गए हैं। यही नहीं एसएसपी नैथानी ने जिले में सक्रिय अपराधियों के आर्थिक स्त्रोतों की जांच भी शुरू कर दी है। गाजियाबाद में टॉप-100 बदमाशों की लिस्ट तैयार की जा रही है, इसके बाद इन सभी की संपत्ति को गैंगस्टर एक्ट के तहत जब्त किया जाएगा। एसएसपी नैथानी ने साल 2006 से 2020 के बीच गाजियाबाद से लापता हुए 276 बच्चों में से 191 को 'ऑपरेशन खुशी' के तहत बरामद करवाकर बड़ी मिसाल कायम की है। ■

अनुशासन, सहजता बनाती है खास

आईपीएस अधिकारी कलानिधि नैथानी मूल रूप से पौड़ी गढ़वाल के रहने वाले हैं। उनकी सहजता उन्हें अलग धारा में खड़ा करती है। अपराध और अपराधियों के खात्मे के लिए कलानिधि नैथानी कोई ना कोई मुहिम चलवाते रहते हैं। उनके एक बहुचर्चित अभियान 'ऑपरेशन निहत्था' ने ऐसे अपराधियों की कमर तोड़ी जो अवैध अथवा वैध हथियारों का आतंक दिखाकर अपराधिक वारदातों को अंजाम देते रहे हैं। उन्होंने हाईस्कूल की पढ़ाई पौड़ी, इंटरमीडिएट आर्मी स्कूल मथुरा और इलेक्ट्रॉनिक एंड कम्युनिकेशन बीटेक की पढ़ाई पंतनगर से की है। उन्होंने पुलिस प्रबंधन में उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद से एमबीए भी किया है।

सी-डॉट में रिसर्च इंजीनियर रहे

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक नैथानी ने इससे पहले भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर में वैज्ञानिक अधिकारी, भारत सरकार के सी-डॉट (सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ टेलीमैटिक्स) बेंगलुरू एवं दिल्ली में पांच साल तक रिसर्च इंजीनियर रह चुके हैं। इसके अलावा वह एसएसपी लखनऊ, एसएसपी बरेली, एसपी पीलीभीत, एसपी कन्नौज, एसपी फतेहपुर, एसपी मीरजापुर, कमांडेंट 38 पीएसी अलीगढ़, कमांडेंट 9 पीएसी मुरादाबाद, पुलिस अधीक्षक पुलिस मुख्यालय तथा एएसपी कुंभ मेला और एएसपी सहारनपुर भी रहे हैं। उनकी मां देहरादून में राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त प्रधानाचार्या हैं, वहीं पिता सेवानिवृत प्रोफेसर हैं। उनकी पत्नी आयकर विभाग दिल्ली में संयुक्त आयुक्त के पद पर कार्यरत हैं। बड़े भाई थल सेना में अधिकारी हैं।

भूपेंद्र कैंथोला

निदेशक, एफटीआईआई

देश के प्रतिष्ठित संस्थान फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (एफटीआईआई), पुणे के निदेशक भूपेंद्र कैंथोला अपने जमीनी जुड़ाव के लिए जाने जाते हैं। वह मई 2016 से एफटीआईआई के निदेशक हैं। यह भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के तहत आने वाला एक स्वतंत्र शिक्षण संस्थान है। एफटीआईआई भारत में कला एवं सिनेमा तथा टेलीविजन प्रोडक्शन का प्रशिक्षण देने वाले अग्रणी संस्थान है। एफटीआईआई की जिम्मेदारी संभालने से पहले कैंथोला नई दिल्ली में डीडी न्यूज में अतिरिक्त निदेशक रहे। उन्होंने 14 साल तक डीडी न्यूज के लिए काम किया। 1989 बैच के इंडियन इनफॉरमेशन सर्विस के अधिकारी भूपेंद्र कैंथोला ने दिल्ली में फिल्म फेस्टीवल निदेशालय में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार एवं भारतीय पैनोरमा निदेशक के तौर पर भी सेवाएं दी हैं।

उत्तराखंड के पौड़ी गढ़वाल के पाबौ ब्लॉक की घुरदौड़स्यूं पट्टी के चोपरियूं गांव के मूल निवासी कैंथोला का जन्म कोलकाता में हुआ। महाराष्ट्र के ठाणे में वह पले बढ़े। उन्होंने मुंबई यूनिवर्सिटी से राजनीति विज्ञान एवं इंटरनेशनल रिलेशंस में गोल्ड मेडल के साथ मास्टर डिग्री हासिल की। कैंथोला ने लोकसभाटीवी के एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर के तौर पर भी काम किया। वह भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) के दिल्ली मुख्यालय के मीडिया रिलेशंस के प्रमुख भी रहे। उन्होंने सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की मीडिया इकाइयों पीआईबी और डीएवीपी के लिए भी काम किया। कैंथोला दिल्ली, मुंबई और चंडीगढ़ में अपनी सेवाएं दे चुके हैं। कैंथोला का उत्तराखंड से काफी जुड़ाव है। वह हर साल 15 दिन के लिए अपने गांव आते हैं और इस दौरान गांव के गरीब बच्चों को पढ़ाते हैं। पिछले कुछ समय में उन्होंने अपने मित्रों को भी छुट्टियों में साथ लाकर बच्चों की पढ़ाना शुरू किया है। उनकी तमन्ना एफटीआईआई की एक इकाई उत्तराखंड में खोलने की है। साल 2019 में आयोजित रैबार कार्यक्रम के मंच से भी उन्होंने उत्तराखंड में एफटीआईआई के पाठ्यक्रम संचालित करने की हिमायत की थी। ■

सेना के साथ कश्मीर में नई पहल

भूपेंद्र कैंथोला की कोशिशों से देश में सर्वश्रेष्ठ फिल्म शिक्षा संस्थान–एफटीआईआई को भारतीय सेना से हाथ मिलाने का अवसर मिला। उत्तरी कश्मीर के बारामुला में मनोरंजन शिक्षा लाने के लिए पहली बार एफटीआईआई ने फिल्म शिक्षा कौशल के साथ कश्मीरी युवाओं को सशक्त बनाने की दिशा में कदम बढ़ाए। एफटीआईआई का पाठ्यक्रम युवा कश्मीरियों की रचनात्मक प्रतिभा को कलात्मक अभिव्यक्ति देने के लिए है। कैंथोला कहते हैं, सशक्तिकरण प्रक्रिया में मनोरंजन कौशल के आयाम को पेश करके एफटीआईआई के लिए सेना के साथ मिलकर काम करना सम्मान और गौरव का विषय है।

उत्तराखंड में सिनेमा के बड़े हिमायती

भूपेंद्र कैंथोला कहते हैं कि उत्तराखंड में सिनेमा का बीज पैदा करने की जरूरत है। वहां ईको सिस्टम नहीं है। कम से कम 30–40 साल से गढ़वाली, कुमांउनी भाषा में बन रही हैं, 4 साल मैं नेशनल फिल्म अवॉर्ड का डायरेक्टर था दिल्ली में और उन चार वर्षों में छत्तीसगढ़ और त्रिपुरा में तो डेढ़ दो लाख लोगों में बोली जाने वाली भाषा की फिल्म आई और अवॉर्ड ले गई। लेकिन 4 वर्षों में गढ़वाली और कुमाऊंनी भाषा में कोई फिल्म नहीं आई। उत्तराखंड मूल के फिल्ममेकर बाहर जाकर अच्छी फिल्म बनाते हैं लेकिन प्रदेश में ऐसा माहौल ही नहीं है कि वे कुछ बना पाएं जबकि पलायन जैसे संवेदनशील मसले पर बढ़िया फिल्म बन सकती है और वह एक दिल को छू लेने वाले मेसेज दे सकती है।

डा. के. एस. पंवार

औद्योगिक सलाहकार, सीएम उत्तराखंड

पहाड़ के सपूत और मुंबई को अपनी कर्मभूमि बनाने वाले डा. केएस पंवार की कहानी उन तमाम लोगों के लिए प्रेरणा है, जो अपनी देवभूमि को कुछ न कुछ लौटाना चाहते हैं। वह उत्तराखंड के मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत के औद्योगिक सलाहकार हैं। उद्योग-धंधे हों, सामाजिक कार्य, खेती या अब प्रदेश की औद्योगिक गतिविधियों को रफ्तार देना... हर क्षेत्र को उन्होंने बड़ी बारीकी से समझा है। वह राज्य के प्रति अपनी बड़ी जिम्मेदारी निभा रहे हैं। केमिकल इंडस्ट्री में ऊंचा मकाम हासिल करने वाले पंवार उत्तराखंड में इंडस्ट्री लाने और रोजगार के अवसर पैदा करने की कोशिशों में लगे हुए हैं। महाराष्ट्र, गुजरात, दिल्ली, उत्तराखंड समेत देश के कई राज्यों में काम करने वाले केएस पंवार ने औद्योगिक सलाहकार की जिम्मेदारी मिलने के बाद खुद को प्रदेश के विकास में लगाया है। कोरोना काल में वह देहरादून रहे हों या मुंबई, ऑनलाइन माध्यम से सरकार और उद्योग के प्रतिनिधियों से जुड़े रहे।

चीन के खिलाफ जब दुनियाभर में विरोध का माहौल बन रहा है, ऐसे में वह चीन से निकलने की कोशिश करने वाली कंपनियों को उत्तराखंड लाने की पुरजोर कोशिश में लगे हैं। डा. कुंवर सिंह पंवार का केमिकल के विभिन्न सेक्टरों में काम करने का 27 साल का लंबा अनुभव है। उन्होंने अपने करियर की शुरूआत केमट्रीट इंडिया लिमिटेड में एक प्रोजेक्ट मैनेजर के तौर पर की थी। उन्होंने यहां केमिकल क्लीनिंग, शिप मेंटेनेंस केमिकल्स जैसी अनेक चीजों के बारे में अनुभव हासिल किया। हालांकि वह उद्यमी बनने का सपना देख रहे थे और उसके लिए मेहनत भी शुरू कर दी थी। आखिरकार उन्होंने 1999 में पॉलिगन केमिकल्स प्राइवेट लिमिटेड की नींव रखी और इन 20 साल में उन्होंने केमिकल से जुड़े कई असाइनमेंट का कुशलता से नेतृत्व किया। आज वह पॉलिगन केमिकल्स के प्रबंध निदेशक हैं, जो कस्ड 9001:2008 कंपनी है और सिविल कंस्ट्रक्शन इंडस्ट्री को तमाम चीजें उपलब्ध कराती है। मुंबई में हेड ऑफिस के साथ इसका दफ्तर गुजरात, दिल्ली और देहरादून में भी है। दो प्लांट मुंबई और देहरादून में स्थापित हैं। डा. पंवार उत्तराखंड को सेब के उत्पादन में ब्रांड बनाने के लिए काम कर रहे हैं। उन्होंने अपने इलाके से इसकी शुरुआत की है। राज्य सरकार भी इस दिशा में आगे बढ़ी है। ■

मिनरल वाटर ब्रांड बना पहचान

11 साल पहले उन्होंने देहरादून में मिनरल वाटर तैयार करने की फैक्ट्री शुरू की, जो ल्ट्ड ब्रांड से काफी मशहूर हो चुकी है। इसके अलावा वह पॉलिइन्फ्रा टेक्नॉलोजीज के डायरेक्टर और सोशल ग्रुप ऑफ कंपनीज के चेयरमैन भी हैं। सोशल ग्रुप सौर ऊर्जा, फाइनेंस समेत विभिन्न क्षेत्रों में काम करता है। डा. पंवार ने 2017 में फ्रांस से केमिकल इंजीनियरिंग में अपनी पीएचडी पूरी की। इससे पहले वह श्रीलंका से 2014 में डॉक्टर ऑफ ऑनर्स (इंडस्ट्री) की डिग्री हासिल कर चुके थे। भारतीय उद्योग रतन अवॉर्ड, भारतीय निर्माण रतन अवॉर्ड समेत एक दर्जन से ज्यादा पुरस्कार पाने वाले केएस पंवार सामाजिक गतिविधियों में भी लगे हुए हैं।

इनवेस्टर समिट के सूत्रधार

डा. पंवार को कृषि और इंडस्ट्री सेक्टर की बारीकियों का मास्टर माना जाता है। वह जानते थे कि उत्तराखंड में उद्योग का ढांचा तभी खड़ा हो सकता है, जब यहां बड़े पैमाने पर निवेश हो। यही वजह है कि उनकी सलाह पर राज्य में इनवेस्टर समिट हुआ। राज्य सरकार ने 2018 में रायपुर स्टेडियम में इन्वेस्टर समिट का आयोजन किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वयं आकर निवेशकों को उत्तराखंड में हर तरह की मदद देने का आश्वासन दिया था। इस समिट के बाद लगभग दो लाख करोड़ रुपये के एमओयू साइन हुए। उत्तराखंड इन्वेस्टमेंट के रूप में देखा रहा है।

तारा चंद्र उप्रेती

ग्रुप प्रेसीडेंट, बजाज समूह

तारा चंद्र उप्रेती के सरकारी प्राइमरी स्कूल से पढ़ाई कर कॉरपोरेट जगत के उच्चतम शिखर तक पहुंचने की कहानी बहुत रोचक है। उत्तराखंड के सुदूर धौलादेवी ब्लॉक के खेती गांव में जन्मे तारा चंद्र उप्रेती ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा कांडा अब जिला अल्मोड़ा से प्राप्त की। कांडा के प्राइमरी स्कूल से तख्ती, कलम, दवात से अपना सफर प्रारंभ किया। 1969 में कांडा इंटर कॉलेज से हाईस्कूल की परीक्षा न सिर्फ प्रथम श्रेणी में पास की, बल्कि पूरे उत्तर प्रदेश में अव्वल स्थान प्राप्त कर वजीफे के हकदार बने। उनके पिता मदन मोहन उप्रेती ने इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से एमए करने के बाद अध्यापन को चुना। वह तारा चंद्र उप्रेती के गुरु भी रहे। उन्होंने ही बेटे को अंग्रेजी और गणित में पारंगत बनाया। राजकीय इंटर कॉलेज अल्मोड़ा से 12वीं करने के बाद उन्होंने नैनीताल के डीएसबी महाविद्यालय से स्नातक एवं स्नातकोत्तर किया। उन्होंने भौतिकी में विश्वविद्यालय में अव्वल स्थान हासिल किया। प्रारंभिक वर्ष में उस समय की उत्तर प्रदेश राजकीय वेधशाला, नैनीताल (अब विश्व स्तरीय आर्यभट्ट केंद्रीय वेधशाला) में खगोल शास्त्र में शोध कार्य किया। जल्द ही बैंक ऑफ बड़ौदा के सहायक बैंक नैनीताल बैंक में अधिकारी नियुक्त हो गए। बैंक में सराहनीय कार्य करते हुए सहायक महाप्रबंधक के पद पर पहुंचे।

नैनीताल बैंक में रहते हुए वहां के नौजवानों को स्वरोजगार के लिए ऋण उपलब्ध कराने, पहाडों में उद्योगों की स्थापना के लिए प्रोत्साहन देने, नैनीताल बैंक को पहाड़ों से निकालकर दिल्ली और उत्तर प्रदेश के शहरों में विस्तार देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। तारा चंद्र उप्रेती के जीवन में 1999 में महत्वपूर्ण मोड़ आया, जब उन्हें बैंक से कॉरपोरेट जगत में कदम रखने का मौका मिला। उन्हें गुजरात से जुड़ी कंपनियों, टोरेंट फॉर्मा और टोरेंट पॉवर का संयुक्त रूप से महाप्रबंधक नियुक्त किया गया। इसके बाद उन्होंने कॉरपोरेट जगत में नई ऊंचाइयों को छुआ। 2011 में काशीपुर स्थित 450 मेगावाट गैस आधारित पॉवर प्लांट के मुख्य कार्यकारी अधिकारी बने, जो उत्तराखंड में गैस आधारित पहला पावर प्लांट था। ■

सीमांत कलाकारों का बने सहारा

तारा चंद्र उप्रेती 2013 में बजाज समूह के प्रेसीडेंट नियुक्त हुए। वर्तमान में वह ग्रुप के सीईओ की टीम में ग्रुप प्रेसीडेंट के पद पर कार्यरत हैं। अपने व्यवसायी कार्य से इतर उनकी सामाजिक कार्यकलापों से बहुत रूचि है। उन्होंने नॉन प्रॉफिट कंपनियों के जरिये देश और खास तौर पर उत्तराखंड की कला एवं संस्कृति को प्रोत्साहन देने का बीड़ा उठाया है। लॉकडाउन के दौरान उन्होंने आजीविका खो चुके उत्तराखंड के सीमांत कलाकारों को ई-मंच प्रदान कर उनका उत्साहवर्धन करने के साथ ही आर्थिक जरूरतों में सहयोग करने का सराहनीय प्रयास किया।

जैविक खेती से जुड़ने की पहल

यह तारा चंद्र उप्रेती की उत्तराखंड के प्रति समर्पण भावना ही है कि उन्होंने रानीखेत के पास योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र की स्थापना की है। वह उत्तराखंड में जैविक खेती के माध्यम से रोजगार सृजन एवं किसानों की आय के श्रोत बढ़ाने की दिशा में अग्रसर हैं। उनकी पहल पर नवयुवकों को योग-शिक्षक एवं जैविक खेती से जोड़ा जा रहा है। तारा चंद्र उप्रेती की पत्नी रमा उप्रेती सामाजिक कार्यों से जुड़ी हैं। वह 'इंक्रेडिबल आर्ट एंड कल्चर' संस्था की चेयरपर्सन हैं। इस मंच के माध्यम से उभरते कलाकारों, फोटोग्राफरों और ग्रामीण कलाकारों को अभिव्यक्ति का मौका मिलता है। उन्हें मंच मुहैया कराया जाता है और आर्थिक सहायता भी प्रदान की जाती है।

मनोज रावत

एडीजी, पश्चिमी कमान, आईटीबीपी

लद्दाख में बढ़े तनाव के बीच चीन के साथ लगती सीमाओं की सुरक्षा को लेकर सतर्कता बढ़ गई है। इस बीच भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी) की चंडीगढ़ में नई कमान बनी है। इसकी जिम्मेदारी उत्तराखंड के सपूत नवनियुक्त अतिरिक्त महानिदेशक मनोज सिंह रावत को मिली है। चंडीगढ़ में मुख्यालय वाली आईटीबीपी की इस पश्चिमी कमान पर ही लद्दाख, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में चीन के साथ लगती भारत की सीमाओं की सुरक्षा की जिम्मेदारी है। ऐसे में एडीजी मनोज रावत की भूमिका काफी महत्वपूर्ण हो जाती है। कमान की जिम्मेदारी संभालने वाले एडीजी रावत आईटीबीपी के पहले अधिकारी है। इस कमान का मकसद आईटीबीपी की ऑपरेशन, प्रशिक्षण क्षमता को बढ़ाना और फील्ड फॉर्मेशंस से संबंधित प्रशासनिक मसलों में सुधार शामिल है। 1986 बैच के आईटीबीपी कैडर के अधिकारी मनोज सिंह रावत के पास भारत और विदेश में फील्ड और प्रशिक्षण का व्यापक अनुभव है। वह नई दिल्ली स्थित मुख्यालय में आईटीबीपी की ऑपरेशन ब्रांच को लीड कर रहे थे। एडीजी रावत की नियुक्ति ऐसे समय में हुई है जब लद्दाख में भारत और चीन के सैनिक आमने-सामने हैं और दोनों देशों बीच तनाव कम नहीं हो रहा है।

मनोज रावत का जन्म पौड़ी गढ़वाल जिले के बोनसाल मल्ला में हुआ। उन्होंने रुहेलखंड यूनिवर्सिटी से मास्टर डिग्री हासिल करने के बाद असिसटेंट कमांडेंट के तौर पर साल 1986 में आईटीबीपी ज्वाइन की। उन्हें बीएसएफ अकादमी टेकनपुर में सीधे जीओ कोर्स के लिए चुन लिया गया। यहां नौ जुलाई, 1986 से 18 जुलाई, 1987 तक हुई ट्रेनिंग में मनोज रावत को ओवरऑल बेस्ट ट्रेनी चुना गया। इसके बाद वह 34 साल लंबे सेवाकाल में आईटीबीपी के सभी सेंटरों मसलन, शिमला, कुल्लू, बानू, लेह, टिगरी, लुधियाना, गौचर, मसूरी, दिल्ली, तेजपुर, शिलांग और ईटानगर में तैनात रहे। एडीजी रावत को सराहनीय सेवा के लिए साल 2007 में पुलिस मेडल और 2012 में विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति पुलिस पदक प्रदान किया गया। ■

कोलंबो में कमांडो दस्ते की अगुवाई

साल 2012 में मनोज रावत को ऐसे समय में कोलंबों में भारतीय उच्चायोग की सुरक्षा में तैनात कमांडो दस्ते का नेतृत्व सौंपा गया जब दोनों देशों के संबंध काफी खराब हो चुके थे। भारतीय उच्चायोग के अधिकारी और उच्चायुक्त को भीषण खतरा था। 1993-94 में श्रीलंका के राष्ट्रपति प्रेमदासा और उनके दो महत्वपूर्ण नेताओं को बेहरमी से मार दिया गया। इसी दौरान विभिन्न सूत्रों यह सूचना मिली कि भारतीय उच्चायोग एक बड़े खतरे के मुहाने पर खड़ा है। मनोज रावत ने बहुत ही सूझबूझ का परिचय देते हुए उच्चायोग और उसके अधिकारियों की विपरीत परिस्तिथियों में फूलप्रूफ सुरक्षा सुनिश्चित की।

एनएसजी में किया जबरदस्त काम

फील्ड ट्रेनिंग, ऑपरेशन, सीमा की सुरक्षा, खेल और प्रशासन के क्षेत्र में अनुकरणीय प्रदर्शन को देखते हुए साल 2007 में उन्हें एनएसजी में डेप्यूटेशन पर भेजा गया। एनएसजी में अपने सेवाकाल के दौरान मनोज रावत ने कई वीआईपी की सुरक्षा जिम्मेदारी निभाई। उन्होंने एनएसजी में प्रतिनियुक्ति के दौरान किसी काम में समय-समय पर पेश आने वाली चुनौतियों का सच्ची श्रद्धा और समर्पण के साथ सामना किया। उन्होंने एनएसजी के आदर्श वाक्य शौर्य, दृढ़ता और कर्मनिष्ठा के अनुरूप इस विशिष्ट बल के उच्च मानदंडों को बनाए रखा। मनोज रावत के परिवार में पत्नी ममता रावत के अलावा दो बेटियां हैं।

स्वामी वीरेंद्रानंद

संस्थापक, एशियन सत्कर्मा मिशन

उत्तराखंड में साल 2020 में सीमांत इलाकों में फिर आपदा आई। पिथौरागढ़ जिले के बंगापानी और धारचूला तहसील क्षेत्र के कई गांवों में आसमान से बरसी आफत ने भारी तबाही मचाई। भारी बारिश के कारण हुए भूस्खलन में कई लोगों की जान चली गई। आपदा पीड़ितों तक सबसे पहले पहुंचने वाले सामाजिक कार्यकताओं में स्वामी वीरेंद्रानंद महाराज का नाम प्रमुखता से आता है। उन्होंने इस आपदा के बाद पीड़ितों तक राहत एवं बचाव सामग्री पहुंचाने के लिए युद्धस्तर पर युवाओं को प्रेरित किया। इस सीमांत जिले में वह लंबे समय से एशियन सत्कर्मा मिशन चला रहे हैं। भाजपा के टिकट पर धारचूला से विधानसभा चुनाव लड़ चुके स्वामी वीरेंद्रानंद ने खुद मौके पर पहुंचकर बंगापानी में आपदा पीड़ितों का दुख दर्द बांटा। टांगा गांव के पीड़ितों के आपदा कैंपों में जाकर उन्हें हरसंभव मदद मुहैया कराई। यह आपदा ऐसे समय में आई थी, जब देश में कोरोना संक्रमण अपने चरम पर था। उनके सत्कर्मा मिशन के वॉलियंटर्स ने तमाम सावधानियों के साथ मृतकों के परिवारों से भी मुलाकात की एवं पीड़ित लोगों को राशन, बिस्तर, फेस मास्क, सैनिटाइजर आदि वितरित किए।

इसके बाद स्वामी वीरेंद्रानंद राहत सामग्री लेकर मुनस्यारी के अंतर्गत टांगा, सेरा, छोरीबगड़ तक आपदा ग्रस्त गांवों का दौरा किया। यह पहली बार नहीं था जब स्वामी वीरेंद्रानंद जरूरतमंद लोगों की मदद करने पहुंचे हों। वह हमेशा परोपकार के काम में लगे रहते हैं। कोरोना काल में उन्होंने अपनी तरफ से लोगों के ठहरने और खाने-पानी की व्यवस्था की। मिशन के मुताबिक, 90 दिन तक 17 हजार से ज्यादा लोगों को आश्रय दिया गया, खाने-पानी आदि की व्यवस्था की गई। एक रात में 700 से ज्यादा लोग आते थे लेकिन मिशन की टीम के किसी सदस्य को कोरोना नहीं हुआ।

पिथौरागढ़ जिले में जन्मे स्वामी वीरेंद्रानंद ने उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग की परीक्षा उत्तीर्ण कर 12 साल तक राजकीय इंटर कॉलेज में शिक्षण व बतौर प्रधानाचार्य कार्य किया। 2006 में स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेकर पूरी तरह से समाजसेवा में जुट गए। तबसे समाज सेवा का यह मिशन निरंतर जारी है...। ■

पर्यावरण के लिए खास अभियान

सीमांत जनपद में पिथौरागढ़ में एशियन सत्कर्मा मिशन के संस्थापक स्वामी वीरेंद्रानंद पर्यावरण को लेकर भी एक विशेष अभियान चला रहे हैं। उन्होंने कोरोना संकट, उत्तराखंड के विकास, प्रकृति के महत्व, पलायन, स्वरोजगार और पहाड़ में संभावनाओं के हर क्षेत्र में अपने मिशन के माध्यम से काम किया है। हरेला पर्व के अवसर पर उनके मिशन ने ढाई लाख से ज्यादा पौधे लगाए। वह कहते हैं देवभूमि नेचुरोपैथी का एक हॉस्पिटल है। यहां किसी को फिजियोथेरेपी करने की जरूरत नहीं है। यहां 71 प्रतिशत ऑक्सीजन प्राकृतिक तौर पर मिलती है।

आधुनिक शिक्षा दे रहा एशियन स्कूल

स्वामी वीरेंद्रानंद द्वारा संचालित एशियन स्कूल कुमाऊं क्षेत्र में परंपराओं का पोषण करने के साथ ही बच्चों को आधुनिक ज्ञान भी दे रहा है। एशियन ग्रुप ऑफ एजुकेशन अंग्रेजी माध्यम में प्री-नर्सरी से 12वीं तक के स्कूल संचालित कर रहा है। यह विद्यालय सीबीएसई से संबद्ध है। हिमालय की गोद में बसा स्कूल, वृक्षों की आबोहवा और पक्षियों के कलरव के बीच शिक्षा का अलग ही अनुभव है। विद्यालय की उत्तराखंड में सात शाखाएं हैं- एक नैनीताल में, तीन पिथौरागढ़ में, एक चौकोरी और एक राई और थल में। वर्ष 2013 से 2020 तक 740 बच्चों ने एशियन स्कूल से 12वीं की कक्षा पास की। इनमें से 12 बच्चे एनडीए और सीडीएस में चयनित हुए हैं।

राज भट्ट

सीईओ, इलारा कैपिटल

उत्तराखंड के टनकपुर के नगरपालिका स्कूल से पढ़कर कोई दुनिया की नामचीन इनवेस्टमेंट बैंकिंग कंपनी खड़ी कर दे, तो निश्चित तौर पर लोगों को बताई जाने वाली कहानी है। यह पहाड़ के बेटे राज भट्ट की कहानी है, जिन्होंने विपरीत हालात में अपनी मेहनत और लगन से एक वैश्विक इनवेस्टमेंट बैंकिंग कंपनी खड़ी कर दी। राज भट्ट खुद कहते हैं कि उन्होंने तख्तियों पर पढ़ाई की। पिता ने सरकारी नौकरी छोड़ी और पहाड़ पर लोगों की सेवा करने की इच्छा से लोहाघाट चले आए। इसके कारण राज को भी लोहाघाट आना पड़ा। उन्होंने यहां के बेनीराम पुनेठा स्कूल से दसवीं की परीक्षा ऑर्ट्स से पास की।

राज भट्ट के मुताबिक, वह आठवीं तक पढ़ने में कमजोर थे, उन्होंने नौवीं से पढ़ाई को गंभीरता से लेना शुरू किया। इसका परिणाम यह हुआ कि उनके स्कूल में सभी संकायों में सबसे ज्यादा अंक आए। लोगों को लगा कि उन्होंने नकल करके इतने अच्छे नंबर पाए। हालांकि 1978 में उन्होंने हाईस्कूल में बहुत अच्छे नंबर लाकर खुद को साबित कर दिया। उन्होंने स्कूल का रिकॉर्ड तोड़ा। स्कूल के बोर्ड पर आज भी उनका नाम लिखा है। इसी साल उनकी जिंदगी में ऐसा मोड़ आया जहां से सबकुछ बदल गया, उनके पिता की मौत हो गई। पिता के साया उठते ही परिवार की आजीविका का संकट आ गया। मां अपने गांव चंपावत चली गईं। इसके बाद वह रिश्तेदार के यहां रहने हल्द्वानी आए। उन्हें ऑर्ट्स में दाखिला नहीं मिला। कॉमर्स में एक सीट खाली थी और उन्होंने एमबी इंटर कॉलेज में दाखिला ले लिया। 12वीं सबसे ज्यादा अंक लाकर वह चर्चा का विषय बन गए। इसके बाद उन्होंने डीएसबी नैनीताल से आगे की पढ़ाई की। तब तक उन्हें 1200 रुपये की स्कॉलरशिप मिलने लगी थी। ग्रेजुएशन करने केबाद स्कॉलरशिप के पैसों के साथ वह दिल्ली पहुंचे, जेएनयू में पढ़ना चाहते थे लेकिन किसी कारणवश ऐसा हो न सका। उन्होंने पार्टटाइम नौकरी, ट्यूशन करते हुए सीए की तैयारी की। उस समय लोग उन्हें पहाड़ का लड़का कहकर चिढ़ाया करते लेकिन उसी पहाड़ के लड़के ने ऑल इंडिया में 33वीं रैंक लाकर सबको खामोश कर दिया। ■

अफ्रीका से बदली कहानी

1995 राज भट्ट को डीसीएम ग्रुप की ओर से दक्षिण अफ्रीका भेजा गया, वहां 8 महीने बिताने के बाद वह लंदन पहुंच गए। वह 1999 का दौर था जब कंपनी ने अपना बिजनेस बेचना शुरू किया। ऐसे में उन्हें लगा कि अब अपना कुछ करना चाहिए। इसके बाद उन्होंने साल 2000 में एडवाइजरी कंसलटेंसी को गंभीरता से लेना शुरू किया। उन्होंने देखा कि मॉर्केट में सभी बड़े बैंक हैं, कोई मिडसाइज बैंक नहीं है, ऐसे में साल 2002 में इलारा कैपिटल अस्तित्व में आई। इलारा कैपिटल पूरी तरह से इनवेस्टमेंट बैंक सेवा प्रदाता है। इस कंपनी का मुख्यालय लंदन में है और इसके अहमदाबाद, दिल्ली, दुबाई, मॉरीशस, मुंबई, न्यूयॉर्क और सिंगापुर में ऑफिस हैं।

सरकारी स्कूलों को दे रहे मदद

राज भट्ट ने सरकारी स्कूलों में आभावों का दौर देखा है, यही वजह है कि वह 16 साल लगातार दो महीने के लिए भारत आ जाते हैं और पहाड़ी इलाकों के स्कूलों मे जाते रहते हैं। उन्होंने कई सरकारी स्कूलों को आर्थिक मदद मुहैया कराई है। वह अपने लोहाघाट के उस स्कूल को भी वित्तीय मदद देते हैं, जहां से हाईस्कूल पास किया था। वह कई आश्रमों के लिए भी सेवा का काम कर रहे हैं। खास बात यह है कि इलारा कैपिटल का स्वामित्व कंपनी के ही कर्मचारियों के पास है। इसलिए कभी किसी ने साथ नहीं छोड़ा। इसमें उन्हें जापान के बड़े बैंक नामुरा से मदद मिलती है और राज भट्ट को उत्तराखंड के लिए काफी समय मिल जाता है।

विनोद बछेती

चेयरमैन, डीपीएमआई

विनोद बछेती पहाड़ की सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना को बरकरार रखने के लिए निरंतर काम करने वालों में एक बड़ा नाम हैं। विनोद बछेती उत्तराखंड के पहले ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्होंने पैरामेडिकल इंस्टीट्यूट को लेकर दिल्ली में अभिनव पहल की। उनके द्वारा स्थापित दिल्ली पैरामेडिकल मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट यानी डीपीएमआई आज अपने क्षेत्र में एक बड़ा नाम है। उनके यहां से तैयार छात्र देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी कई बड़े अस्पतालों में टेक्नीकल असिसटेंट के तौर पर काम कर रहे हैं। इनमें दिल्ली के एम्स, वेदांता, एस्कॉर्ट, फोर्टिज और मैक्स जैसे बड़े अस्पताल शामिल हैं।

31 मार्च 1971 को पौड़ी के सितोनस्यू पट्टी के कांडा गांव में एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्में विनोद बछेती अपने संघर्ष के दम पर आज भाजपा के मयूर विहार दिल्ली के जिला अध्यक्ष की जिम्मेदारी तक पहुंचे हैं। पिता दिल्ली में रहते थे और सभी भाई-बहन मां के साथ गांव में रहकर पढ़ते। शुरूआती शिक्षा दीक्षा गांव में ही हुई, उसके बाद पिता के साथ दिल्ली आ गये। दिल्ली आकर आगे की पढ़ाई शुरू की और बीएमएस किया। कुछ समय नौकरी की लेकिन उसमें मन नहीं लगा और अपना ही कुछ कारोबार करने की सोची। नाना की प्रेरणा से 24 सितम्बर 1996 को दिल्ली में दो कमरों से डीपीएमआई की शुरूआत की। डीपीएमआई की शुरूआत के बारे में बछेती बताते हैं कि यह वह दौर था जब हर कोई एम.बी.बी.एस और बी.ए.एम.एस जैसे कोर्स कर रहा था, लेकिन इनके सपोर्टिंग स्टॉफ के लिए कोई काम नहीं कर रहा था। तब मैंने निर्णय लिया की मैं इस क्षेत्र में काम करूंगा। मेरे लिए यह क्षेत्र बिल्कुल नया था। लेकिन मैं इसके माध्यम से एक नई सोच को जन्म देना चाहता था। विनोद बछेती बचपन से ही संघ से जुड़े हुए थे। उन्होंने 1994 में भाजपा की सदस्यता ली। उनकी मेहनत और पार्टी के प्रति कर्तव्य निष्ठा को देखते हुए उन्हें 1997 में समिति अध्यक्ष न्यू अशोक नगर-त्रिलोकपुरी मंडल की जिम्मेदारी दी गई। विनोद बछेती को 2002 में उत्तराखंड प्रकोष्ठ का मंडल अध्यक्ष बनाया गया था। ■

सांस्कृतिक संगठनों से जुड़ाव

सामाजिक सक्रियता की बात करें तो विनोद बछेती उत्तराखंड एकता मंच के संस्थापक सदस्य एवं संयोजक हैं। दिल्ली की प्रतिष्ठित संस्था गढ़वाल हितैषणी सभा (पंजी) के आजीवन सदस्य, पूर्वी दिल्ली गढ़देशीय भ्रात मंडल (पंजी) के आजीवन सदस्य, पिछले चालीस वर्षों से राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में रहते हुए उत्तराखंड समाज एवं दिल्ली की तमाम सामाजिक संस्थाओं के साथ मिलकर समाज के हित में निरंतर सेवा कार्यों का निर्वहन कर रहे है। इसी के साथ विनोद बछेती ने उत्तराखंड आंदोलन के दौरान उत्तराखंड की अनेकों संस्थाओं में सक्रिय भागीदारी निभाई।

गढ़वाली-कुंमाऊनी भाषा के लिए सक्रिय

विनोद बछेती उत्तराखंड की गढ़वाली-कुंमाऊनी भाषा के उत्थान के लिए दिल्ली में पिछले कई वर्षों से कक्षाओं का संचालन कर रहे हैं। इनके माध्यम से दिल्ली में रह रहे हजारों बच्चे गढ़वाली-कुंमाऊनी भाषा सीख कर बोलने भी लगे हैं। दिल्ली में गढ़वाली-कुमांऊनी अकादमी के गठन के लिए उनका प्रयास महत्वपूर्ण रहा। विनोद बछेती की कोशिशों से दिल्ली में उत्तराखंड के लोकपर्व उतरैणी के लिए पहाड़वासी एक मंच पर आए और फिर दिल्ली में सौ से ज्यादा स्थानों पर उतरैणी पर्व का आयोजन किया जाने लगा। उन्होंने दिल्ली के रामलीला मैदान में 20 नवंबर 2016 को एकजुट-एकमुट अभियान के जरिए पूरे भारत में रहने वाले उत्तराखंडियों को एक मंच पर लाने की कोशिश की।

कल्याण सिंह रावत

संस्थापक, मैती आंदोलन

'मैती' पर्यावरण से जुड़ी उत्तराखंड की एक ऐसी संस्था है, जिसने नई तरह से प्रकृति को समझने और समझाने का प्रयास किया। कल्याण सिंह रावत ने 1995 में इस संस्था की शुरुआत की। वह मूलरूप से वनस्पति विज्ञान के प्रवक्ता थे लेकिन सरकार की पर्यावरण संबंधी सोच और कार्यवृत्ति से मन ही मन संतुष्ट नहीं थे। सरकार के वृक्षारोपण को देखते तो दुखी होते कि यह मात्र एक रस्म के अलावा कुछ नहीं। साथ ही सरकारी धन का वर्षों से दुरुपयोग हो रहा है तो उनके मन में एक एक विचार आया कि क्यों न हम वनीकरण के काम को सामाजिक सरोकारों, परंपराओं के साथ जोड़कर देखें। इसके बाद उन्होंने मैती संस्था की स्थापना की। मैती का अर्थ है मायके वाले। मैती संस्था ने वनीकरण को विवाह के साथ जोड़ा। जिस भी गांव, परिवार में लड़की की शादी होगी वह परिवार लड़की के गांव से विदा होने से पहले वर-वधु से एक पेड़ लगवाएंगे और उस पेड़ को सुरक्षित रखने का काम लड़की की मां करेगी। इसी तरह जब दूल्हा, दुल्हन के साथ अपने गांव जाएगा तो वहां भी एक पेड़ लगेगा। उत्तराखंड की एक परंपरा है कि जब भी दुल्हन ससुराल जाती है, तो सबसे पहले पानी के स्रोत की पूजा करती है। दुल्हन पानी की पूजा करने के बाद यह शपथ भी लेती है कि मैं इस पानी के स्रोत को सदा अक्षुण्य बनाए रखने का आजीवन प्रयास करूंगी, तब वह पानी लेकर नए परिवार को पिलाती है। वह एक पेड़ अपने गांव में भी लगाती है। पेड़ पानी के प्राकृतिक स्रोत होते हैं। कल्याण सिंह रावत ने ऐसा मार्मिक पहलू उठाया जिससे हर मनुष्य जुड़ सकता है।

उत्तराखंड के चमोली जिले के कर्णप्रयाग ब्लॉक के बैनोली गांव के त्रिलोक सिंह रावत वन विभाग में कार्यरत थे। उनके कंधे पर पर्यावरण संरक्षण की जिम्मेदारी थी। 19 अक्टूबर 1953 को उनके घर एक बालक का जन्म हुआ। नाम कल्याण रखा गया, जिसने अपने पिता से मिली पर्यावरण संरक्षण की शिक्षा को चरिचार्थ किया और चिपको आंदोलन की धरती पर मैती आंदोलन की शुरूआत की। उनका आंदोलन पहाड़ की पथरीली जमीन से निकलकर सात समुंदर पार तक अपनी खुशहाली के बीज रोप रहा है। ■

चिपको आंदोलन से 'मैती' तक

कल्याण सिंह ने 12वीं तक की पढ़ाई कर्णप्रयाग और स्नातकोत्तर गोपेश्वर से किया। जब वे कॉलेज में थे, तब चिपको आंदोलन भी अपने चरम पर था। कल्याण सिंह 26 मार्च 1974 को करीब 150 लड़कों को लेकर चिपको आंदोलन में शामिल होने जोशीमठ गए थे। चिपको आंदोलन के कुछ वर्ष बाद, यानी 1982 में कल्याण सिंह रावत की शादी हुई। शादी के दूसरे दिन ही उन्होंने अपनी पत्नी मंजू रावत से केले के दो पौधे लगवाए। कुछ साल बाद जब वे फल देने लगे तो उनके मन में मैती आंदोलन का विचार आया।

1987 के सूखे से बदली कहानी

लंबे समय से बारिश न होने के कारण वर्ष 1987 में उत्तरकाशी में भयंकर सूखा पड़ा था। पूरे जिले में हाहाकार मच गया। इस दौरान कल्याण सिंह रावत ने वृक्ष अभिषेक समारोह मेले का आयोजन किया था। ग्राम स्तर पर वृक्ष अभिषेक समिति का गठन कर ग्राम प्रधान को समिति का अध्यक्ष बनाया गया। मैती आंदोलन में विदाई के समय दूल्हा-दुल्हन को एक फलदार पौधा दिया जाता है। वैदिक मंत्रों के साथ पौधे को रोपा जाता है और दूल्हा, दुल्हन की सहेलियों को अपनी इच्छा के अनुसार कुछ पैसे देता है, जो पर्यावरण कल्याण के कार्यों में ही उपयोग किए जाते हैं तथा यही सहेलियां इन पेड़ों की देखभाल भी करती हैं।

FORTUNE 500 INDIA

IFFCO
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व
Wholly owned by Cooperatives

1967 से भारतीय किसान के सच्चे साथी

मिट्टी की जान, किसान की शान.

नए उत्पाद

पानी में घुलनशील व विशेष उर्वरक

उत्तम खाद, उचित दाम

FOLLOW US:

iffcolive.com

IFFCO
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व

INDIAN FARMERS FERTILISER COOPERATIVE LIMITED
IFFCO Sadan, C-1 District Centre, Saket Place, New Delhi - 110017, INDIA
Phones : 91-11-26510001, 91-11-42592626. Website : www.iffco.coop

august communications

Himalayan Organic Products

From the land of Devbhoomi Uttarakhand

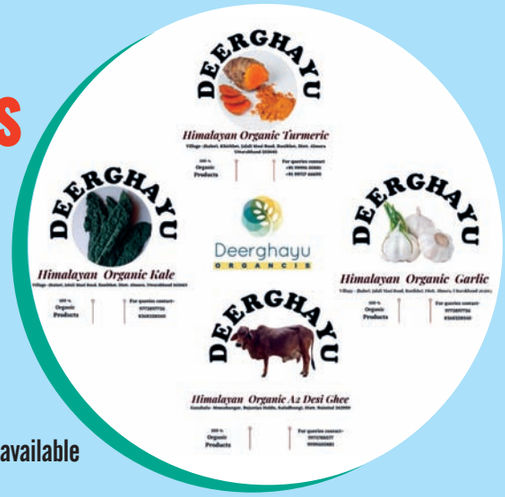

100 % Pure Non-GMO Chemical Free

Deerghayu Organic Turmeric

Deerghayu Himalayan Organic Farm believes in offering the best that is available from the fields in Uttarakhand.

We take utmost care to ensure that all our produce is hundred percent organic and plays a vital role in making your kitchen healthy and chemical free.

Deerghayu Himalayan Organic Farm offers you a wide range of organic products that includes fresh organic vegetables, fruits, dry fruits etc. It also spices up your table with a range of pickles bottled and packed in the hills of uttarakhand.

Turmeric Curcuma longa is a flowering plant of the ginger family, Zingiberaceae native to the Indian subcontinent and Southeast Asia.. Turmeric has been used as a medicinal plant for over 4000 mixed years. It is used as an vital ingredient in treatment of respiratory disorders, liver disorder, type 2 diabetes, irritable bowel syndrome, premenstrual syndrome, arthritis. etc. Turmeric oil with carrier oil can be used to treat acne. Being an anti-fungal and antiseptic, it will dry out the pimples and also prevent further breakouts. When used persistently, turmeric oil can fade away marks on your body giving you a blemish-free skin.

Please note:
To ensure that all its medicinal properties are intact, we do not extract oil from the turmeric that is delivered at your doorstep.

Deerghayu Organic Ginger

Ginger is a flowering plant whose rhizome or stem is widely used as a spice in many Indian and Asian cuisines. It is widely used as a home remedy for various ailments like toothache, cough and cold, tonsillitis respiratory and gastric disorders. Though it is grown in many areas across the globe, ginger is "among the earliest recorded spices to be cultivated and exported from southwest India". India is the "largest producer of ginger in the world and holds the seventh position in ginger exports worldwide.

Deerghayu Himalayan Organic Products

Turmeric, Kale, Ginger, Garlic, Red chillies, Yellow chillies, Coriander, Madua (Ragi), Apples, A-2 Desi Cow Pure Org Ghee

CONTACT US UTTARAKHAND FARM - Jhalori, Khirkhet, Jalali Masi Road, Ranikhet, Distt. Almora, Uttarakhand 263645
Noida - A-770, Sector-19, Noida-201301
Atul 99996 00881, Harmeet 99717 66690, Deepti 7017275342

RNI REGD. DELBIL/2016/69806

हिल मेल
एक अभियान पहाड़ों की ओर लौटने का

हिल-मेल

एक अभियान पहाड़ों की ओर लौटने का

उत्तराखंड की स्पेशल खबर, सबसे पहले हिल-मेल पर

Login करें

www.hillmail.in

We are On:

@hillmailIndia

@hillmailIndia

YouTube HillMailTV

इस अभियान से जुड़ने, लेख, विज्ञापन और प्रसार के लिए संपर्क करें

HILL MAIL

Delhi Office : 1515/G1-G2, Wazir Nagar, Kotla Mubarakpur, New Delhi - 110003
Dehadun Office: House No. 140, Vasant Vihar, Phase-II, Dehradun - 248001
Mobiles: 9971161880,9899003733, 8178358380 **E-mail**: mailtohillmail@gmail.com, editorhillmail@gmail.com